* ओ३म् *

धर्मदिवाकरोदय काव्य

अर्थात्

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 971
दयानन्द प्रतिमा प०

श्री १०८ स्वा० दयानन्द सरस्वती जी महाराज

का

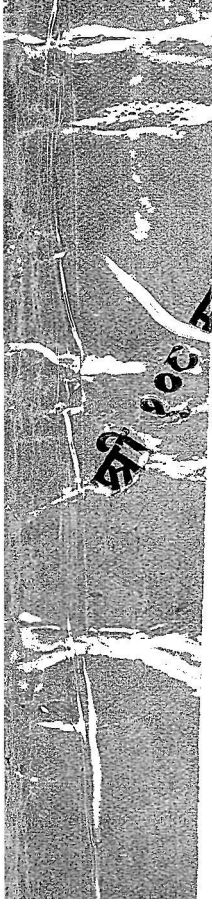

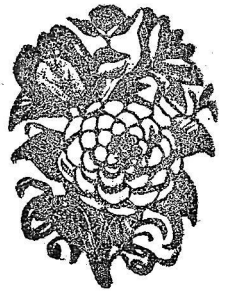

छन्दोबद्ध जीवनचरित्र

लेखक
कविकुमार ठा० शेरसिंह वर्मा

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
वर्गीकरण नम्बर .....
पु. परिग्रहण क्रमांक ... 971

971

* ओ३म् *

धर्मदिवाकरोदय

: भाषा-काव्य :

अर्थात्

आदित्य ब्रह्मचारी श्री १०८ स्वामी दयानन्द
सरस्वती जी महाराज का

जीवनचरित्र

क्षत्रियमात्र के स्वतन्त्र सेवक, कविकुमार शेरसिंह वर्मा
कर्णवास निवासी लिखत ।

सर्व स्वत्वाधिकार स्वयं रक्षित हैं।

प्रथम मुद्रण १०००] [मूल्य ।॥) सजिल्द १)

पं० बाबूराम शर्मा के प्रबन्ध से आगरा आर्य्यभास्करयन्त्रालय में मुद्रित ।

ग्रन्थकर्त्ता की अन्य पुस्तकें ।

ब्रह्मनिरूपण काव्य	... ...	)॥
नमस्ते	... ...	-)
अवश्यकर्त्तव्योपदेश	... ...	-)
वियोगसन्ताप चालीसा	... ...	-)
त्यौहारमाला	... ...	=)
कविविनोद	... ...	-)
यथार्थगीता	... ...	।)
नित्यसुमिरनी	... ...	-)
बधाई	... ...	)॥
परोपकारार्थ विनती		विना मूल्य अर्पण
कर्णवास के क्षत्रियों का वंशवृक्ष		तथा
अवागढ़ राज्य का संक्षिप्त वृत्तात		छपेगा ।

पुस्तकों के मिलने का पता:—

कविकुमार ठा० शेरसिंह वर्मा

रईस, कर्णवास ज़िला बुलन्दशहर.

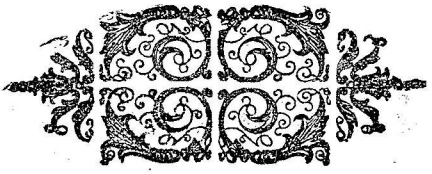

समर्पण

प्रिय आर्य्यबन्धु गण !

महर्षि के उपकारों का स्मरण दिलाने, तथा उन के पद चिह्नों पर श्रद्धा सहित चलने के निमित्त प्रोत्साहित बनाये रखने को

"धर्मदिवाकरोदय" जीवनी

आप के करकमलों में समर्पण करता हूं आशा है कि आप इसे सादर ग्रहण करेंगे।

आपका अभिन्न बन्धु

भैरसिंह वर्मा

क. कु. शेरसिंह वर्म्मा, कर्णवास ।

[illegible]मन प्रेस, प्रयाग ।

ॐ ओ३म् ॐ

करोदय काव्य का शुद्धिपत्र ।

पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	डर	डट
२९	जगतन शायो	जगत नशायो
१४	कार्पे	किसपै
५	निडा	निज
१४	उन इसके	उनइस से के
५	लागें	लागे
२४	दोहा	सोरठा
२२	जहां	जहांसु
२६	भये	हुये
२४	***	दोहा
२७	धारि	चारि
१	भोंर	भोर
५	में	मे
१५	ब्राप	बाप
२३	धारि	धरि
१८	ह्र	ह्वै
१०	गुरुजर	गुर्जर
१४	अर्बु दगिर	अर्बुद गिरि
२४	बढ़ाया	बढ़ाय
४	ग्रन्थों	ग्रन्थों
२६	गड़े	बड़े
२८	इस	जिस
६	योग्य	योग
१८	ह्वजन	ह्वैजन
१३	परिवर्तन करने	बदलने को
२६	दोहा	छन्द

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३	२८	फर्रुखाबाद	फर्रुखाबाद माहिं
२४	१८	में	मे
२४	२३	चाधा	चौधा
२५	२४	बासो बास	वसोवास
२६	४	कितने	कितते
२६	४	कह	कित
२६	१६	हमारी	हमरी
२६	१७	दूजी	दूजौ
३१	६	गप	गये
३३	२९	गुरू	गुरु
३३	३०	गुरु	गुरू
३५	१४	भागवर्त को	भागवत छू को
३६	१५-१६		यह छन्द दुबारा छप गया है।
३६	२३	न्दछ	छन्द
४१	२	किये	कियो
४१	१०	सनमुखन डरने	सनमुख नाहिं ठहरने
४१	२८	साधू	साधू
४२	५	सबवे	सबरे
४२	९	अजारी	अगारी
४२	१५	तिन्हहि लाय	तिन्हे हिलाय
४२	२३	नहि	नाहि
४३	७	चाहित कही	चाहत यही
४३	१७	शास्त्रार्य	शास्त्रार्थ
४४	१५	पाढव	याढव
४५	६	लाग्व	लाख
४५	१४	ताजा यादि	ताजीमादि
४५	१९	नोको	नीको
४५	२९	यदि	परि
४७	१	गुरू	गुरु
४७	३	सवाद	संवाद

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७	१२	मोहन	भोहन
४७	१६	करातो	करायो
४७	२३	कहूये	कहो
४८	९	समचार	समाचार
४८	२१	रणसिंह	रणजितसिंह
४९	१८	गुरु	गुरू
५०	२०	कृष्ण	कृष्णा
५१	८	चोलो	चोली
५१	२४	जाना	जाता
५२	१	हो	होय
५३	१२	भडा	भंडा
५३	२२	सध्या	सन्ध्या
५४	२१	जुगी	जुरी
५६	१०	दुदशा	दुर्दशा
५६	२१	हमारी	हमारा
५६	२६	फंदा	आ
५७	२१	हृषि	हृषी
६०	१३	करि	करी
६१	२	दूजी	दूजो
६३	१८	है विदुष मंड यह	है विदुषमंडल
७१	२६	पुरान तुम्हें	पुराननु में
७३	९	जलेसर	ऊलेसर
७७	१२	पधाने	पयाने
७८	२६	उदारी	उदासी
७८	२७	मतं	मत
७९	५	चेल	चेला
७९	१४	बैठें	बैठे
७९	१४	तिनके	तिनकों
७९	१४	डेरा दीना	डेरा कीना
८०	१९	सुनाया	सुभाया
८२	७	वाहीं	यहां हो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८२	१७	के	की
८४	६	प्रेत	प्रेम
८४	९	उठि	डटि
८४	१०	कृत्र	कृज
९२	२६	व्यारण	व्याकरण
९३	१२	तासुर मन	तासु रमन
९४	३	देखकर	देयकर
९६	३	दियो	दिये
९६	१५	लगन	मगन
९६	२२	बनादस	बनारस
९७	२०	कटावे	दिखावे
९९			तीसरी सतरमें छंद लिखा रहगया
१०१	४	अंधेरो	अंधेरा
१०३	२१	टूरि	टूटि
१०४	६	ने	ते
१०८	१९	ये	थे
१११	५	मगर	नगर
११२	७	साह समारा	साहस भारा
११३	२६	उपवात	उपवीत
११४	१४	बढिक	बढि कर
११४	१५	आत	आन
१२०	६	पठि	पढि
१२०	७	चरते	रचते
१२२	१५	अपवाद	अवाद
१२२	१६	म्यार	म्योर
१२३	९	प्रश्नो	प्रश्नों को
१२३	१३	विद्वज्जन	महज्जन
१२४	१२	अपना	अपना सा
१२४	१६	रिसाले	रिसाले के
१२४	१८	डरा धा वो चोबों का	खड़ा धावु चोबों का
१२६	३	जलेसर	ळलेसर

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२६	५	पं०	पंडित
१२८	३०	जन्म	जग
१३१	१२	होता है	होता रहै
१३१	१२	वोही	वही
१३१	१९	करि	करी
१३३	५	एक	एक बैठि
१३३	१२	मी पंक्ति नहीं है	वाममार्गगयापिचकहोगयाउठनाघभर
१३४	२९	मत्री	मंत्री
१३५	७	स्यान	स्थान
१३८	३२	मर्ती	मूर्ती
१४१	३०	लेखा	लिखा
१४३	६	वही	कही
१४३	८	पर है	टरि है
१४४	१०	कम्पे	कम्प
१४८	१९	भरि	मरि
१५०	२८	रुचि	रुची
१५१	१८	जगते को	जगते
१५२	८	होवैन	होवैना
१५३	१४	सुन	सुने
१५४	१	यह	यहां
१५४	९	आउ	आज
१६१	७	पाव	पांच
१६१	१०	पारसी	पादरी
१६१	२६	आटुटे	आडटे
१६१	२९	दीता	दीना
१६२	१४	इसमें	इससें
१६३	११	मयूख	मयूखः
१६४	२७	फिलासफर	फिलास्फर
१६५	२७	कभी	कमी
१६६	२	नाल	नाम
१६६	३	सनुआ	सतुआ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६७	२	आग्र	आग्रह
१६८	१	ग्रथाकारभी	ग्रन्थकार भी
१६८	८	थपि	थापि
१९६	११	सभापति	समापति
„	१७	मसीराबाद	नसीराबाद
१७४	२४	मुनि	मुनी
१७५	१५	माता	भाता
„	२३	विधि	विधी
१७६	६	धर	घर
१७७	२६	सिधूद	सिद्धि
१७८	२	स्वागी	स्वामी
१७९	७	रहते	रहत
„	१८	ईदमझारी	ईद मझारी
१८०	३	हक	हक़
„	४	संग्रह	संग्रहु
„	६	सेहिये	सोकहिये
„	१२	घरी	धरी
„	१२	बादी	बांदी
१८१	१४	साहू	साहब
१८२	१८	को	कों
१८३	१	समाजां	समाजों
„	२३	सज्जन	सजन
„	„	जो लाय	सुथान
१८४	८	दास	दान
१८५	४	भला कौन	भला फिर कौन
„	१३	प्रियवर	विप्रवर
„	२१	नाचनहारे	नाचन वारे
१८७	२	कोजै	जैती
१८८	२१	नीम	नीमा
१८९	१६	स्वामी जी	स्वामी
१८९	२३	भव	मन

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८९	३०	रुपया	रुपैया
१९०	१६	ने ने	ने
१९१	३	जो	जु
१९१	२३	जन	सज्जन
१९१	२४	मनोहर	मनोहर चर्चा
१९२	१७	क्षत्रि	क्षत्रिय
१९३	१	का	को
१९३	३	जान	जाना
१९३	१५	ग्राहक	ग्राहक है
१९३	१८	उन्हीं	उन ही
१९३	२०	ते	को
१९३	९	बतलाई	बताई
१९४	१२	अधि	अभि
१९४	१२	नित	नितिप्रति
१९४	१७	कोउ	कोऊ
१९४	१८	काहि	कहि
१९४	३१	निन्हो	जिन्हों
१९५	१२	करि करि	को करिकें
१९५	२१	स्वामी	स्वामी जी
१९५	२३	देखि	देखिके
१९७	८	तदबीर	तदबीरें
१९७	९	प्रति	गति
१९७	३०	भारि कें	भरिकें
१९८	११	इकधोस	इकद्यौस
१९८	१२	मत्र	मंत्र
१९८	२७	कीना	कीनी
१९९	८	अग्रिवसु	अग्निवसु
१९९	८	मन	सन
२००	२०	अश्चर्य	आश्चर्य
२००	२७	मुख	मुख धो
२०१	३१	एक एक	एक इक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०२	६	कहिने	कहिये
२०३	२	थ	थे
२०३	१३	भाव	सावस
२०३	१५	समय	समस
२०४	१०	लावें	जावें
२०४	२८	समय	समये
२०४	३१	सम हिया	सम जो हिया
२०५	२	चाहा	चहा
२०५	२	नहि	नाहिं
२०६	५	समापति	समापति

इन अशुद्धियों के अतिरिक्त शुद्धिपत्र के हैडिंग में भी "धर्म दिवाकरोदय" की जगह "प्रभाकरोदय" छप गया है ।

ओ३म्

स्वपरिचय

और

कर्णवास का इतिहास।

शाखा सूरजवंश राजकुल शालवाहनी।
वैस जाति विख्यात देश बिच महा पावनी॥
राजा चंद्रभान भये कुलदीपक जिन में।
उनके भये कबीरसाह गुनवन्तु गुनिन में॥
तिन को चालो वंश कथन करि ताहि सुनाऊं।
कछु इतिहासक कथा पाठकनु लिखि दिखलाऊं॥
राज कुमार "सलीम" शाह अकबर ने लड़कर।
प्रागराज में जाय करो अधिकार झगड़कर॥
लीनो जाय "बिहार" अमल सब दियो उठाई।
अवधप्रान्त के हेतु तुरा करि दई चढ़ाई॥
क्षत्रिय चंद्रभान अवध में थे इक अधिपति।
तिन्हें लियो अपनाय करि लिये अपनी सहमति॥
अडिग मित्रता रही भई नहिं भयकर छोटी।
नित प्रति बढ़ती गई प्रेम रस पीकर मोटी॥
राजकुमार सलीम शहनशा भये हिन्द के।
चन्द्रभान को दिया राज जिन दुतट गंग के॥
छत्र चमर गज बाज राज राना की पदवी।
पाय "सांकुरे" माहि बनाई कंकड अटवी॥
शहनशाह की सेव सौंपि दी बड़े पुत्र को।
शूरवीर बुधिवन्त समझते अस्त्र शस्त्र को॥
तिन्ह को लखि के सेव राज राजेश्वर प्रमुदित।
होकर बोले वचन प्रेमयुत अति समयोचित॥

बारह गाम इनाम बकसि जागीर दिये हम ।
करनवास निजधाम बनाओ आशु जायतुम ॥
राजकुमार "कबीरसाह" पितु नेरे आकर ।
किया पिता को सुखी हाल सब दिया सुनाकर ॥
ईश्वर करता कृपा मनुष पर फिरते शुभदिन ।
बढ़ता है ऐश्वर्य्य चहूं दिश पलपल छिनछिन ॥
शहनशाह जहांगीर दई जगीर जु जिन्ह को ।
होकर पिता प्रसन्न दई अतरौली तिन्ह को ॥
राजद्वार ते सीक चाकरी की ले लीनी ।
"करनवास" में आय किले की नीम जुदीनी ॥
जबते अबतक अटल और अविचल रहते हैं ।
काल अकाल दुकाल सकल घटना सहते हैं ॥
"करनवास" इतिहास जिस तरह है विख्याता ।
सो कहता हूं सुनो सकल इतिहासिक ज्ञाता ॥
कुन्ती का कानेन पुत्र था "कर्ण" प्रतापी ।
जाको नाम विहान लेत नित प्रति उठि जापी ॥
परुशुराम के पास दिव्य अस्त्रों को पढ़ने ।
पांडवों के साथ युद्ध महाभारत लड़ने ॥
भृगु आश्रम में आय विप्र बनि विद्या सीखी ।
परुशुराम छलि लिये बुद्धि इसकी थी तीखी ॥
सार्द्ध कोस द्वै दूरि दाहिने गंगा तट पर ।
नगर बसाया एक तहां पर कोट बना कर ॥
कर्णक्षेत्र कहि नाम तासु विख्यात किया था ।
अटल कीर्ति स्तम्भ लोक में थापि लिया था ॥
वाही थल पर राजकुमार कबीरसाह ने ।
पाई थी जागीर दई थी बादशाह ने ॥
ठाकुर सीतारामसिंह जी पिता हमारे ।
सोलहे पीढ़ी मांहि भये नित वंश उजारे ॥
शूरवीर शांभवी बड़े प्रख्यात देश में ।
विजय किये बहु शत्रु रहत हे ऋषी वेश में ॥

तिन्ह के हम द्वै पुत्र बड़े "देवीसिंह" जानों।
"शेरसिंह" लघु पूत ग्रन्थकारहि पहिचानों॥
कबीरसाह की पुश्त सत्रहवीं ग्रन्थकार है।
गंगातीर निवास एक ईश्वर अधार है॥
गुरु जी टीकाराम जिन्हों से शिक्षा पाई।
छन्द रचन की विधी कृपा कर मोहि बताई॥
छोटे छोटे काव्य बहुत मैंने लिखि दीने।
"ब्रह्मनिरूपण" "कविविनोद" आदिक रसभीने॥
अवधेश के पुत्र भये मैं लिखी "बधाई"
हरि सुमिरन के हेतु "नित्यसुमिरिनी" बनाई॥
"दयानन्द महाराज" पधारे स्वर्गधाम जब।
रचा तासु सन्ताप छंद चालीस बना तब॥
लिखी "नमस्ते" रीति पुरानिनु के मुख मोरे।
रचि अवश्य करतव्य बहुत उपदेशहु जोरे॥
"यथार्थ गीता" माहिं कृष्णसंवाद लिखा है।
क्षात्र धर्म उपदेश तासु मधि मुख्य रखा है॥
त्यौहारों का कृत्य बताया रचि निबन्ध को।
पढ़ि सोधो व्यवहार देख कर उस प्रबन्ध को॥
औरहु रचे विशेष ग्रन्थ जो लिखे धरे हैं।
धन का रहा अभाव अभी बिन छपे परे हैं॥
"धर्म-दिवाकर-उदय" युक्ति करके छपवाया।
यदि रुचि कर यह हुआ पाठकों के मन भाया॥
तो फिर दूजे ग्रन्थ शीघ्र ही करूं प्रकाशित॥
कहता हूं प्रण रोपि होय ईश्वर के आश्रित॥
"शालवाहनी बैस" और हैं "तिलोक चंदी"।
अन्य बहुत से बैस बनि रहे अंधा धुन्दी॥
कोई सूरजवंश आपने को बतलावें।
कोई हठ करि बैस चन्द्रवंशी कहलावें॥
कोई अपने तईं, नागवंशी कहि बोलें।
कोई ऋषिकुल कहें कहां तक इनको तोलें॥

अन्वेषण जो किया देखि इतिहास घनेरे ।
जो कछु पाये तत्व गूढ़ तम अधिक बड़ेरे ॥
संग्रह सो सब किया और हू करता जाऊं ।
मिले कहीं जो लेख ताहि को तुरत मंगाऊं ॥
करता विनती यही जोरिकें दोऊ हाथा ।
मानि लीजिए आप एक मेरी भी बाता ॥
याद होयं जो कथा लेख होवे जो कोई ।
उस की नक़ल कराय भेज दीजेगा सोई ॥
लिखूं भूमिका माहिं आप कूं ग्रन्थ सहायक ।
अधिक विनय क्या करूं कहूं क्या हूं किस लायक ॥
बहुत लेख बढ़ि गया कृपा करि क्षमा कीजिये ।
पढ़िये आदि उपान्त प्रेम करि चित्त दीजिये ॥
शीघ्र करूंगा भेंट दूसरा ग्रन्थ कृपा कर ।
करना पुनि आलोच समीक्षक उसे दया कर ॥
संवत् नभ ऋषि अंक चन्द्र मास आसोऽहि जानो ।
शरद पूर्णिमा तिथी ग्रन्थ पूरन हुआ मानो ॥

॥ इति शुभमस्तु ॥

ओ३म्

धर्म्मदिवाकरोदय

काव्य

दोहा ।

विभु अनन्त आनन्द घन ईश्वर सर्वाधार ।
अज अचिन्त्य अव्यक्त प्रभु अलख जगत् करतार ॥
अविनाशी अव्यय हरी शुक्र अकाय अपार ।
अव्रण अनित्य असीम शिव नित्य शुद्ध ओंकार ॥

॥ छन्द ॥

ईश्वर अनामय कृपालू प्रभू है । उसी की है रचना वही तो विभू है ॥
सदा सच्चिदानन्द आनन्द घन है । बलों का बली निर्धनोंका भी धन है ॥
जितना भी जानाहै जिसने यहांतक । आगे भी जानेगा जो कुछ जहांतक ॥
देखा न कोई विना उसके थल है । सोचा तो तेरी ही महिमा का फल है ॥
उसी का धरो ध्यान दिन रैन प्यारे । जगत्को तरोगे उसीके सहारे ॥
वो है दीनबन्धू अनाथोंका रक्षक । न्यायी दयामय है दुष्टोंका शिक्षक ॥
पालक विधाता औ पोषी है सबका । माता पिता सम हितैषी है सबका ॥

॥ दोहा ॥

पालक पोषक जगत्पति कर्त्ता धर्त्ता ईश ।
शेरसिंह विनती करे नाय नाय निज सीस ॥
धर्म्मदिवाकर काव्यहित यह मांगों बरदान ।
विना विघ्न पूरन करो कृपासिन्धु भगवान् ॥

॥ सोरठा ॥

छाय रह्यो चहुं ओर अन्धकार संसार में ।
चले पन्थ अति घोर वैदिक मारग छांड़ि सब ॥
कीनी आय सहाय ग्लानि धर्म की जब भई ।
सिद्ध पुरुष भिजवाय सत्मारग थापन कियो ॥

॥ दोहा ॥

वामी कामी पन्थ की रही घटा जग छाय ।
धर्म्मदिवाकर वेदमत तामें रह्यो दुराय ॥
प्रारुवज्ञान वैराग्यमय वायु चलावहु सोय ।
कुपथपृथांवारिधघटा नाशे छिन में जोय ॥

॥ चौपाई ॥

प्रभु सों विनती यही हमारी । काटो कुपथपंथजंजारी ॥
वामी शाक्त शैव के मारे । छिपि गये, वैदिक कर्म हमारे ॥
वेदविरुद्ध कुकर्म्म घनेरे । सो सब चले वाम मत केरे ॥
पंच मकार मुक्ति के कारन । मानुष बलि दे करें हुतासन ॥
यौगिक कृत्य उलटि सब दीने । दया कृपा तजि हिंसक कीने ॥
इन्द्रीरत स्वारथलवलीना । भोगविलासनु में चित दीना ॥
हाहाकार जगत् में छायो । ता पाछें मत बुद्ध चलायो ॥
ईश्वरनिन्दा करी अघाई । प्रकृति दई ताने पुजवाई ॥

॥ दोहा ॥

वामिनु उलटे अर्थ करि हिंसा दयी बढ़ाय ।
ताकूं बुध ने देखि के वेद दिये बिलगाय ॥
बुद्ध अहिंसा धर्म कहि चेतायो संसार ।
चारवाक की तर्क ने रोको वेदप्रचार ॥

॥ छन्द ॥

देशदेशनु खण्डखण्डनु प्रान्तप्रान्तनु मत नये ।
जिन्दावस्था मूसा ईसा जैन मत प्रचलित भये ॥
तिनको कुमारिलभट्ट औ शंकरने अति खण्डन करो ।
बौधमत और जैनमत को वृक्ष जड़ले गिरिपरो ॥

॥ छन्द ॥

बौद्ध हिमालय पार गये निधि टापुन मांहि छिपे कछु जायकें ।
मन्दिर मूरित तोड़ी गईं जो रहीं सो दईं धरनी में गढ़ाय कें ॥
जैनी दुरे गिरि खोह बनी बन बहुधा गये बनि आर्य्य सुभायके ।
परि शंकर के कछु चेलनु ने प्रतिमा मठ खूब दये पुजवाय के ॥

॥ चौपाई ॥

वामी शाक्तक शैवी तीनों । दसनामी मिल मतो जु कीनो ॥
शंकर के अनुयायी बनकर । भारत को बहकायो डरकर ॥
शिव शक्ती की महिमा गाई । जननेन्द्रीकी मूर्ति पुजाई ॥
महादेव धरिताको नामा । भारत गारत करो तमामा ॥
इनहिं देखि बहु चाले पंथा । गप्प भरे रचि डारे ग्रंथा ॥
तिनको नाम पुरान धरायो । भक्तीमारग पंथ चलायो ॥
सत्यशास्त्र उपनिषद् विचारा । वेद अर्थ को दुरो प्रचारा ॥
पुरुषा ऋषी महिर्षि हमारे । तिनहिं दुराचारी कहिडारे ॥
काम क्रोधके लक्षन जेते । कहो पाप नहिं तिन्हैं करेते ॥
ब्रह्मा आदि देवता जो हैं । कहैं पुरानी पापी सो हैं ॥

॥ दोहा ॥

दोष लगाये सबनुकूं ऋषभदेव को त्याग ।
चोरी जारी झूंठ छल बढ़ो छांड़ि के यागि ॥
आपापंथी अन्य हू चले बहुत मतभेद ।
सत्यधर्म को लोप भो करी वेदविच्छेद ॥

॥ चौपाई ॥

भूत मसान चंडिका चंडी । कवरि जैनखां कार्सिब रंडी ॥
पीर परी चुड़हल चामुंडा । शिवा स्वान पुजवावें गुंडा ॥
ईश्वर छोड़ि पखान पुजाये । स्वयं ब्रह्म बनि पेट भराये ॥
प्रकृति,जीव,ईश्वरको भूले । नास्तिक भये फिरें मनफूले ॥
निजरुचि निजमतिके अनुवर्त्ती । महा अघोरी पापी गर्ती ॥
वर्णव्यवस्था भाईबन्धी । कुलमरजादा करदई अन्धी ॥
आप मिटे औ जगतन शायो । भारत महागर्त्त पहुंचायो ॥
फूट बढ़ी एकता विनाशी । परदेशी लखि करते हांसी ॥

॥ छप्पय ॥

कहां राम कहां कृष्ण गये कहं नृपति युधिष्ठर ।
कित वशिष्ठ गुरु छिये बृहस्पति शुक्र बुद्धवर ॥
कित जैमिनि जाबालि पतञ्जलि जनक राजधर ।
कहां पिङ्गलाचार्य्य कहां कृप द्रोणधनुर्धर ॥
राजभक्त भीषम कहां विदुर हितैषी कित गये ।
ईश्वरको निश्चय दियो सो व्यास मुनी कब कहं भये

* * *

धरा धारनाशक्ति हीनसी दीखन लागी ।
भारत तजी संभार व्यवस्था वर्णनु त्यागी ॥
देशएकता नशी वसी भारती विदेशा ।
काल दुकाल अकाल महामारी सन्देशा ॥
सोचत मन निशि दिन यही धर्महीन अति ह्वै गयो ।
शिल्प कृषी, वाणिज्य पर जनु तुषार सो परिगयो ॥

* * *

का पें करें पुकार कौन अब सुने हमारी ।
आपापंथी प्रकट भये सब प्रथा बिगारी ॥
लुप्त भई मरजाद वेद हू गुप्त भये सब ।
योग कर्म दिये छोड़ि कहूं दीखत नाहिन अब ॥
भक्ष्याभक्ष्य विचार की लेशमात्र चिन्ता नहीं ।
सत्यज्ञान सत् शास्त्र की नहिं भारतचर्चा रही ॥

* * *

कुपढ़ करें उपदेश अविद्या बाढ़ि गई है ।
क्षत्रिय मांगें भीख दीनता छाइ रही है ॥
विप्र करें वाणिज्य वणिक् सतवादविहीना ।
सेवक भोगें राज्य पलटि मारग सब दीना ॥
उलट पुलट कवि शेर लखि चिन्ता यह मन में रहै ।
प्रबल आत्मा के विना कौन दुःख दारिद दहै ॥

॥ सोरठा ॥

कृपा ईशकी होय, प्रबल आत्मा अवतरे ।
धर्म्म प्रचारे सोय वेदपंथ बतलाय के ॥

॥ चौपाई ॥

भारत की भरि पूर कामना । धर्म जगे यह फुरे भावना ॥
यही विचार सबे मन भायो । तब ही एक संदेशो पायो ॥
पूना सभा भई एक खासी । ब्राह्म समाज पूर्व सुखरासी ॥
इन्दरिमणि हू लिखने लागे । कन्हैयालाल लुधाने जागे ॥
विद्यासागरके मन भायो । विधवाव्याह उचित ठहरायो ॥
चरचा होन लगे चहुंओरा । आन्दोलन छायो घनघोरा ॥
परिव्राजक हैं विरजानन्दा । तिनके मन उपजो आनन्दा ॥
वेद व्याकरण पाठ चलायो । मथुरा मंडल भलो चितायो ॥
विप्र विवेकी दिये बनाई । सत् शास्त्रनु की महिमा गाई ॥
शिष्य एक हू मिलो न ऐसो । धर्मथापना को चहे जैसो ॥
तब ही भई भविष्यत् बानी । प्रगटे विप्र वेद मति ज्ञानी ॥
गुर्जर देश मूर्वी ग्रामा । कीनो वृत दम्पति निज धामा ॥
शिव शक्ती को ध्यान लगायो । शंकरमूल पुत्र इक पायो ॥
ताके हृदय प्रेरणा कीनी । सत्य लखन की शक्ती दीनी ॥

॥ दोहा ॥

शिवतेरसि पितु संग में पूजाहित जो जाय ।
मूषक ओदन चुगत लखि भ्रम सबरे विनशाय ॥

॥ छन्द ॥

मूलशंकर सोच । शंभु है बड़ पोच ॥
वृथा की यह भ्रान्ति । होय का विधि शान्ति ॥
गृहत्यागि लीजै भेव । जग सत्य है को देव ॥
पितु जागि पूंछी बात । क्या सोच मन में तात ॥

॥ छन्द ॥

मूलशंकर बैन । कहै पितु सूं ऐन ॥
चन्द्रशेखर रुद्र । करे सब को भद्र ॥

*
**

॥ छन्द ॥

तिहि पर बिलारी भक्ष । चढ़ि गयो ओर समक्ष ॥
चनि चर्वि चामर लिये । ओ पतित शिवजी किये ॥

॥ सोरठा ॥

मेरे मन परतीत भई पिता जी सत्य यह ।
निश्चय होउ अतीत शिवशंकर के दरश हित ॥

॥ दोहा ॥

कहा बकत भक भक करत बालक बुद्धि अजान ।
परम्परा जग की यही तामें कहा निदान ॥
दपटि दावि चुपको कियो बालक विमल विवेक ।
पै नहिं मन प्रफुलित भयो सीख न व्यापी एक ॥

॥ चौपाई ॥

ता पाछे इक दिन की बाता । नृत्य देखने गये जु ताता ॥
तिन के संग मूलशंकर जी । जिनके हृदय बसे हरिहर जी ॥
जाय भृत्य तहं बात सुनाई । हैज़ा कियो तुम्हारी बाई ॥
संग सगाती सब उठि धाये । बहुतक वैद्यराज बुलवाये ॥
परि नहिं फलो कछू उपचारा । सब असार दीखो संसारा ॥
निज भगिनी को मरते देखो । प्रथम अपूरब लेखो पेखो ॥
एक ओर सब घर के रोवें । दूजी ओर मैल मन धोवें ॥
महान् आत्मा के मन आई । हरि सुमरिन चित देउ लगाई ॥

॥ दोहा ॥

जन्म मरण तो अटल है काविधि मिटे कलेश ।
ऊहापोह करने लगे भयो ज्ञान आवेश ॥

॥ छन्द ॥

दौड़ते लखि चूहे शिव पर मूर्त्तिपूजा तजिदई ।
वहनि को लखि मौति मुखमें क्यों न होती गति नई ॥
कमलदल पर विन्दुजल अस्थिर सदा रहता है ज्यों ।
मनुष जीवन का भी व्यौरा मान लैना ज्यों का त्यों ॥
हृदय पर पूरा असर इस मृत्यु का दृढ़ होगया ।
ज्ञान का सोता उमड़ि अज्ञान सारा धोगया ॥
आयु सोल्हे बरस की थी पर महान था आतमा ।
वैराग छाया जगत से मन पूरा हित परमातमा ॥
रोना धोना छोड़कर स्थिर हुआ लखता रहा ।
ताने दुरिआने को सुनता तत्वको लखता रहा ॥
नैन सूखे देख कर सबने बुरा इसको कहा ।
पर न व्यापी कुछ व्यथा प्राणी तो था यह भी महा ॥
देखकर इस दृश्य को माता पिता कहने लगे ।
सो रहो जाकर के घरमें राति भरिके हो जगे ॥
नींद किस को आवेगी और कौन सोता है भला ।
जोकि जागृत होगया लखि घोरनिद्रा की कला ॥
जिसने जाना होकि इकदिन मुझको भी मरना पड़े ।
छोड़कर सब जगत धंधे मौत मुख गिरना पड़े ॥
उस समय के दुःख से बचने का क्या करना इलाज ।
हो गया आपे से बाहर त्याग जगके काम काज ॥
प्रगट इस मंतव्य को होने दिया नहिं तनक भी ।
नियम से पढ़ता रहा सुनता रहा सब सनक भी ॥

॥ दोहा ॥

दिव्य आत्मा के चचा धार्मिक विदुष महान ।
प्रेम अधिक करते रहे निजसुत के अनुमान ॥
तेहू सुरपुर चलि बसे छोड़ि अनित्य शरीर ।
महान आत्मा रुदनकरि ह्वै गयो महाअधीर ॥
अब निश्चय मन करि लियो यह असार संसार ।
अमरोती के कारने तजो सकल व्यवहार ॥

॥ छंद ॥

कौनविधि जगके कलेश सब छीन होयं कैसे बचों शेर काल आनिके सतावेजो
औषधि कहां वैद्यबसत कहांहै कहो वहां जाउं जहां कोऊ तनक हू बतावेजो
मेरेजान सकलजहानते न नातो कछु मातपितुजाति बन्धु कौन के कहावेजो
पूछनोप्रारम्भोनिजमित्रओविद्वाननुसूं मेरो हितयहेपंथ अमरता बतावेजो

॥ चौपाई ॥

अन्त विचार यही ठहराया। घरते निकल चलो अब भाया।
यह असार संसार बड़ो है। ज्ञानशून्य यह देह पड़ो है॥
मात पिता हू भये सचेते। यत्न करत दिन बीते केते।
सबमिल मतौ एक यह कीयो। व्याहकाज उपदेशहु दीयो॥
बीस वर्षको आयु भये पर। व्याह करो रहि है जबही घर।
कही मूलशंकर इक बाता। पढ़न जाऊं काशीजी ताता॥
विद्या पढ़ूं विदेश मझारी। अटल होऊं पूरन ब्रह्मचारी।
संवत् उन् इस के मांही। काशी विद्या पढ़नी चाही॥
परि माताने कियो विरोधा। पढ़नेको तब लख अवरोधा।
असमंजस में आनि फंसे हैं। पिता मातु के फंद गसे हैं॥

॥ दोहा ॥

आई आपति व्याह की समयो पहुंचो आय।
पाणिग्रहण किये विना काशी नाहिन जाय॥

॥ छन्द ॥

अनिछा मात की देखी पिता जो से निवेदन कर कहा।
निज जातिका इक विदुष पण्डित ग्राम में बसता रहा॥
कुछ दूर नहिं है वह ठिकाना मैं पढ़ूं जाकर जहां।
अब चित्त घर लगता नहीं है होगी शान्ती कुछ वहां॥
मानि कर पितु ने वचन यह आपना करदी भली।
जाय कर पढ़ने लगे नहिं मात की कुछ भी चली॥
एक दिन पाठक से ऐसे मूलशङ्कर ने कहा।
व्याह से है ग्लानि मुझ को घर में है दुःख भी महा॥
यह सारा व्यौरेवार किस्सा बाप से कहलादिया।
सुनके पण्डित पास से बेटे को उन बुलवालिया॥

॥ चौपाई ॥

होने लगी ब्याह की त्यारी। उते त्याग में बुद्धि प्रचारी ॥
एकनु के मनग्रेह वासना। सबल आत्मा ब्रह्म आसना ॥
देशोपकारी यज्ञ करेंगे। सो घर वसि क्यों नारि वरेंगे ॥
प्रबल आत्मा करे विचारा। निकसि चलो नहिं लागें वारा ॥

॥ दोहा ॥

अब निश्चय मन में करो छोड़ि गेह को देउ।
जगन्मात की गोद में जाय आश्रय लेउ ॥
आत्माने साक्षी दई निकसि चलो तत्काल।
मातपिता घर द्वार ते मोड़ दयो मुख हाल ॥

॥ छप्पय ॥

जहां भयो हो जन्म वर्ष इकईस बिताये।
ब्रह्मचर्य्य को साधि युवा हैवे में आये ॥
जेठ महीना समय सांझको आय गयो हो।
अन्तिम समय निहार त्यागि घरबार दयो हो ॥
परब्रह्मकी भक्ति उर दृढ़ता पूर्वज भरि गई।
सांसारिक हित प्रेम सब धन सम्पति हू तजिदई ॥

* * *

कहा वापुरो गेह तासु की महिमा गावें।
कहा सम्पदा जगत ताहि मधि चित्त लगावें ॥
निज जन परिजन प्रेम कितो जाकूं चित धारें।
कौन भ्रात निज जाति कौनसे नेह प्रचारें ॥
जगन मात पितु बन्धु इक अलख निरंजन एकरस।
तिहिं अंक बैठि निश्चिन्त ह्वै सूवस रहिये दिवसनिस ॥

॥ दोहा ॥

अविचल पद के काज छांड़ि चले घरबार सब।
जग तारन को आज प्रथम पयाने विश्वधर ॥

॥ छन्द ॥

पहिली मंजिल योजन भरि चलि रैनि बिताई चैन में ।
यहांसे चले पहर दो तरके बिपा बताई गैन में ॥
योजन चारि धाय के बैठे हनूमान की ओन में ।
टेढ़े मेढ़े मारग लीने सुविधा पाई गौन में ॥

॥ चौपाई ॥

अश्वारोही जन समुदाय । ओर भयें पितु दिये पठाय ॥
माता रोय रोय बिलखाय । पुत्र बिछोह सह्यो नहिं जाय ॥
द्वै दिन ढूंढ़े बहुतक गामा । मिलो पतो नहिं काहू ठामा ॥
खोजी सगदि मूर्वी आये । शंकरमूल कहूं नहिं पाये ॥

॥ छन्द ॥

इत मूलशंकर सूझ । उठि चले मारग बूझ ॥
ठग साधु भेष बनाय । सो मिले इनते आय ॥
परबोध करि कहि बैन । बसन भूषण लैन ॥
अब त्याग इनको करो । वैराग चित तब धरो ॥
ठगि वस्त्र भूषण लये । तजि संग साधू गये ॥

॥ दोहा ॥

लालच तजि निजसम्पदा ठगसाधुन के हेत ।
सौंपि चले आगें बढ़े वार न लाये देत ॥

॥ चौपाई ॥

रेल मूर्वी पर इक ग्रामा । मूली स्टेशन है नामा ॥
जहां चारकोसके अन्तर । बसे सामने नगर स्वतन्तर ॥
तामें लाला भगत विराजें । ताघर ठहरो साधु समाजै ॥
विप्र विवेकी तहं परचीन्हों । नैष्ठिक ब्रह्मचर्य्य तिहिं दीनों ॥

* * *

धारन किये कषाय पट दीक्षा लई अघाय ।
तजि समता त्यागी भये वरणन करो नजाय ॥
शुभ मारग में पगधरो छांड़ि सकल जंजाल ।
नाम शुद्धचेतन भयो परब्रह्म के ख्याल ॥

॥ छन्द ॥

मूर्तिपूजा ते यद्पि मन हट गया था। अज्ञताकालेश किन्तू रह गया था॥
करते योगाभ्यास निशको थे कहीं। घूघू बोला पेड़पर आकर वहीं॥
भूतका संदेह करके उठ चले। साधु संगति थी जहां पर जा मिले॥

॥ चौपाई ॥

आगे चलि पहुंचे गुजराता। वैरागिन की मिली जमाता॥
तिन्हनु फांसि इक रानी राखी। सोई विधि इनके संग भाखी॥
वैरागिन की माया देखी। अन्तरभेदरीति सब पेखी॥
छोट गांगडा गाम मंझारी। तीनि मास ठहरे ब्रह्मचारी॥
सरस्वती के तीर सिद्धपुर। कातिकी मेला होय तहां पर॥
साधू संन्यासी वैरागी। योगी सिद्ध जती अरु त्यागी॥
आवें देश विदेशी जात्री। पण्डित बुद्धिमान् और शास्त्री॥
यह सुनि चले देखने मेला। एक साधूते ह्वै गयो भेला॥
थो कुटुम्ब इन के को ज्ञाता। पूछन लगो कहां तुम ताता॥
दोउनके आंसू भरि आये। सब वृत्तान्त पाछिले गाये॥
प्रथम हंसो साधू लखि भेषा। पुनि कछु करन लगो उपदेशा॥
ऊंच नीच बहु कर समझाया। नहिं परिणाम सुधरते पाया॥

॥ दोहा ॥

बैरागि ते ह्वै जुदे चले सिद्धपुरगाम।
नील कंठ महादेव पर जाय बसायो धाम॥
बहुतक ब्रह्मचारी मिले कैयक दंडी लोग।
तिन में येहू मिलि बसे भलो बनो संजोग॥

॥ चौपाई ॥

जहं मेला में साधू पावें। सत संगति को लाभ उठावें॥
प्रथम मिलो जो मारग साधू। तिहिं लिखि भेजो भेद अगाधू॥
पिता पुत्र को सुधि जो पाई। मेला चले तुरत अकुलाई॥
संग लिये जिनि चारि सिपाई। खोजखोज करि रहे तबाई॥

एक दिन भोर उठत ही आये। मंदिर बैठे बेटा पाये ॥
पकड़ि लिये पण्डिततनु मझारी। जो शुध चेतन है ब्रह्मचारी ॥
वस्त्र गेरुआ देखि रिसाने। जती रूप लखि अधिक खिजाने ॥
क्रोधावेश कहे कटुबैना। पुत्रप्रेम भरि आये नैना ॥
तुम कपूत हमरे घर जनमे। खाक रमायें फिरते तनमें ॥
घर कह कमी छांड़ि जो भागे। अब उठि चलो हमारे आगे ॥

॥ छन्द ॥

मूलशङ्कर धाय। चरण पकड़े जाय॥ तोषकछुनाभयो। रोष अतिही छयो॥
धरनि तूंबामारि। वसन डारेफारि॥ सेतवसन उठाय। चले संग लिवाय॥
नेह करिकैं तात। कहन लागे बात॥ मरे तेरी मात। लगे पातिक गात॥
सीखहमरी मान। चलो गेह बिहान॥ घरहिंसाधो जोग। बैठि विलसो भोग॥

॥ छन्द ॥

लाड़ प्यार ताड़ना विशेष रूपसों दई।
पैन युक्ति एकहू सुपुत्रकैं लगागई॥
सावधान पहरुआ बिठाय दीने बापने।
जागते रहेंगे आज काज लियो आपने॥

॥ दोहा ॥

तीन बजे सब सोगये रहे सचेत मुनीश।
करि प्रणाम पितु को चले धारि हृदय जगदीश॥

॥ छन्द ॥

शौच को मिस करि चले अन्तिमपिता की भेट करि।
कोस भरि चलि छिपके बैठे संशय सारे मेंट कर॥
बटके सहारे मठपे चढ़ कर लोटा धारि बैठे रहे।
इधर उधर की टोह भी उसही जगह लेते रहे॥
बापके भेजे हुए अनुचर भी करके टोह बीन।
पूछ गछ कर चल दिये थक करके हो उत्साह हीन॥
शुद्ध चेतन ब्रह्मचारी छुपके बैठे थे जहां।
देखना तो दूर था नहिं ध्यान भी पहुंचा वहां॥

राति पूरी बैठ के उस शिखर पर करदी तमाम ।
दिन भी पूरा होगया अब होने आई फेर शाम ॥
चुपके चुपके उतर के वह चल दिये छिपते हुए ।
चौंकते मग पूछते कुछ सोच भी करते हुए ॥
आहा यह कैसा दृश्य है गर ग़ौर कर देखो इसे ।
मोज दुनिया छोड़ कर उपकार सूझा है इसे ॥
आस में जगदीश की धन धाम सारा तजि दिया ।
माता पिता का प्रेम निज भ्राता का हित भी नहिं किया ॥

॥ दोहा ॥

नगर अहमदाबाद हू बसे बड़ौदा जाय ।
चेतन मठमें ठहरकर अहंब्रह्म बनिजाय ॥

॥ चौपाई ॥

ब्रह्मानन्द आदि संन्यासी । बहुतदिनन के जुहे प्रवासी ॥
तहां मिली इक योगिनि वाई । निकट नर्मदा सभा बताई ॥
वहां बड़े विद्वान जुरेंगे । आपुस में शास्त्रार्थ करेंगे ॥
इतनी सुनत तुरत उठिधाये । परमहंस तहं स्वामी पाये ॥
सच्चिदानन्द नामहो तासा। उनते मिलिकरि शास्त्रविलासा॥
कही बात इक इनतु भलीसी। विद्याकी अभिलाष भईसी॥
चाणोदक कल्यानी ग्रामा । तहं विदुषन को है विश्रामा ॥
दीक्षित और चिदाश्रम स्वामी । मिले बहुत संन्यासी नामी ॥
शास्त्र विचार संगरहि ठानो । उत्तम जोग पढ़नको मानो ॥
परमहंस परमानंद एका । पढ़े ग्रंथ तिहि निकट अनेका ॥
प्रचलित प्रथा लोकअनुसारी । भोजनकरे आप ब्रह्मचारी ॥
याते पढ़िवो बनतो नाहीं । यह अड़चन पूरी मन माहीं ॥
अब यह त्यागि बखेड़ा दीजै । संन्यासी की दीक्षा लीजै ॥
परि उनि युवा अवस्था पाई । त्याग करनकी करी मनाई ॥
डेढ़ वर्ष नर्मदा किनारे । भ्रमण करत बहु ग्रन्थ विचारे ॥
चालोदर नामी इक ग्रामा । ताके कोस एक शुभ धामा ॥
तहां मिले एक दंडी स्वामी । पूर्णानन्द सरस्वती नामी ॥

॥ दोहा ॥

तिन्हते उनि पंडित कह्यो शुद्धचेतन संतव्य ।
संन्यासाश्रम दीजिये करै बड़ौ कर्तव्य ॥

॥ छन्द ॥

शुद्ध चेतन ब्रह्मचारी है बड़ो यह संयमी ।
मन लालसा संन्यासकी पूरणतया जाकें जमी ॥
कीजिये उद्धार इनकूं लीजिये अपनायके ।
है पंच द्राविड़ विदुष त्यागी दृढ़ जती सुभायके ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु जर जान टलाना चाहैं । प्रथम वार कर दीनी नाहैं ॥
फिरि तीजेदिन लिये बुलाई । दंड ग्रहण की दीक्षा पाई ॥
भये प्रसन्न लयो संन्यासा । आशा पूरित मिटी दुराशा ॥
कछु दिनभ्यसन कियोतिहिंपाहीं । अपरापरा ज्ञानकेमाहीं ॥
दंड विसर्जन करि निर्द्वन्दा । संन्यासी बनि हू स्वच्छन्दा ॥
गुरू द्वारिका धाम सिधारे । विद्या पढ़न आप चितधारे ॥
योग क्रिया पढ़िवे के हेता । व्यासाश्रम के गये निकेता ॥
स्वामी योगानन्द विवेकी । योग क्रिया तिनसे अवरेखी ॥
योग जुगतके ग्रन्थ अनेका । तिन्हते उपज्यो बहुत विवेका ॥
कृष्ण शास्त्री एक ब्राह्मण । ताके ढिंग जा पढ़ा व्याकरण ॥
दूजे पंडित के ढिंग जाई । वेद पढ़ा अति चित्त लगाई ॥
ज्वालानन्द पुरी इक नामी । दूजे शिवानन्द गिरि स्वामी ॥

॥ छन्द ॥

बैठि तिनके पास योगाभ्यास निति प्रिति साधना ।
प्रणव ही का ध्यान करना प्रणव की आराधना ॥
चर्चा करना योग की और योग शास्त्र विचारना ।
तीनों योगी योग साधें रात दिन यह धारना ।
दोनों योगी चलदिये कछु यक महीना बाद की ।
[illegible] हमारे पास [illegible] ही ॥

॥ छन्द ॥

दूधेश्वर पे ठहरेंगे तब योग रीति सिखलादेंगे ।
निकट हमारे आजाना हम तगड़ा सिद्ध बनादेंगे ॥
एक महीना बीता जबही तब स्वामी दयानन्द गये ।
योगीराज मिले तहां दोनों मन चीते आनन्द भये ॥
योगाभ्यासकी मर्मतालिका जितनी कुछ वे जाने थे ।
विधिपूर्वक बतलाई सबरी पात्र जिज्ञासू माने थे ॥
प्रकरण चले कहत यह देखे योगी थे दोनों स्वामी ।
नाममात्र योगी फिर देखे विषय भरे कामी वामी ॥

।दोहा।

ज्वालानन्द पुरी जुहेशिवानन्द गिरि दोय ।
योगी इन सम तीसरो विरला कोई होय ॥

॥ चौपाई ॥

एकदिना यह सुनो जु बाता । अर्बुदगिरि पर्वत विख्याता ॥
योगी तहां बसें विद्वाना । योगक्रिया जाने विधि नाना ॥
अर्बुद आय भवानी चोटी । देखो अन्यहु छोटी मोटी ॥
राजयोग के पूरनज्ञाता । नाम भवानीगिरि विख्याता ॥
गुप्तरहस्य योग के पाये । सरल प्रकार सबे बतलाये ॥
साधन कियो आप अजमायो । सिद्ध मिली संशय विनसायो ॥
जित तित मिले विदुष औ ज्ञानी । योगी मुनी महात्मा ज्ञानी ॥
करि सत्संग बढ़ायो अनुभव । पायो भेद जगतको तिन सब ॥

॥ छन्द ॥

संवत् उनइससेग्यारह तक भ्रमण नर्मदातीर ।
तप बल विद्या बल बढ़ाया कर दृढ़ करि लियो शरीर ॥
आत्मा बल बढ़िगयो जबै कछु तब मन उमंग भई ।
उत्तर दिशि चलि देखो चहिये प्रभुता नई नई ॥
संवत् उनइससेबारह में कुम्भ हतो हरिद्वार ।
तहां महात्मा बहुतक आवें मेला होय अपार ॥
श्रेष्ठ सुयोग्य मिलेंगे योगी आपसमें बतराय ।
यह विचारि दक्षिण दिशि त्यागी मेला देखो आय ॥
तहां पहुंचि साधुन संग भेंटे मिटे बहुत सन्देह ।
परि लालसा बढ़ी मन माही लखें हिमालय गेह ॥

तृतीय मयूख प्रारम्भः

॥ सोरठा ॥

चण्डीपर्वत माहिं जंगल विकट उजार में ।
जहां जाय कोई नाहिं दयानन्द तहं रमि रहे

॥ दोहा ॥

मनपवित्र जबही भयो अति बाढ़ो आनन्द ।
ऋषि आश्रम देखन चले तब स्वामी दयानन्द ॥
मेला पूरन करिचले हृषीकेश के थान ।
साधुन के सत संग में बहुरि बढ़ायो ज्ञान ॥

॥ छन्द ॥

ब्रह्मचारी एक वहां पर मिलगये।दोपहाड़ी अन्य भी संग रिल गये ॥
स्वामी तीनों साथी लेकर चल दिये। साधू मिलन की लालसामें मनकिये॥
पहुंचे जाकर साथियोंको ग्राम में। ठहरे थे रमनीक अच्छे धाम में ॥
इनका इक दिन एकने न्योता दिया।घर में जाकर वाममण्डल रचदिया॥
स्वामीजी औब्रह्मचारीजीवहां।टोहलेते आनपहुंचे यह जहूड़ाथाजहां॥
प्रथम से पण्डित बहुत से थे जमा। भरवी चक्कर का पूरा था समां ॥
अभ्यर्थना की ग्रहपति उठ धावते। आइये महाराज बोला आवसे ॥
देख धंधाबाजियों का चल दिये। आप अपना काम करिये दिल दिये॥
साधु दोनों लोट आसन पर गये। वामलीला देख मन सोचत भये ॥

॥ दोहा ॥

इतने ही में विप्रवर पहुंचे स्वामी पास ।
भोजन चलि कर कीजिये पूरन हो मम आस ॥
स्वामी जीने कहि दई मन अपने की बात ।
मांसाहारी मैं नहीं खात फूल फल पात ॥

॥ छन्द ॥

मांस भक्षण है बुरा तुम छोड़दो । यदि हो श्रद्धा अन्न थोड़ा भेजदो॥
ब्रह्मचारी पाक सब करिलेयगा। हम को भिक्षा भी वही देदेयगा ॥

आज देखा प्रथम मैंने मांस को। चल दिया था रोककर निज सांसको॥
भिक्षुक समझ हमको क्षमा करि दीजिये। आप अपना काम घर जा कीजिये॥
चल दिया पण्डित विचारा सोचकर। मनमें पछताता हुआ दिल मोचकर॥
तंत्रग्रन्थों को मंगाकर एक से। देखना प्रारम्भ कीया टेकसे॥
दृष्टि उनमें एक प्रकरण पड़गया। जिसको पढ़कर ग्लानिसे मन हट गया॥
बहन, बेटी, मा, चूहरी के संगमें। चर्मकारी भी भली परसंगमें॥
उच्छिष्ट चारों वर्णका भोजन करे। श्वानवत् चाटे वमन नहिं घिन करे॥
मद्यादि पंच मकारका साधन करे। स्वछन्द विचरे जगतमें भव निधितरे॥

॥ छन्द ॥

तंत्र के सिद्धान्त देखे ऐसे ऐसे और भी।
कांपता लखि जिनको मन चलता नहीं कुछ ग़ौर भी॥
मनुष्य तक का मांस खाना मोक्ष का मारग कहा।
इससे बढ़कर पाप जग में कौनसा फिर बच रहा॥
वाममारग ने जगत् से वेद को छुड़वा दिया।
शैव शाक्तक पंथ भारतवर्ष में चलवा दिया॥
बातें भरी निर्लाज की जो देखना चाहे कहीं।
भ्रष्टता का फ़ोटू अथवा खींचना चाहे कहीं॥
कुकर्म का व्यवहार यदि जो सीखना चाहे कहीं।
तन्त्रग्रन्थों में मिलेंगी देखलो चाहे जहीं॥
पापियों ने पलट मारग जगत का सारा दिया।
वेदका सूरज छिपाया धर्म सब कारा किया॥

।दोहा।

तांत्रिक मत दुर्गति भरा पैशाचिक गति जोय।
महान् आत्मा की भला कैसें श्रद्धा होय॥
भारतकी तो कह कथा जगको हितू जु होय।
घृणित तन्त्र ग्रथन भला कैसें माने सोय॥
जगतसुधारन हित लियो जाने निज अवतार।
सो कैसें करि छांड़ि है वैदिकधर्म प्रचार॥

॥ छन्द ॥

ले ब्रह्मचारी साथ । श्रीनगरको चलि जास ॥
केदार घाटें जाय । डेरा लगाये आय ॥
जब पण्डितन के साथ । यदि होय शास्त्रार्थ ॥
तब तन्त्रग्रन्थ प्रमाण । देकर करें हत मान ॥
गङ्गागिरी विद्वान् । थे बड़े साधु महान् ॥
तिनसों भई अति प्रीति । द्वै मास गये तहं बीति ॥

॥ छन्द ॥

ऋतु वसन्त के होत वहां से चलदिये ।
तीन साधु के साथ आपहू रमि दिये ॥
रुद्र प्रयाग मझार अन्यहू लखि लिये ।
अगस्तमुनी समाधि जायके पग दिये ॥
उत्तर चोटी भली दीखती एक है ।
सिद्धाश्रम सो ठाम नाम की टेक है ।
वहां गये चढ़ि आप देखने ताहि को ।
चारि मास रहि वहां विलोको ताहिको ॥

॥ छन्द ॥

केदार घाटें आय । पुनि गुप्त काशी जाय ॥
लखि कुण्ड गौरी लीन । मन भीमगोड़ा दीन ॥
त्रिजुगी नारायण जाय । तहां मन्द्र देखो धाय ॥
पर चित्त भायो नाहिं । तजि चले तहंते ताहिं ॥
लोटि वहं पर आय । विश्राम कीनो जाय ॥
तहं रहत साधू एक । सो रूप जंगम भेक ॥
निवसित जननकों देख । तिन्ह को स्वभावहु पेखि ॥
थे ब्रह्मचारी जोय । तिन संग साधू दोय ॥
वेमिले सब तहं आय । तिहिं साथ में बतराय ॥
गिरि बरफ के हैं जोय । मति मिलें साधू कोय ॥
चलि खोजिये सब प्रान्त । तब हूजिये निर्भ्रान्त ॥
वहां गप्प बहुतक सुनी । एकहू मिलो नहिं गुनी ॥

॥ दोहा ॥

शीत शरद्में बीसदिन भ्रमण तहां पर कीन ।
पै न कहूं साधू मिले चर्चा सुनी नवीन ॥

॥ सोरठा ॥

बहुरि घाट केदार । चित्त स्वस्थ कीनो कछू ॥
मनमें उठो विचार । तुंग नाथ चलि देखिये ॥

॥ चौपाई ॥

बहुधा तहां मूर्त्तियां देखी । पण्डनु की माया अवरेखी ॥
तत्क्षण लोटि तहांते आये । आगें चलि मारग द्वे पाये ॥
नैऋत नाम थान सुनि पायो । ताहि देखने चित्त चलायो ॥
सीधो मारग दियो विहाई । फंसे विकट बेहड़ में जाई ॥
ओढव खाडव जहां चटानें । भटकत फिरे बाट बिन जानें ॥
झाड झूंड सूखे गहि करके । चढे नलेपर ज्यों त्यों करिके ॥
सूरज अस्त होनको आयो । चहुंदिश लखो बाट नहिं पायो ॥
सोच भयो बिन पानी ईंधन । राति कटे कैसे निर्जन बन ॥
बस्ती ढूंढत चले अगारी । बेढब जंगल विकट पहाड़ी ॥
कंटक उरझि वस्त्र सब फारे । पगन मांहि बहे रुधिर पनारे ॥
महा कष्ट कठिनाई भोगी । विचलित नाहिं भये वह योगी ॥
बहुसा उतरि पहाड़ो आये । प्रचलित मारग तहं पर पाये ॥
रैनि अंधेरो चहुंदिश छायो । अटकल ते मारग लखि पायो ॥
एक गांव आगे चलि आयो । मारग ओखी मठ को पायो ॥
ओखीमठ बस रैनि बिताई । उठे भोर सब क्लेश विहाई ॥
काशीगुप्त गये फिर आये । ओखी मठ देखन के भाये ॥
पाखंडी साधू सब देखे । हरि सुमिरन करते नहिं पेखे ॥
एक महन्त इन्हें अपनायो । धनको लालच बहुत दिखायो ॥
स्वामी कही सुनो इक बाता । धनिक गड़े हैं मेरे ताता ॥
धनकाजे घरही बसि रहतो । काहे कष्ट यातना सहतो ॥
सब इच्छाकरि सुखसब त्यागे । सांसारिक धन कहतिहिआगे ॥
जो इच्छा बसि निकट तुम्हारे । कबहुं न आवे पास हमारे ॥

॥ दोहा ॥

कोन वस्तु खोजत फिरो ऐसी बड़ी महान् ।
हंसि महन्त पूछन लगे कहिये हमें सुजान ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी कहा तबै समुझाई । परम वस्तु का भेद बताई ॥
सच्ची विद्या योग्य मिलेजो । परमानन्द मोक्ष पद है सो ॥
विना आतमा शुद्ध किये ते । विना सत्य आचरन गहेते ॥
नहिं प्राप्ती जबतक जग होई । ढूंढ़त फिरूं जहां तहं सोई ॥
जब लग करूं देश उपकारा । मन में ठानूं यही विचारा ॥
करैं निवास बहुत परचायो।फलित होत नहिं निज मत पायो॥
दूजे दिन जोशी मठ आये । यहां बहुत साधूगण पाये ॥
महाराष्ट्र योगी संन्यासी । विदुष मिले तहं भले प्रवासी ॥

॥ दोहा ॥

बद्रीनारायण गये स्वामी जी महराज ॥
रावल जी महराज तहां करत रहैं सब काज ॥

॥ चौपाई ॥

दर्शन और वेद के ऊपर । चर्चा रही बहुत दिन डट कर ॥
परि इक सोच भयो अति भारी । नहिं योगी इस देश मझारी ।
सूर्योदय से प्रथम एक दिन । देखी जाय अलकनंदा जिन ॥
पुच्छा नाहिं जान की पारा । जितते बहे नदीकी धारा ॥
बरफ ढके पर्वत सब दीखें । स्रोततलक पहुंचत नहिं दीखें ॥
गोमुख नीचे पहुंचे जाई । पर्वतमाला पड़ी लखाई ॥
जैसो कष्ट भयो मगमाहीं । कथा कहैं सो कछ तुम पाहीं ॥
यह लखि दशा विचारन लागे । नदी उतरिबो मनमें पागे ॥
शरदी पड़ति हती अतिभारी । वस्त्रहीन नहिं जाति सहारी ॥
भूंख लगै सब बरफ उठावैं । पेट भरै यह लखिकर खावैं ॥

॥ दोहा ॥

क्षुधा निवारन कारने लेत बरफ और खात ॥
आतुरता की भूल यह बड़ी हंसी की बात ॥

॥ चौपाई ॥

नदी उतरिबेमें चित धारो । हाथ दंडकको फांट निहारो ॥
जल ऊथलो निरखि जहं पायो । पार उतरनो मन में चायो ॥
तिरछे टूक बरफ के पारे । तिन ऊपर पग जात न धारे ॥
नगिन पांव कटि घाव भये हैं । ठिठुरि गये पुनि रुधिर बहे हैं॥
मूर्च्छा सी तन आय गई है । पांवनकी सुधि नाहि रही है ॥
बर्फ माहिं गिरने ही लागे । परि दृढ़ करि चलि दीने आगे ॥
जो गिर पड़े बर्फ के माहीं । अवश्य मृत्यु ह्वै जाय तहांहीं ॥
मातपिता घरवार त्यागिके । तजि भ्राता को चले भाग के ॥
जाकी खोजबीन में आये । मरि जाते ताके विनु पाये ॥
या विधि सोच करत मन माहीं । पैर अगाये धरते जाहीं ॥
ज्यों त्यों करि उतरे तिहि पारा । शीत हटे अस करो विचारा ॥
सब शरीर के वस्त्र उतारे । जांघ तलक लिपटाये सारे ॥
शक्ति हीन चल सकते नाहीं । खड़े रहे घबराय वहां हीं ॥
आवे कोऊ मिले सहाई । द्वैजन आये चले तहांई ॥

॥ दोहा ॥

पहुंचादेंगे सिद्धपथ चलो हमारे गाम ।
स्वामी जी मानी नहीं वह करि चले प्रणाम ॥
प्रकृति ठीक जब ह्वै गई वसुधा कियो पयान ॥
कछू समय ठहरे जहां तीरथ आछो जान ॥

॥ छन्द ॥

संगमके आस पास । घूमि घूमि करि विलास ॥
आठ बजे सरी शाम । जाय बसे बदरी धाम ॥

॥ छन्द ॥

बिना कहे चले गये स्वामी रावल जी यह सोच रहे ।
सब वृत्तान्त सुनाया आकर भोजन करके सोये रहे ॥
प्रात होत दूजे दिन स्वामी रावल जी से बिदा भये ।
निकट जाय योगी के ठहरे राति बसे आनन्द लहे ॥

॥ सोरठा ॥

हे जु बडे विद्वान्, ऋषि अपने को समझते ।
धार्मिक विषय निदान, ताकेसंग बहु दृढ़ किये ॥

॥ छन्द ॥

दूसरे दिन बेहड़ों और पर्वतों की बाट से ।
चलते फिरते आन उतरे चिलकिया के घाट से ॥
रामपुर नठवाल के मेंरामगिर के धाम पर ।
परिवर्तन करने वायु जल आसन लगायो आनकर ॥

॥ छन्द ॥

शुद्ध आचरणों के कारण रामगिरि विख्यात था ।
योग का लोभी था पूरा क्रिया से अज्ञात था ॥
जान पड़ता था किसी से बातें करता रामगिरि ।
पर न होता पास कोई मारता रहता था विष ॥
यह देख स्वामी जी वहां पर चन्द दिन ठहरे रहे ।
चकित होते सोच करते भेद सब लेते रहे ॥
एक दिन पूछा उसे एकान्त में बिठलाय कर ।
कौन से करते हो बातें चीखते हो किस फिकर ॥
पड़ गई आदत मुझे कुछ भेद इसमें है नहीं ।
योग सिद्धी चाहता हूं पर नहीं मिलती कहीं ॥

॥ छन्द ॥

तजा था रामपुर का ठाम । किया जा काशीपुर विश्राम ।
यहां से द्रोणसागर जाय । दिया था शीतकाल बिताय ॥
तहां घबड़ा गया था प्राण । हुआ था शून्य मन का ज्ञान ।
किया संयम लगाया ध्यान । हुआ जब जीव का संधान ॥
चले थे द्रोणसागर छोड़ । प्रभू से प्रेम अपना जोड़ ।
मुरादाबाद सम्भल देख । गङ्गा तीर बसि अवरेख ॥

॥ दोहा ॥

गढ़मुक्तेश्वर देखके रमे गङ्ग के तीर ।
एक दिन मुरदे को लखो देखो चीर शरीर ।

॥ चौपाई ॥

योगबीज औ हटप्रदीपिका । राखत पास अनेक पुस्तिका ।
तिनको अनुभव करनो चाहो । चीर फाड़कर देखो चाहो ॥
नाड़ी चक्र आदि विस्तारा । उनको करनो चहो विचारा ।
ग्रीवा सीस हृदय के भागा । देखे काटि सहित अनुरागा ॥
पुस्तक मांहि लिखो हो जैसा । निश्चय करत लखो नहिं तैसा ।
नाहिन पतो कछू तहां पायो । प्रेत साथ पुस्तकहु बहायो ॥

॥ दोहा ॥

वेद उपनिषत् शास्त्र को मानो शुद्ध प्रमान ।
दूजे ग्रन्थन के विषय नाहिन कछु विज्ञान ॥
या घटना को देखकर होत यही अनुमान ।
सत् विद्या की खोज में पूरन इनको ध्यान ॥

॥ सोरठा ॥

चाव भरी एक शक्ति, स्वामीजी में प्रबल थी ।
परब्रह्म की भक्ति, वेदशास्त्र श्रद्धा बड़ी ॥

॥ चौपाई ॥

कहं हिन्दू संन्यासी एका । फारहि मुर्दा लहे विवेका ।
साधारण जन जो छुइ पावें । तिनको हिन्दू बुरो बतावें ॥
यदि वा चीड़ फाड़ चितदेई । फिरि हिन्दू छूवे नहिं तेई ।
नाहिं घृणा ताके मन आई । भले प्रकार जांच लियो ताई ॥
करि मिलान पुस्तकसे लीना । वृथा देखि तिन को तजि दीना ।
करि अभ्यास शास्त्र बहु ज्ञाना । जाते बनिगये पुरुष महाना ॥

दोहा ।

संवत् उन्नीस से बारह को पूरन होतो जान ।
फर्रुखाबाद चले गये आत्मा जुथे महान् ॥

आनन्द ८५७।
पुस्तकालय
ांक 971
। महाविद्या

॥ छन्द ॥

संवत् उन्नीस से तेरह के लगत अगाड़ी धाये ।
कानपुर प्रयाग के मधि के बहुत धान लखि पाये ॥
फिर मिरज़ापुर के समीप में कियो वास पुनि जाई ।
विन्ध्याचल आशोची मन्दिर दीनों मास बिताई ॥

॥ छन्द ॥

वरना गङ्गा के संगम पर ठहरे एक गुफा में जाय ।
अधिपति जहां भवानन्द स्वामी औरहु मिले विदुष तहं आय ॥
फिरि चलि गढ़ चुनार में पहुंचे दुर्गा कोहू मन्दिर मांहिं ।
अन्नभात सब त्यागन कीनो केवल दूध पीय रहि जाहिं ॥
योगाभ्यास तासु सम्बन्धी अनुभव लागे करन अघाय ।
विजया सेवन ते उनमत ह्वै सपने शङ्कर देखे जाय ॥
नन्दी मूरति लखी शिवालय ताके उदर विराजो चोर ।
निकसि भगो इन तो डर करिके ये सोये जब तक भई भोर ॥

॥ चौपाई ॥

भोर भये इक बुढ़िया आई । पूजाहित ले दही मिठाई ॥
नन्दीमुखमें ताहि चढ़ायो । ताके पेट बैठि इन खायो ॥
नशा उतारो भूख मिटाई । या घटना में भंग छुटाई ॥

॥ दोहा ॥

जहंते निकरी नर्मदा ताको देखन सोत ।
मनमें उपजी लालसा चले भोरके होत ॥

॥ चौपाई ॥

संवत् उनइस से अरु चौधा । देखन चले नर्मदा सोधा ॥
दिग दक्षिण में पहुंचे जाई । बड़े घने जंगल के माई ॥
वृक्ष वेर अरु लम्बो घासा । वेहड़लगो भयो चहुं पासा ॥
कहुं कहुं वसी झोंपड़ी पाई । मारग तहां न देत दिखाई ॥
इक घर दूध तनक इन पीया । चले अगाड़ी सुख भयो जीया ॥
पहुंचे डेढ मील अनुमाना । सुन्नसान वन महा भयाना ॥

तहां मिलो इक कालो रीछा । इन माहीं आवत सो दीखा ।
द्वै पग खड़ा चिंघाड़त आवे । मुख फाड़े जनु तुरत ही खावे ।
इन सोटा ले रोको आगो । रीछ डरो पाछे को भागो ॥
अटल तपस्या का फल ऐसा । भालू हुआ पलायन जैसा ॥

॥दोहा॥

सुनी दहाड़ जु रीछ की वनवासिनु जा ठौर ।
संग शिकारीस्वान ले आतुर आये दौर ॥
इनकी करी सहायता समझाये कहि बैन ।
सिंह रीछ हाथी यहां बसत भयंकर एन ॥
उनकी बातन को सुनो ध्यान दियो नहिं एक ।
आगे ही को चलि दिये राखी अपनी टेक ॥

चौपाई

आगे जंगल कठिन दिखानों । दुस्तर महा तासु विच जानों
कांटेदार बेरियां छाई । सहज निकलिवो तिहिं मधि नाई ॥
कहुं घुटनोंके बल चलि जाई । कहूं पिटिकिहां अहिकी नाई ॥
बस्तर फटे शरीर लुहानो । भये अधमरे मन पतिआनो ॥
चारो ओर अंधेरी छाई । दीखत नाहिं हाथकी झांई ॥
दृढ़ता तजी न भये हिरासा । आगे बढ़त गये करि आसा ॥
ऊंचे पर्वत पड़े दिखाई । नाना रूप वनस्पति छाई ।
छोटी नदी स्वच्छजल जाके । चरत बकरिया तीरें वाके ॥
गोबर परो ढेर बहुतेरा । भयो अनुमान ग्राम को नेरा ॥
छुटी झोंपड़ी तहं कछु देखी । टिमटिमात दीपक लो पेखी ॥
बड़ा वृक्ष पहिले इक पाया । जाको सघन लखी अति छाया ॥
वासो वास मानुष तहं जानो दैनो कष्ट उचित नहिं मानो ॥
विटप बैठि काटी सब राता । नदिया तट गये होतप्रभाता ॥
घायल पांव देह सब धोयो । करि स्नान मार्गश्रम खोयो ॥

भजन करन को बैठे तबही। वन पशु सम कलरव सुनि सबही ॥
परि वह शब्द शकटको पाया। तासंग झुंड नारि नर आया ॥
इनहिं देखि ह्वे गये चहुं ओरा। वृद्ध आय पुनि कियो निहोरा
कितने आये पूछन लागे। इत कह जानो चाहत आगे ॥
काशी ते मैं चल कर आया। सीत नर्मदा देखन धाया ॥
यह सुनि सब आगे चलि दीये। बकरी गाय साथ में लीये ॥
तापाछें एक अधिपति आये। संग पहाड़ी द्वैजन लाये ॥
एक तरफ बैठे चुप आई। स्वामी तहां समाधि लगाई ॥

दोहा

हाथ जोरि विनती करी चलो हमारे धाम।
तन मन से सेवा करें देयं बड़ो आराम ॥

चौपाई

भोजन को सतकार करेंगे। आज्ञा होय सो सीस धरेंगे ॥
परि स्वामी एकहु नहिं मानी। वहीं वास करिवे की ठानी ॥
हम अतीत संन्यासी साधू। ग्राम गये कछु उठे उपाधू ॥
भक्षण व्याघ्रसिंह करि जाई। तो कह रोवै हमारी माई ॥
ईश्वर रक्षक है जग माई। वा सम दूजो कौन सहाई ॥
मारग मिलो रीछ इक भारी। वाते रक्षा करी हमारी ॥
रैनि दिना अरु आठो जामा। है रक्षक वह पूरन कामा ॥
आप न चिन्ता करें हमारी। सबको रक्षक जगदाधारी ॥
यह सुनि मन को मिटो परेखा। दिव्य अंश स्वामी में पेखा ॥
निज अनुचरन दिया समझाई। हित करि करो साधु सिवकाई ॥
धूनी चहुं दिस देउ लगाई। हिंसक पशु जिहि लखि फिरजाई ॥
तुमहू जागत रहो रैनि भर। स्वामी वसे सुखी मन ह्वै कर ॥

॥ दोहा ॥

भोजन की विनती करी, आज्ञा दीजै मोय।
ग्राम जाय लाऊं तुरत, जैसी इच्छा होय ॥

॥ चौपाई ॥

योगाभ्यास करो हम जबते । अन्न छोड़ दीनो है तबसे ॥
केवल दूध अहार हमारो । प्राणमात्र को यही सहारो ॥
यह सुनि तोंबा ले उठि धाये । भरिकर दुग्ध ताहि मधिलाये ॥
ले आज्ञा निज वास सिधारो । सजग कये सेवक न प्रचारो ॥
दूध पानकर सोय रहे हैं । रक्षक पहरो देत रहे हैं ॥
भोरभयें उठिकरि असनाना । ध्यान कियो करिदियो पयाना ॥

॥ दोहा ॥

श्रोत देखि वगदत भये, डटे नर्मदा तीर ।
साधुन को सत।संग करि, बाढ़ो सुख शरीर ॥

इति द्वितीय मयूखः

अथ तृतीय समुल्लासः

॥ दोहा ॥

तीनवर्ष तट नर्मदा, वास कियो दिन राति ।
फिरि ब्रजमण्डलको चले, सुनो कहूं सो बात ॥

॥ छप्पय ॥

वह विद्या कहां मिले जाय पढ़ि विदुष कहाऊं ।
कौन ठिकाने जाउं जहां कोविद कोऊ पाऊं ॥
देखे बहुतक देश लखो पण्डित अस नाहीं ।
जो होवे वागीश शास्त्र के अर्थनु माहीं ॥
यह सोचि नर्मदा तीर तजि ब्रजमण्डलको चल दिये ।
पहुंचे तीरथ मधुपुरी यहां विरजानन्द दर्शन किये ॥

***

पूछी विरजानन्द कौन द्वारे पर ठारो ।
दयानन्द सरस्वती कही है नाम हमारो ॥
कहन लगे तब वैन व्याकरण जानत हो कछु ।
सारस्वत चन्द्रिका कौमुदी पढ़ी जु मैं लघु ।
तब खोलि द्वार दण्डी दियो बोलि निकट अपने लिये ।
ऋषिकृत शास्त्र बताय कर प्रश्न परीक्षा के किये ॥

॥ चौपाई ॥

ऋषिकृत ग्रन्थ पढ़न मैं आयो । तिनको पठन सप्रेम करा ओ ॥
यह सुनि कर दण्डी जी बोले । हाथ मनुषकृतसे जब धोले ॥
तब उनको कुछ पासकता है । आर्यग्रन्थ सब पढ़ सकता है ॥
स्वामी ने संकल्प कियो यह । मैं ने छोड़ि दिये सबरे वह ॥
सारस्वत की कही विवस्था । पुंसु पुंक्षु बतलाय अवस्था ॥
पुंक्षु शुद्ध करने के ताईं । सारस्वत तिन्ह वृथा बनाईं ॥
पुंक्षु अशुद्ध विदुष सब जाने । झूंठी बात कौन सनमाने ॥
और सुनो इक हमरी बाता । संन्यासी को नाहिं पढ़ाता ॥

॥ दोहा ॥

भोजनबिस्तर खोज में, दिन व्यतीत हे जाय ।
पढ़िवो फिर कैसे बने, हमको देउ बताय ॥
दयानन्द हठकरि डटे स्वीकरि नियम समस्त, ।
भट्टोदीक्षित कृत्य पर, जूता हते प्रशस्थ ॥

॥ चौपाई ॥

दण्डी यह लखि भये दयाला । विद्यारम्भ करायो हाला ॥
शहर मांझ चन्दा करवायो । महाभाष्य तिहि काज मंगायो ॥
स्वामी पढ़न व्याकरण लागे । बहुत दिवसके तप बल जागे ॥
जैसे शिष्य चाहते दण्डी । वैसे दयानन्द उद्दण्डी ॥
सो यह आनि मिलो संजोगा । जन्म कर्म पिछले को भोगा ॥
सूखे चना चना की रोटी । बिना शाक के मोटी झोटी ॥
दुर्गा खत्री डांके वाला । कियो गुज़ारा समस अकाला ॥
इक दिन जोशी अमरलाल ते । भेट भई बीतें अकाल के ॥
खान पान और पुस्तक भारा । अपने ऊपर लेलियो सारा ॥
जब तक वास मथुपुरी कीनो । स्वामी को भोजन उनि दीनो ॥

॥ दोहा ॥

गोवरधन सर्राफ ने, स्वामी को समझाय ।
दीपक बाती खर्च कों, तेल दयो बतलाय ॥

॥ चौपाई ॥

पत्थर वाले थे हरदेवा । सो स्वामी की करते सेवा ।
दूध बतासे उननु बताये । ईश्वर बानक सबे बनाये ॥
जमना जाय कलश भरि लावें । गुरुहि आय असनान करावें ॥
चित्त लगाय गुरू की सेवा । करते नित्य जानि निज देवा ॥
निर्मलजल जमुनापर जाकर । गुरुपीवन हितलाते भरिकर ॥
कोसद्वेक नितप्रति चलिवेको । व्यसनबड़ो कसरति करिवेको ॥
संप्रदाय मत खण्डन करते । कण्ठी तिलक उतरवा धरते ॥
विप्रनु सन्ध्या को उपदेशा । संस्कृत भाषण करत हमेशा ॥

॥ दोहा ॥

पढ़त व्याकरण के समय, करते योग अभ्यास ।
एक सच्चिदानन्द की, राखत पूरन आस ॥

॥ चौपाई ॥

ढाई वर्ष रात दिन अमकर । विद्या पढ़त रहे चित देकर ॥
एक दिन दण्डी जीने मारे । क्रोधित होकर दण्ड प्रहारे ॥
लागी चोट हाथ में आकर । शान्त रहे लाठी को खाकर ॥
विनती करि महर्षि समझाये । निज शरीर के भेद बताये ॥
अति कठोर है देही मेरी । तामें लगे कहा यह वेरी ॥
कोमल कर हैं प्रभू तुम्हारे । दुखित होत हुइ हैं मो मारे ॥
जड़िया तहां नैन सुख एका।सत् संगतिकरि लियो विवेका॥
महाभाष्य अरु अष्टाध्यायी । कंठ समस्त याद ही ताही॥
शुद्ध संस्कृतभाषण ताको । दण्डी मानत कहनो वाको ॥
संथा देत क्रुद्ध कछु हूके । दयानन्द को गाली देके ॥
दण्डी जीने सोटा मारा । स्वामी सहज स्वभाव सहारा ॥
जड़िया उक्त निवेदन कीया । वृथा क्रोध क्यों लाये जीया॥
गाली देना और मारना । नीकी लगी न मोय ताड़ना ॥
यह संन्यासी है ब्रह्मचारी । यापे चहिये कृपा तुम्हारी ॥

॥ दोहा ॥

यह सुनि विरजानन्दजी, हंसि बोले यों बैन ।
साधु प्रतिष्ठा करहिं अब, बैठे संथा लैन ॥

॥ छन्द ॥

दंडी जीके कुपति होन को स्वामी बुरो न मानो ।
पर जड़िया को कहनो सुननो समयोचित नहिं जानो ॥
बाहिर आय कही समझा कर जाकारन से मारें ॥
कुम्भकार माटी ज्यों पीटे तैसेहि मोहि सुधारें ॥

सोरठा ।

मेरो होत सुधार, कछु न आप यासें कहें ।
बड़ो होय अपकार, शिक्षा जाय सिराय जो ॥
रहे दिवस नगिचाय, विद्या पूरन होन के ॥
प्रज्ञाचक्षु सुभाय, झाड़ू देने को कहा ॥

दोहा ।

बैठत ऊपर हम जहां झाड़ू देउ लगाय ॥
भीतर बाहर सब जगह कूड़ो नहिं रहि जाय ॥

चौपाई

दयानन्द जी दई बुहारी । कूड़ो एक जगह दियो डारी ॥
डोलत पांव पड़ो तहं जाई । दंडी जी तब गय रिसाई ॥
आज्ञा भंग करी तें मेरी । अब न गुजर होवे यहां तेरी ॥
जलदी निकसि बाहिरें जावो । ड्योढ़ि बन्द यहां नहिं आवो ।
जड़िया नैनसुखी पर जाई । आपनी पूरी कथा सुनाई ॥
नन्दन जी धौबे के तांई । उक्त कथा सब दई बताई ॥

छन्द

जानताहूं ठीक यह भी कुपति गुरु जी हैं नहीं ।
परि बिना आज्ञा लिये नहि जाऊँगा मैं भी कहीं ॥
निकट वे दिन आगये हैं विद्या पूरन मैं करूं ॥
इस लिये ही चाहता हूं रुष्ट उनको क्यों करूं ॥
आपकी यदि चल सके तो यह सहारा दीजिये ॥
शान्त हों गुरुदेव जिस विधि यत्न वैसा कीजिये ॥
दंडी जी पर वे महज्जन स्वामी जी को लेगये ॥
हाथ पैरों से लगाया ऋषि खुशी झट होगये ॥

छन्द

अष्टाध्यायी महाभाष्य वेदान्तशास्त्र जब पढ़ि लीना ॥
और उपनिषद् बहुतक पढ़ि कर ब्रह्मज्ञान दृढ़तर कीना ॥
प्रचलित परिपाटी को लखि के गुरु आज्ञा को लेन चहा ॥
लोंगें भेट धरीं जा आगें पग छूये मन उमगि रहा ॥
मांगी विदा कहन यों लागे पास नहीं जो भेट धरूं ॥
संन्यासी मैं हूं विद्यार्थी आज्ञा होय सो चित्त धरूं ॥
विरजानन्द सरस्वती स्वामी हंस कर उत्तर यही दिया ॥
वस्तु उपस्थित पास तुम्हारे उसे समर्पण नहीं किया ॥
अब मैं वही चीज़ मांगूंगा उद्यत हो संकल्प करो ॥
मुझे सत्य विश्वास कराके पृच्छा पूर्वक चलो फिरो ॥

प्रेम भरे सुनि वचन गुरू के कियो निवेदन एक यही ॥
शक्ति आपनी में जो कुछ है न्यौछावर करि देउं वही ॥
इतनी सुनत प्रसन्न महर्षी महागूढ़ बोले बैना ॥
बेटा जाउ सफल भई विद्या हमरी यह शिक्षा लेना ॥

छन्द

सत् शास्त्र करो उद्धार होय उपकार सुधारो देशा ॥
तुम वैदिक धर्म्म प्रचार लेउ मन धार करो उपदेशा ॥

छन्द

मैं करूं आपका कहना । यों बोले स्वामी बैना ॥
यह सत्य प्रतिज्ञा कीनी । गुरु जी से आज्ञा लीनी ॥

॥ छन्द ॥

कण्ठ लिये लगाय के, बहुत भेद बताय के ।
युक्ति ऐसी दे दई, सर्व प्रकार जो नई ॥
मनुष कृत हैं ग्रन्थ जो, भरे निन्दित पंथ सो ।

* * *

जगदीश और ऋषिनु की, निन्दा करी जु मुनीनु की ।
ये दोषना ऋषि कृत्य में, यह जांच कहता सत्य में ॥
आशीष देय विदा कियो, बरदान आछो दे दियो ।

* * *

॥ प्रज्ञप्रिका छन्द ॥

स्वामी दयानन्दजी सरस्वती,
योगी बड़े शुद्ध हैं जती सती ।
त्यागी कृपालू भले सुसंजमी,
शान्ति भरी युक्ति की नहीं कमी ॥

॥ शिखरणी ॥

चले जो स्वामी जी, हृदय धरि दण्डी कथन को।
किये वांच्छा ऐसी, किस विधि निभाऊं वचन को ।
करी है जो आज्ञा, मथुपुर निवासी विदुषने ।
करूंगा पूरी मैं मगन मन होता जगत् में ॥

॥ छप्पय ॥

दयानन्द तुम धन्य लोक उपकार चाहि चित ।
दियो त्यागि निज धाम ग्राम सत्कार मान हित ॥
सहे दुःख जगमांहि शत्रु बनि गये लोग सब ।
गुरू वाक्य मन धारि पैज यह रोपि लई तब ॥
करूं काज संसार के बिन सहाय रक्षक बिना ।
देउं काटि जंजाल सब जिन बिगाड़ कीयो घना ॥

॥ चौपाई ॥

निज जीवन जीवन नहिं समझे । नाना कष्ट सहे गरुतम जे ॥
महा घोर अज्ञान अंधेरो । सूझत नाहिन कहूं उजेरो ॥
सूरज विद्या बुद्धि ज्ञान को । उदय करो जग धर्म ध्यानको ॥
प्रण पालो गुरु बचन कहेको । नाहिं सहायक रक्षक एको ॥
धन्य गुरू तुम सम नहिं कोई । वर्णन महिमा का नहिं होई ॥
त्यागि अपनपो शिष्य प्रबोधो।महान् आत्माको|अति शोधो॥
सांसारिक नहीं लिये पदारथ । मांगि लियो करिवो परमारथ॥
धर्म सुधारक वेद प्रचारा । देश उवार हेतु मन धारा ॥

॥ सोरठा ॥

गुरू बचन लियो मानि, दृढ़ निश्चय यह करि लियो ।
नभ वानी सम जानि, उत्फुल्लित मनहूँ गयो ॥
था ऐसा विश्वास, प्रज्ञा चक्षु महर्षि कूं ।
जो पुजवे मम आस दयानन्द ते अन्य को ॥

॥ चौपाई ॥

मेरा सिद्धि अभीष्ट करेगा । दयानन्द पढ़िकर सुधरेगा ॥
इहि कारन उनि अपना सारा । सौंप दिया विद्या भण्डारा ॥
प्रेम प्रतिष्ठा करि अपनाया । शास्त्र भेद सब गूढ़ बताया ॥
जो कुछ ऋषिकृत ग्रन्थों मांहीं । निश्चय पूर्वक बातें पाई ॥
खण्डन मण्डन की विधि शैली । विद्या धन की पूरी थैली ॥
पात्र समझि इन को सो दीनी । नम्र होय श्रद्धा करि लीनी ॥
गुरू को मान करे जो कोई । दयानन्द से सीखे सोई ॥
गुरु प्रतिष्ठा इनमें जैसी । करत अन्य को लखी न ऐसी ॥
महर्षि कहि सम्बोधन करते । गुरु को नाम न कबहु उचरते ॥
निज ग्रन्थन में जगह जगह पर । अपना लिखते नाम जहां पर॥

गौरवयुत ऐसा तहां पाया । विरजानन्द का शिष्य बताया ॥
मान प्रतिष्ठा गुरु की भारी । रही अटल निज हृदय मंझारी ॥

॥ दोहा ॥

ये संन्यासी प्रथम के दयानन्द महाराज ।
ब्रह्मचर्य आश्रमहि पै कीनो पूरन काज ॥
विद्या पढ़ि सिद्धी लई वरु पायो गुरु पास ।
धर्म प्रचारन हित चले ईश्वर की गहि आस ॥

॥ दोहा ॥

उनइसवे अरु बीस को संवत् विक्रम जान ।
अन्त मास बैसाख के तजो मधुपुरी थान ॥

॥ छप्पय ॥

धन्य आज की घड़ी भाग चेते भारत के ।
दृढ़ प्रतिज्ञ प्रण करो बैन सुनि अति आरत के ॥
सतयुग अन्तर आनि होंयगो वर्तमान अब ।
यागिक कर्म प्रकार होयंगे विद्यमान सब ॥
धर्म जगे संसार में नाश अनैक्यता होयसी ।
दयानन्द आनन्द दे सबै कलह को खोयसी ॥

* * *

बहुत बढ़ो सन्ताप आप जगताप हरेंगे ।
नेह मेह बरसाय प्रेमके खेत भरेंगे ।
धर्म समय ह्वै जाय कर्म फल फूल फलेंगे ॥
पापशूल दुरिजांय पहरुआ आय जगेंगे ।
दयानन्द वनि कृषक अब वपन बीज वैदिक करें ।
नशि अकाल कलि काल को जाल ख्याल सबरे हरें ॥

* * *

दयानन्द संग सैन्यदेव वाणी को लेकर ।
दलपति अंग उपांग उपनिषद् शास्त्र बना धर ॥
यज्ञयोग की तोप कर्म बंदूक बनाई ।
खण्डन गोला भरे धमकि चहुं ओर दिखाई ॥
चढ़ि चले वेद झंडा लिये तुरही धर्म बजायके ।
अलघेरि सम्प्रदायक लिये कोप कियो झटि धायके ॥

इति तृतीय मयूखः

अथ चतुर्थ मयूख:

॥ छन्द ॥

आय आगरे सबते पहिले पंचदशी गढ़ तोड़ो।
देवी भागवत गढ़ो पुरानो ताहि हिलाकर छोड़ो॥
पण्डित सुन्दरलाल आदिने पायिनु ते मुख मोड़ो।
गीता अर्थ अनोखे सुनि कर स्वामी ते हित जोड़ो॥

***

नगर आगरे भई अवाई शहर सिमटि उठि धायो।
नित्यकर्म संध्या को पुस्तक स्वामी प्रथम छपायो॥
बहुतन कूं बतलाय योग विधि निज जय आलीपाई।
मूरति पूजा पोल खोल कर चितते दई हटाई॥
खण्डन लगे सम्प्रदायक मत झूंठ पुराण दिखाई।
अफीमारग बड़ो भागवत ताको गप्प बताई॥
कंठी तिलक छापको धारन शास्त्र विरुद्ध बतायो।
भागवत को गुंठन कर्ता बोपदेव ठहरायो॥
यह सुनि चकित भये बहु पण्डित स्वामीजी की बानी।
छिपी रही यह झूंठी लीला अब तक सांची जानी॥
भरी भागवत सब निन्दा सों गुप्त भेद प्रकटाये।
तामें ब्रह्मा आदि देवता पापी लिखे दिखाये॥
योगीराज कृष्ण भगवाना तिन्हें लम्पटी चोरा।
विषयी छली जार लूटरिया कहो भागवत घोरा॥
गुरू बृहस्पति चन्द्र देवता तिनको पाप लगायो।
बृन्दा की लिखि कथा घिनोनी विष्णुको जार बनायो॥
भये ऋषि मुनि ज्ञानी जेते अच्छे कहे न कोई।
बोपदेव की माया देखो रची भागवत सोई॥
कहे सुरापी शुक्र देवता मानुष मद्य खिचायो।
लिखो भागवत माहीं ऐसो स्वामी खोलि दिखायो॥
झूटी खोटी और असम्भव बहुतक बात बताई।
बोपदेवकी कृत्य भागवत ताहि न व्यास बनाई॥
मूरत पूजा तिलक भागवत दोनो दिये उड़ाई।
पाप जाल की नीव उखाड़ी दृष्टि कर लई लड़ाई॥

चेतो सबरो प्रान्त आगरा पड़ी खलबली भारी ।
भागवती झूंठे ठहराये ठग मठ मन्दिरपुजारी ॥
जीवत दाग देय चक्रान्ती घोर कर्म बतलाया ।
पांच सम्प्रदा धाममार्ग हू वेदविरुद्ध बताया ॥
लगभग वर्ष द्वेक रहि स्वामी नगर आगरे माई ।
पाखंडी दल तितर वितर करि धर्म की जीत कराई ॥
कैलासपर्वत नाम संन्यासी उन कछु दियो सहारा ।
विद्याबल के विना तासु को लोभ ने आय पछारा ॥
यह लखि स्वामी समर कियो अति पाखंडिन ते भारा ।
वैदिक धर्मध्वजा फहरानी बाजो विजय नगारा ॥
जीति आगरा गये धोलपुर फेरि ग्वालियर जाकर ।
वैदिकधर्म्म घोषणा कीनी निज उद्देश्य बताकर ॥
महातम्य सप्ताह भागवत महाराज पुछवाया ।
वेदविरुद्ध अनिष्टकारी है बुरा काम बतलाया ॥
महातम्य सप्ताह भागवत महाराजा पुछवाया ।
वेद विरुद्ध अनिष्ट कारी है बुरा काम बतलाया ॥
पावे कष्ट पुनि दुःख उठावे जो कोई वेद विरुद्ध करे ।
बुरे कर्म का फल खोटा है करनी भरनी अवश्य परे ॥
पुरश्चरण गायत्री कीजै स्वामी जी कह लाय दिया ।
पर हंसकर महाराज सेंधिया इनका कहना टाल दिया ॥
मंडप सम्पूरण लश्कर में सजधजके बनवाय दिये ।
पूना, काशी, नासिक तक के भागवती बुलवाय लिये ॥

छन्द

भागवत का करते खंडन गरज कर स्वामी तहां ।
विदुष लखिकर दंग होते सुनने आते जो वहां ॥
राजघर में ठहरना और बोलना उसके विपक्ष ।
तोड़ना संतव्य को ललकार के सब को समक्ष ॥

* * *

केवल सहारे धर्म के चहुं ओर यह आतंक था ।
सत्य भाषण शस्त्र कर तप बल अकेला संगथा ॥
लशकर सकल खलबल पड़ी थी धर्म के परताप की ।
भागवत ठण्डी पड़ी थी खाके चण्टी दाप की ॥

॥ छन्द ॥

जिहि की चित चिन्ता नाहि करे । विधि वा कहुं आनि अगार धरे ॥
निस जोनसी सप्ता समाप भई । तहं मंगल दुंदुभी बाज रही ॥
पुनि थोड़े ही काल के अन्तर में । बड़ शोक भयो अन्तःपुर में ॥
शर मास को गर्भ निपात भयो । सुन शोक सबै मन छाय गयो ॥

॥ चौपाई ॥

जिस निमित्त सप्ताह बिठाई । कथा भागवत की कहवाई ॥
ता महाराज कुमार अगारें । पण्डित आशीर्वाद उचारें ॥
जिन की दीर्घ आयु के काजे । अनुष्ठान बहुविधिके साजे ॥
हाय वही महाराज कुमारा । छांडि चले छिन में संसारा ॥
हाहाकार मचो रजधानी । राजा शोकित रोवति रानी ॥
नाहिसहाय भागवत कीनो । वृथादान भयो जोकुछ दीनो ॥
सदा भविष्यत प्रभु आधीना । परिव्योहार जगतरचिदीना ॥
यही विचार उठत मन माई । स्वामी कही भई सो आई ॥

॥ सोरठा ॥

याघटना को देखि वेद शास्त्र श्रद्धा बढ़ी ॥
विदुषकहें सबपेख अवशिभागवत नहिं भली ॥

॥ चौपाई ॥

शास्त्री ढूंढू और रावजी । उत्सक कियें न भई ताव जी ॥
नानाजी गोपाला चार्य्या । नासिक गये साथ ले भार्य्या ॥
स्वामी कछुदिन करि उपदेशा । पहुंचे जाय करोली देशा ॥
तहं नृपतिके संग धरमपर । वार्तालाप भयो नित डटिकर ॥
वेदालोचन करो दुवारा । स्वामी तिनको अर्थ विचारा ॥
छोड़ि करौली जैपुर आये । समाचार नंगर के पाये ॥

नन्दराम मोधी के बागा । निवसत भये सहित अनुरागा ॥
परमहंस गोपालानन्दा । लिखि भेजे कछु प्रश्न अनन्दा ॥
स्वामी उत्तर तुरत पठाये । संशय मन के सब बिनशाये ॥
समाधान पढ़ि करकें उनके । निकट शीघ्र आवसे जुतिनके ॥
निज शंका गोपालानन्दा । स्वामी संग करि भये अनन्दा ॥
निश्चय करि सब लई मिटाई । दयानन्द हितु करि बतलाई ॥
जीव ब्रह्म को जो कछु भेदा । समझायो प्रमाण दे वेदा ॥
जैपुर नगर भये विख्याता । स्वामी दयानन्द विज्ञाता ॥

॥ सोरठा ॥

अवधनाथ के शिष्य साधू लक्ष्मणनाथ जी ।
तिन्हें कियो परि तुष्य ब्रजनदजी के मन्दिरमें ॥

॥ छन्द ॥

जानि योगी मानि ज्ञानी स्वामीजी से यों कहा ।
ठहरिये एक मन्दिर में हमपर दया होगी महा ॥
आप होवेंगे सहायक मन में हमने ठट लिया ।
सम्प्रदायी पण्डितों से युद्ध करना बद लिया ॥

***

इसपे स्वामी जी ने कहा यदि मैं बुलाया जाउंगा ।
अपनी सम्मति को कहूंगा काम निज ठहराउंगा ॥
मूर्तिपूजा आदि सब का पूरा खण्डन कीजिये ।
आपको यदि यह रुचे तो फिर न चिन्ता कीजिये ॥

***

स्वामी जी ने व्याकरण के दश या बारह प्रश्न कर ।
संस्कृत की पाठशाला पण्डितों पर भेज कर ॥
पण्डितों का देखा उत्तर सभ्यता से दूर था ।
गाली गलोजों से सुशोभित धूर्तपन भरिपूर था ॥

***

देकर निमंत्रण स्वामीजी को महलों में बुलवालिया ।
सब पण्डितों से एक दम संवाद भी करवा दिया ॥
अन्त में सब हो निरुत्तर चुपके बन बैठे रहे ।
विज्ञ हैं स्वामीजी तगड़े व्यासजी लखते रहे ॥

॥ दोहा ॥

व्यास बख्शीराम ने जांचि लियो सब तत्व ।
जैपुर विद्या हीन है नाहि रहो कछु सत्व ॥

॥ चौपाई ॥

जैनजती थे जैपुर माहीं । शास्त्रार्थ उनि करनो चाहीं ।
परि यह अटक तासुने डारी । स्वामी आवे थली हमारी ॥
स्वामी जति प्रति प्रश्न पठाये । तिनके उत्तर कछू न आये ॥
आठ प्रश्न पुनि जती लिखाये । स्वामीपास तिन्हें भिजवाये ॥
स्वामी उत्तर शीघ्र लिखाये । शिष्य हाथजति निकट पठाये ॥
देखो जैपुर की पण्डिताई । विद्या जांच भली करि पाई ॥

॥ दोहा ॥

ठाकुर रणजीतसिंह जो आंचरूल सरदार ।
साधु प्रीति हिरदैं बसे शुद्ध तासु व्यवहार ॥
मानत राधा कृष्ण को धरत उन्हीं का ध्यान ॥
हमीरसिंह की तर्कने उपजायो मन ज्ञान ॥

॥ चौपाई ॥

पोल मूर्त्ति पूजा की पाई । युक्ति अपूर्व भली मन आई ॥
लागे कहन जायं किहि ठावें । सत् उपदेश जहां परपावें ॥
हीरासिंह कहा समझाई । स्वामी जी की महिमा गाई ॥
स्वामी दयानन्द एक आये । उनि जैपुर के विदुष हराये ॥
तिन्हसे परिचित मैं पहिलेसे । आपहु होयं प्रसन्न मिलेसे ॥
यह सुनि दर्शन कीने जाई । दूजे दिन दियो यान पठाई ॥
मानि निमन्त्रण स्वामी आये । ठाकुर साहबके मन भाये ॥
वार्त्तालाप जु करने लागे । संशय मन के सगरे भागे ।

मूरति पूजा को विश्वासा । चितते हटो रहो नहिं पासा ॥
ठाकुर साहब करो निवेदन । मेरे यहां विराजो भगवन् ॥
वसे चारि दिन महलन माहीं । लखो इकान्त न नैक तहां ही ॥
पुनि चलि बाग़ मझारे आये । तहां बहुत विद्यार्थी पाये ॥

॥ दोहा ॥

ठाकुर साहब प्रति दिवस, स्वामी जी के पास ॥
जाकर सुनते मनुस्मृति, हो तो चित्त हुलास ॥

॥ चौपाई ॥

कायथ कामदार इक उनको । हीरालाल नाम हो तिन्हको ॥
मांस मद्य का खाना पीना । सुनि उपदेश छोड़ि सब दीना ॥
उपनिषदादिक कथा सुनाकर । मूर्त्ति पूजा खण्डन कहकर ॥
परमात्मा का ध्यान बताते । मन में करो यही बतलाते ॥
भागवत खण्डन पत्र छपाया । वोपदेव कृत ताहि बताया ॥
भागवत कृष्णहि दोष लगाये । सो सबरे झूंठे ठहराये ॥

॥ छन्द ॥

परमात्मा का नाम शिव करत जगत् कल्याण ।
निराकार निर्लेप्य वह धरो तासु को ध्यान ॥
दृढ़ कराय मन में दियो पूरन ब्रह्म महेश ।
यह मत है वेदान्त को ताको करि उपदेश ॥

॥ चौपाई ॥

उन्हीं दिनों जैपुर महाराजा । जोरो वैष्णव शैव समाजा ॥
दोउनु को संवाद करायो । शैव जीति निज मार्ग चलायो ।
ता हित स्वामी जी बुलवाये । बैठि पालिकी महलनु आये ॥
राजेश्वर के मन्दिर माहीं । कर सत्कार बिठाय तहां हीं ॥
मूरति लखि नहिं सीस नवायो । वक्षीराम सोच मन छायो ॥
ताने समझि बहाने कीने । महाराज मिलने नहिं दीने ॥
स्वामी बगदि बाग में आये । अचल वृत्ति नहिं चित्त डुलाये ॥
वैष्णव मत को खण्डन कीना । मत शैवी कूं आश्रय दीना ॥

॥ दोहा ॥

रामसिंह महाराज ने ग्रहण किये मत शैव ।
वैष्णव वैभव छीन भो आय गयो दुर्दैव ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी चलि बगरू में आये। वहां ते दूदू बोलि पठाये ॥
ठाकुर इन्द्ररसिंह रईसा । सेवक बनि तिन लई असीसा ॥
फिरि चलि गए कृष्णगढ़ माई। पुनि अजमेर विराजे जाई।
संवत् उनइससे तेईसा । पुष्कर पहुंचे प्रभु वागीसा ॥
भले प्रकार ज्ञापना दीनी । मूरति पूजा खंडन कीनी ॥
ब्राह्मण शास्त्रार्थ को आये। सनमुख नाहिन डरने पाये ॥
तब व्यंकट शास्त्री पर जाई । निज गुहार उनते इन चाई ॥
वे नहिं स्वामी सनमुख आये। उनके भेद सकल इन पाये ॥
स्वामी स्वयं जाय तिहि पासा। प्रफुलित मन कियो शास्त्र विलास
तीन चार सौ के अनुमाना। भये उपस्थित ब्राह्मण नाना ॥
प्रथम भागवत विषय चलायो। मंडन व्यङ्कट ने अपनायो ॥
स्वामी खण्डन ऐसो कीनो । व्यंकट उत्तर नाहिन दीनो ॥
फेरि व्याकरण विषय उठायो। स्वामी कथन सत्य ठहरायो॥
आगे दुर्गा विषय चलाई। बात चीत करि रहे सिराई ॥

॥ दोहा ॥

व्यंकट शास्त्री ने कही सुनो विप्र महाराज ।
ढोल पोल खोली सबे दयानन्द ने आज ॥
सम्प्रदाय मत ना चले मानि लेउ मम बैन ॥
मूरति पूजा में कछू तत्त्व रहो अब हैन ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी जी से बचन उचारे । यहां अघोरी गुरू हमारे ॥
उन के दर्शन अवशिहि कीजै। इतनो कहो मानि मम लीजै ॥
स्वामी जी मन यही विचारे। व्यंकट शास्त्री संग पधारे ॥
साधू जाय अघोरी देखे । विदुष महाविद्या में पेखे ॥

बात चीत करि कही अघोरी । ब्राह्मण जात भई मति भोरी ॥
स्वामी सत्य कहत सब बाता । वेद शास्त्र के पूरण ज्ञाता ॥
दयानन्द जो कहैं सो मानो । इन्हें चमत्कृत आत्मा जानो ॥
ईश्वर एक ब्रह्म अविनाशी । अज अव्यय सब घट घट वासी ॥
ताकी मूरति पूजा थापी । तुम हो सब वे पूरन पापी ॥
दयानन्द ने पोल उघारी । माया चले न जगत् तुम्हारी ॥
ब्रह्मा मन्दिर स्वामी आये । विज्ञापन सब नगर लगाये ॥
मूरति पूजा और पुराना । कंठी तिलक उतार धराना ॥
पड़ी खलबली नगर मझारी । विप्र गये व्यंकटहि अजारी ॥
तबहू कहो यही समझाई । स्वामी सत्य कहत हैं भाई ॥
निर्भय रहत न कबहु हिचकते । स्वामी सत्य कहत नहि रुकते ॥
ब्रह्मा को एक यहां पुजारी । पूजा छोड़ि भयो ब्रह्मचारी ॥
सच्चा ईश्वर ताहि बतायो । गायत्री का जाप जपायो ॥
दियो विरक्तनु कूं उपदेशा । सत्य प्रचारो चारों देशा ॥
सम्प्रदाय रामानुज वाले । तिन्हहि लाय दाग दिये लाले ॥
व्रत, तप नियम शरीर तपावैं । विषय रोकि मन जपहि लगावैं॥
तब सुख मानुष को कछु होई । अतम तनु जग मानो खोई ॥
देहदग्ध करि छाप लगावैं । खोतो भले विचार कहावैं ॥
चन्द्रघाट पर एक द्राविड़ी । संन्यासी बनि करत गड़बड़ी ॥
कथा पुराननु की कहवावे । पीछे ब्राह्मण भोज करावे ॥
शास्त्रार्थ करने हित जावों । स्वामी कही जाय यह तावों ॥
कहा मूर्खता तैं फैलाई । ब्राह्मण भिक्षुक दिये बनाई ॥
भयो पलायन सुनि धधकारा । आगा पीछा नाहि सम्हारा ॥
पुष्कर वेदध्वजा फहराई । दीने मत पाखण्ड उड़ाई ॥

॥ दोहा ॥

स्वामी जी ने मन कियो माड़वाड़ हम जायं ।
वकील जोधपुर ने करी यही प्रार्थना आय ॥

॥ चौपाई ॥

मनुष एक जैपुर ते आयो । सो अचरोल रईस पठायो ॥
करो निवेदन पत्र गहायो । तामें समाचार यह पायो ॥
श्री हुजूर आगरे निकेला । बड़े लाट के मिलने हेता ॥
वृन्दावन है निकट तहांते । आवे रंगाचार्य्य वहांते ॥
जो यहुं शास्त्रार्थ छुटि जावे । पक्षतामुक्तो कौन गिरावे ॥
चाहित कही श्री महाराजा । आप पधारें सुधरे काजा ॥
यह आज्ञा मेरे को दीनी । जाकारज प्रभु विनती कीनी ॥
दास जानि अंगीकृत कीजै । यह वरदान मोहि प्रभु दीजै ॥

॥ सोरठा ॥

पत्र निवेदन हेरि पुष्कर तजि स्वामी चले ।
बगदि बसे अजमेर माड़घाड़ ते और सुख ॥

॥ दोहा ॥

वंशीलाल के बाग में स्वामी ठहरे आय ।
विज्ञापन लिखवाय के नगर दिये लगवाय ॥
प्रतिमा खण्डन आदि पर जो शङ्का कछु होय ॥
शास्त्रार्थ करि लेय सो सनमुख आकर कोय ॥

॥ चौपाई ॥

मतवादी नहिं सनमुख आये । परि द्वै लिखे प्रश्न भिजवायें ॥
अधिक तीन दिन ते संन्यासी । होय न काहू ग्राम प्रवासी ॥
घोड़ा गाड़ी आदि सवारी । चढ़िवे को नाहिन अधिकारी ॥
स्वामी हुंखि उत्तर लिख वाये । तुरत पास उन के भिजवाये ॥
युक्तिपूर्वक शास्त्र प्रमाणा । पुनि इतिहास लिखाये नाना ॥
अन्धकार फैलो जो देखे । धर्म माहिं व्यवस्था कछु पेखे ॥
तहं उपदेश करन के ताईं । बसे अधिक दिन चिन्ता नाईं ॥
पत्र माहिं जो भरी अशुद्धी । तिनहू को लिखि करो प्रसिद्धी ॥

॥ दोहा ॥

ग्रे, रोविन्सन पादरी शूलब्रैड संग तास
संभाषण करते रहें स्वामी जी के पास ॥

॥ चौपाई ॥

ईश्वर, जीव, सृष्टि और वेदा । विषय चलाय प्रकाशो खेदा ॥
समाधान स्वामी जी कीनो । विद्यापूर्वक उत्तर दीनो ॥
पादरी साहब स्वामी संगा । तीन दिना तक रहो प्रसंगा ॥
ईसा को ईश्वर कहने की । मृत्यु भये फिर जी उठने की ॥
स्वामी चौथे दिन यह पूछी । उत्तर बनो न रहि गई छूछी ॥
बड़े पादरी रोविन्सन से । स्वामी मिले जाय घर उन से ॥
स्वामी जी से कियो विचारा । ब्रह्माजी को कहि व्यभिचारा ॥
कहो पादरी से यह बाता । आप विशारद हैं विज्ञाता ॥
ब्रह्मा नाम अनेकनु पायो । कौन हृदय यह पाप समायो ॥
परि महर्षि ब्रह्मा नहिं ऐसे । आप बताये खोटे जैसे ॥
भये प्रसन्न पादरी साहब । साक्षीपत्र दियो लिखि पाठव ॥
बांचो पाठक करो विचारा । स्वामी जगत भये अवतारा ॥

॥ छन्द ॥

स्वामी दयानन्द वेदों के, प्रसिद्ध एक विज्ञानी है ।
संस्कृतज्ञ न देखा ऐसा हमरी आयु सिरानी है ॥
ऐसे मनुज होत कम जग में, जो इनसे मिल पावेगा ।
औ इनका सनमान करे वह बहुत ही लाभ उठावेगा ॥

॥ छन्द ॥

मेजर ए० जी० डेवीसन से स्वामी मिले एक दिन जाय ।
कमिश्नर साहब हैं अजमिरके जिन सों कहीं बात समझाय ॥
राजा पिता प्रजा को मानो प्रजा पुत्र के कहो समान ।
खोटो कर्म पुत्र को देखे पिता देय ताको विज्ञान ॥
धर्म राज भारत में तुम्हरो परि इक रहो अंधेरो छाय ।
प्रजा तुम्हारी को मतवादी लूटि लूटि के रहे जु खाय ॥

करो प्रबन्ध तासु को साहब भारत गारत हो तो जाय ।
उत्तर साहब ने यह दीना सो सुनि लीजो कान लगाय ।
विषय धर्म सम्बन्धी स्वामी यामें हाथ न डारो जाय ।
मता मतान्तर के रगड़े को गवर्नमेंट राखो बिलगाय ॥
खास बात होवे जो कोऊ सो हमको दीजै बतलाय ।
लाभ काम अपने को त्यागें करें आप की तुरत सहाय ॥
छोटेकमिश्नर रैप्टिन साहब तिन सों मिले एक दिन जाय ।
धर्म थापना विषयक वार्ता स्वामी करी खूब समझाय ॥
करनल ब्रूक एजंट गवरनर जनरल भये बड़े विख्यात ।
भगवें कपड़ों से चिड़ते थे तिनको स्वामी जी मिलि जात ॥
आय कही स्वामी सूं बहुतन कुरसी लीजै आप हटाय ।
स्वामी और अगाड़ी बढ़कर चौकी अपनी लई धराय ॥
यह लखि लोग लगे घबराने स्वामी करी नाहिं परवाय ।
ताजी यादि जानिकर रगड़ा स्वामी टहलन को लगिजाय ॥
साहब आनि उतारी टोपी हाथ मिलाया स्वामी साथ ।
कुरसी डार सामने बैठे स्वामी से पूछी कुशलात ॥
फिर मन लेकर स्वामी पूछी साहब सुनो हमारी बात ।
धर्म थापना आप करत हैं अथवा खंडन तुम्हें सुहात ॥
साहब कही सुनो स्वामी जी धर्म थापना नोको काम ।
जा विधि लाभ होय सो करनो झगड़ेको नहिं लेते नाम ॥
चेत कराया स्वामी जी ने गौ मार खाने से हानि ।
विना तर्क एजंट गवरनर हानि कारक लीना मानि ॥
मिले आप कलि घर पर मेरे, वहां करेंगे वार्त्तालाप ।
दूजे दिन गाड़ी भिजवाई साहब निज की अपने आप ॥
जोषी रामस्वरूप साथ ले स्वामी झुलमे बंगले जाय ।
गोरक्षा पर दई विवस्था घण्टा पौन तहां लगि जाय ॥

॥ छन्द ॥

गोरक्षा से लाभ, हानि हत्या में साहब मान लिया ।
यदि मेरा अधिकार नहीं है पीछे यों समझाय दिया ॥

चिट्ठी में अपनी देता हूं लाटि साहब से आप मिले।
इस चिट्ठी को जो देखेंगे वही आप से अवश्य मिले॥

॥ छन्द ॥

महाराज जैपुर के लाटें साहब ने एक पत्र लिखा।
अच्छा वेद संस्कृत पंडित स्वामी जी को दिया दिखा॥
पढ़ा पत्र महाराजा जैपुर पछतावा तिन्ह कियो महा।
आपरोल के ठाकुर साहब बुलवाये सब हाल कहा॥
अभिलाषा स्वामी मिलने की प्रकट करी महाराज तबै।
काहू विधि दर्शन करि पाऊं सुधरें मेरे काज सबै॥
वेगि पठाय देउ धामिन को स्वामी जी जैपुर आ जाय।
देर न होवे वेर न लागे जल्दी लीजै उन्हें बुलाय॥

***

स्वामी मिलि साहब से बगदे पहुंचे अपने बाग मंझार।
तहां युवा आये द्वै तपसी काले वर्ण पुष्ट आकार॥
योग विषय की चर्चा करके अपने लिये शान्ति ठहराय।
स्वामी जी हंसि करि यों बोले अहंकार तुम जीतो नाय॥
फिर दोनों तपसी उठि बोले हां, हम जीतो है हंकार।
साधन साथ ब्रह्मचारी से बाहिर जाय अड़े तकरार॥
मल्ल युद्ध तीनों में हुए गयो देखन वालेनु दये छुड़ाय।
अपने पास बुला स्वामी ने संस्कृत माहिं दयो समझाय॥

***

मांगी क्षमा कही नारायण तपसी दोनों वन को जाय।
अहंकार को कठिन जीतनो स्वामी जी ने दियो दिखाय॥
उन्हीं दिनों महंत इक आये रामसनेही नगर मझार।
स्वामी जी ने कहला भेजा शास्त्रार्थ को होय तयार॥

॥ छन्द ॥

हम गद्दी से उठते नहिं दूजे के आसन जाय।
राम राम जपि रोटी खावें शास्त्रार्थ को जानत नाय॥
पत्र पठायो स्वामी जी ने उत्तर मिलो कछू है नाहिं।
दूजे दिना पलायन ह्वे गये नाहिन मिले शहर के माहिं॥

हरिश्चन्द्र दिहली के पण्डित तिनके गुरूभाई ने आय ।
मनुस्मृति अरु उपनिषदों पर चर्चा दीनो घड़ो बढ़ाय ॥
सुनि संवाद मगन ह्वै पंडित, स्वामी को कीनो सतकार ।
करि आतिथ्य कहन यह लागे स्वामी लियो शंभु अवतार ॥

॥ छन्द ॥

कण्ठी तुड़वायकैं तिलक पुछवाय डारे ।
वेदनुको पंथ तिन्हैं दीनो है बतायकैं ॥
कीनी छेड़ छाड़ कछु जैनिमतवादिनु ने ।
पीछे रहे बैठि सिर अपनो नवायकैं ॥
खावर के ठाकुर, स्वामी उपदेश सुनि ।
बहुत लई बातें मन अपने दृढ़ायकैं ॥
वृद्ध ब्रह्मचारी खेत बार भये मोहन के ।
स्वामी संग बातें करैं संस्कृत में आयकैं ॥

॥ छन्द ॥

किशनगढ़ते द्वै भक्त आय । अजमेरते जु चले लिवाय ॥
उपदेश करातो तहां जाय । बल्लभकुल की जो सम्प्रदाय ॥
खंडनकीनो तिनको अघाय । नृपति सुनकैं गये रिसाय ॥
थे बल्लभीय तहं के भुवाल । उनि भेजिकैं ठाकुर गुपाल ॥
संग बहुत पण्डित ले लिये । तहं हुल्लड़ मचाने के लिये ॥
स्वामी समझ कर हेतुको । वार्ता निमित्त सचेत हो ॥

॥ दोहा ॥

स्वामी बैठे तखत पर निकट दूसरे लोग ।
कारन पूछो उनहि सों कहिये हमारे जोग ॥
उनसें वें एक विदुषने कछू पत्र ले हाथ ।
बल्लभ मत सबसें भलो कहि समझाई बात ॥
स्वामीजी खंडन कियो दिये अनेक प्रमान ।
कछुउत्तर नहि देसके गिरो पक्ष निज जान ॥
हल्ला देकर हो खड़े बकन लगे चहुं ओर ।
स्वामीकी ललकारसुनि चलि दीने तजि ठौर ॥

॥ चौपाई ॥

इतने में बहुतक श्रीमाली । ब्राह्मण आयगये तत्काली ॥
पूछो आय तिन्हनु सब बाता । स्वामी हंसे कही कुशलाता ॥
शास्त्रार्थ करने को आये । हारत हुल्लड़ तौन मचाये ॥
जैसे संभाषण में भागे । तैसोहि शास्त्रार्थ मम आगे ॥
ठाकुर साहब दूदूवारे । तिनके स्वामी आय पधारे ॥
तीनदिवस करि तहां निवासा । एकरैनि बगरू कियो वासा ॥
फिरि जैपुर में पहुंचे जाई । अचरोल ठाकुर खबरि कराई ॥
स्वामीजी पुष्कर ते आये । समचार महाराजा पाये ॥
बच्चीराम पठाये व्यासा । पहुंचे स्वामी जी के पासा ॥
व्यास कही महाराज पठायो । वही निवेदन करने आयो ॥
महलन चलें कृपा अस कीजे । महाराज को दर्शन दीजे ॥
स्वामी कही सुनो इक बाता । भले प्रकार आप विज्ञाता ॥

॥ दोहा ॥

महाराज सें मिलन की नहिं इच्छा कछु मोय ।
संभाषण के सुनन की उनको वांछा होय ॥
किसी समय कछु कालको यहीं विराजैं आय ।
महाराज सें व्यासजी कहि दीजे समझाय ॥

॥ चौपाई ॥

व्यास कही महलोंमें जाकर । स्वामीका मन्तव्य जताकर २
यह सुनि रामसिंह महाराजा । रघुसिंहको सहित समाजा ॥
तुरतहि स्वामी निकट खदाये । विनती करि महलन बुलवाये ॥
मन्दिर मोज विराजे जाई । पण्डितराज मिले तहं आई ॥
दैवयोग महाराज सवाई । महलन मांझ विराजे जाई ॥
ड्योढ़िनते चेला इक आया । समाचार यह आन सुनाया ॥
श्री हजूरको महलन जोगा । उनका आना अभी न होगा ॥
स्वामी सहित समाज सिधारे । फिर न कबहु नृप गेह पधारे ॥
नरपति बहुतक जतन कराये । स्वामीजीके मन नहिं भाये ॥
ठहरे आधे आश्विन ताई । परि न गये महलनु के माई ॥

चाहत हरिद्वार को जाना । जैपुर ते करि दियो पयाना ॥
अरगलपुर को भये रवाने । रनजीतसिंह बहुत घबराने ॥
कामदार गद गद करि बानी । चरन गहे नयनु भरि पानी ॥
रहस कही स्वामीजी बाता । रहो प्रसन्न सहित कुशलाता ॥
रोदन हित उपदेश न कीनो । किन्तु हंसन को मारग दीनो ॥
निज अधिपति की कीजे सेवा । एक ईस को मानो देवा ॥

॥ दोहा ॥

उनइस से तेईस को विक्रम संवत् जान ।
तिथि नवमी कार्तिक बदी इकम नोम्बर मानि ॥

॥ चौपाई ॥

जैपुर ते अर्गलपुर आये । समाचार उत्तम यह पाये ।
वायसराय करें दरबारा । तिन्ह ते मिलें सकल सरदारा ॥
यह समयो उत्तम अति जानो । धर्म प्रचार हेतु मनमानो ।
छोटी सी पुस्तक छपवाई । वोपदेव लीला दर्शाई ॥
समस भागवत खण्डन कीनी । कई हजार बांटि प्रति दीनी ॥
शेष रही सो साथ बंधाई । हरिद्वार की सुरति लगाई ॥
मथुरा गुरु के धामें आये । पांच छात्र अपने संग लाये ॥
गुरुदेव के दर्शन हेता । विरजानन्द के गये निकेता ॥

॥ दोहा ॥

स्वर्णमुद्रिका द्वे सहित मलमल को इक थान ।
स्वामी जी ने भेट धरि कियों गुरू सन्मान ॥

॥ छन्द ॥

निज लिखी पुस्तक दिखाई, गत कथा सारी सुनाई ।
किशनगढ़ अजमेर पुष्कर, हाल जैपुर का सुनाकर ॥
ग्वालियर का वृत्त सारा, जिस तरह कीया प्रचारा ।
धर्म वैदिक की मनादी, जिस तरह की थी सुनादी ॥

॥ छन्द ॥

यही विनती हमारी है, किन्तु इच्छा तुम्हारी है।
मायापुर में जाऊंगा, धर्म झण्डा बधाऊंगा॥

॥ दोहा ॥

स्वर्णमुद्रिका द्वै सहित अलअल को एक थान।
स्वामी जी ने भेट धरि कियो गुरू सनमान॥

॥ रोला ॥

स्वामी जी ने पूछि बहुतसी बातें लीनी।
सत्य शास्त्र के माहि आप जो अनुभव कीनी॥
कछुदिन मथुरा ठहरि सुने सिद्धान्त मुनी के।
दृढ निज कियो विचार धारि मंतव्य गुनी के॥
अन्तिम यही मिलाप गुरू से स्वामी कीनो।
मथुरा दीनी त्यागि मार्ग मेरठि को लीनो॥
पण्डित गंगाराम मिले इक तहां रईसा।
देवी मन्दिर जाय वसे स्वामी वागीसा॥
गोरक्षा के हेतु वेद पढ़ने के ताईं।
करत रहत उपदेश राखि मनरुचि अधिकाईं॥
पण्डित गंगाराम एक दिन पूछन लागे।
धातू सेवन किये काम अति आतुर जागे॥
कृष्ण अभ्रक एक तिन्हे पुरिया दे दीनी।
काम समनकी युक्ति यथारथ सब कहिदीनी॥
दयानन्द इकदिवस प्रात उठ चले सवारे॥
मेरठ तजो प्रवास और हरिद्वार पधारे।

✡*✡

स्वामी निश्चय कियो तासुको भेद बताऊं।
जो कछु अनुभव करो आजतक ताहि लखाऊं॥
ऋषि आचरण विहाय जोनसी प्रथा चली है।
सो सब वेद विरुद्ध तनकहू नाहिं भली है॥
कंठी माला तिलक छाप अवतार मानिवो।
वैष्णवादि मतभेद मूर्तिपूजा प्रमानिवो॥

शंख चक्र ते दग्ध देह करि आश्रय देनो ।
वाममार्ग ते मुक्ति काव्य पढ़ि सुगंहि लेनो ॥
राम, कृष्ण के नाम जाप करि भवनिधि तरनो ।
तीरथ में करि वास व्रतों से पश्प कतरनो ॥
ये ओरहु बहु पंथ पुरानन में लिखि राखे ।
खंडन के हित काज छांटि स्वामी जो राखे ॥

॥ छन्द ॥

चोलीमारग वीजमार्गपुनि गंगा आदिनदीजै ।
सत्यसनातनधर्म न एको नाहिन इन्हें पतीजे ॥
संवत् उनइस से तेइस का फागुन अन्त महीना ।
उक्तकहीबातोंकाअनुभव स्वामीजीकरिलीना ॥

॥ आल्हा ॥

हरद्वार को ब्यौरा सुनि लेऊ जो कछु कथो पुराननुमाहिं ।
सात पुरी तिन में तीजी है स्वर्गद्वार हिन्दू कहैं ताहिं ॥
लिखो महातम जहां तहां पर कविता करी बड़ी सबठौर ।
कालिदास कवि मेघदूत में अनुपम छटा कही सिरमौर ॥
एक बात हम सांची कहिदें प्रकृति बनायो उत्तम थान ।
दोनों दृश्य अपूरब दीखें उत्तर गिर दखिन मैदान ॥
गंगा फारि पहाड़नु निकली धरनी माहिं विराजी आय ।
तहां नहाने को फल मानो जो पोथिनु में दियो लिखाय ॥

* * *

दोनों ओरें पर्वतश्रेणी दुगुनी शोभा दई बनाय ।
दोनो और सुगन्धि मिल गई खोली नहर तहांते आय ॥
सृष्टि विचित्र जु अद्भुत दीखे जो कोई मानुष करे विचार ।
ध्यानावस्थित मन हो जाना सूझन लगे जगत करतार ॥

* * *

एसे सुन्दर योगस्थल में मेला कुम्भ लगायो जाय ।
बारहवर्ष वीतिजाय जबही जमघट जुरे बड़ो तहां आय ॥
गंगान्हाय मुक्ति को माने आवें लाखन हिन्दू लोग ।
बहुतक साधू एसे आवें जो दिखलावें राजस भोग ॥

* * *

सुनो कहूं मेला की बातें भारी हो समागम आय।
देश दिशान्तर के मतवादी अड्डा अपनो देयं जमाय॥
विद्यानिपुण दयानन्द स्वामी हरिद्वार की सुरति लगाय।
अष्टादश सत सड़सठि ऊपर बारह मारच पहुंचा जाय॥

***

हृषीकेश मारग के ऊपर बाड़ो दियो एक बन वाय।
आठ, दशक छप्पर डरवाये निज के साथी दिये टिकाय॥
सप्त श्रोत के निकट जाय करि अपने डेरे दिये लगाय।
पाखंडखंडनी गढ़ी पताका सो आकाश रही फहराय॥

***

भारत में जेते मत फैले प्रतिनिधि सबके रहे विराज।
अपनी अपनी करें बड़ाई जुरि मिल बैठें जोरि समाज॥
भला बुरा कहि करें लड़ाई झूंठा अपना पक्ष उठाय।
शैव वैष्णव आपापंथी इकदूजे को दोष लगाय॥

***

पुरुषसूक्त की एक ऋचा है जामें वर्णभेद व्याख्यान।
ताको अर्थ विशुद्धानद ने जाती उतपति कियो बखान॥
यह सुनि स्वामी खंडन कीनो दियो निरुक्ती का परमान।
उतपति विषय नाहि कछु यामें उपमा उपमेय कहे समान॥

***

विशुद्धानद जी काशी वाले तिनते लड़े गुसाईं जाय।
गुसाइयोंने नालशि करिदई दयानन्द सों चही सहाय॥
स्वामीने उत्तर देदीना हम झगड़े में परिहैं नाय।
झगड़े झूंठे तुमने ठाने सतमारग को दियो गमाय॥

***

कैलास पर्वत तहां उपस्थित स्वामी तिन्हें कही समझाय।
मतिपै परदा सबकी परि गयो तुमहू नाहिं देत चेताय॥
वैदिक मारग को मिलि थापो जाते टंटे सब मिटि जाय।
आवश्यक ये बातें नाहें काहे धर्म्म दियो बिछुटाय॥

***

गृहस्थ, साधु, संन्यासी, पंडित, स्वामी पास झलूमें आय ।
सुनि उपदेश अचंभे करते जरि मिलि आपुस में बतराय ॥
पड़ी खलबली सब मेला में पौराणिक मत दिया हिलाय ।
सबके चर्चा दयानन्द की संशय गयो कलेजा छाय ॥

***

सांप कलेजा पे लोटा हो पंडा हाथ मोड़ि पछतायं ।
राज फिरंगिनु को छायो है नातर देते मजा चखाय ॥
कलजुग आय गयो भारत में हिन्दू धर्म्म लोप है जाय ।
दयानन्द ने आफत ढाई दई जीविका सबै नसाय ॥

***

भेद खोलि दये कपट जाल के धर्म सनातन दयो बताय ।
वेद अर्थ करि सबकी काटे जो कोई कहता बात बनाय ॥
पौराणिक मत झूंठो करि दिये पंडित नाहि कोऊ ठहराय ।
भंडा फूट गयो मूरति को दीने पंथ सबै दुरियाय ॥

***

इक दिन पंजाबी इक आये बातें करीं संस्कृत माहिं ।
ऊहापोह करी दो घंटा पाछें उत्तर दीनो नाहिं ॥
बहुत भांति के मानुष आवें तिनकी गिनती करी न जाय ।
मुखियन की नामावलि सुनि लेऊ श्रोता अपनो चित्त लगाय ॥

***

आतमस्वरूप अमृतसर वाले पंडित स्यामसिंह महाराज ।
अमीरसिंह जी संत निर्मला पंडित वस्तिराम दुजराज ॥
स्वामी महानन्द सरस्वती दादूपंथ बड़े विद्वान ।
रत्नगिरी देवेंद्र सरस्वती जिनको बहुत बड़ो विज्ञान ॥

***

परजा आये दर्शन काजै जो कछु भेट धरे पकवान ।
संध्या समय बांटि सब देते जुरें कंगला बे परमान ॥
दस दिन पीछे तक मेला ते निर्भय खंडन कियो महान ।
पौराणिक मत झूंठो करि दयो उपनिषदों का करा बखान ॥

***

लाखन हिन्दुन को जमघट हो तीरथ बड़ो यहीं हरिद्वार ।
तहां प्रतापी दयानन्द बिन दूजो डटतो नाहिं अगार ॥
वर्ष हज़ारनु ते फैले हैं पाखंड जाल देश के माहिं ।
छू निशङ्क काटने लागे हिम्मत बड़ी तनक भय नाहिं ॥

* * *

पाठक चित्र खेंच कें देखो वा समये को करि अनुमान ।
जानि अकेलो स्वामी जी को हिन्दू दीखत बेपरमान ॥
सत्यज्ञान की नाद गूंजि रही ध्वनि पूरित चहुं दिश छ्वै जाय ।
मूरति पूजा तरपट ह्वै गई परो भागवत हू बिललाय ॥

* * *

ब्रह्मवाक्य वेद की आज्ञा नभ बानी सम रही पुकार ।
हिन्दू मत भ्रम भरो जगत् में भारत डूबत ताहि मझार ॥
पाखण्ड जाल छोड़ि सब लीला मारग वेद गहो अब आय ।
वेद रूप अमृत को पीवो जाते पाप सबै नशि जाय ॥

* * *

स्वामी आये परमधामते शंकर लीनो है अवतार ।
पौराणिक मत करो खोखलो आज्ञा भई जगत करतार ॥
लाखन पुरुष दयानन्द जी को सुनि उपदेश सिहाते जाय ।
धर्म सनातन की जागृति भई आपापन्थ सबै दुरि जाय ॥

* * *

देश अधोगति को पहुंचा है ताको करने लगे विचार ॥
पाठक वृन्द सुनो चित दैके सांची विनती करूं अगार ॥
नाहिन देखो इतनो जमघट पहिले स्वामी जी महाराज ।
पण्डित साधु संन्यासी नागा जैतो लखो समागम आज ॥

* * *

बैरागिन की जुगी मण्डली दसनामिनु की नाहिं सुमार ।
दादूपन्थी और निर्मला गद्दी डालि करें दर्बार ॥
परि कलिजुग के चेला सबरे पातिक करि रहे महा अपार ।
भोग बिलासी पूरे पापी त्यागी नाममात्र अनुसार ॥

* * *

जिनको धर्म सुधार करन को सो भारत को रहे डुबाय।
भगवे बाने को लज्जित करि अपने वैभव रहे दिखाय॥
मन्त्र कलियुगी साधन करिकें भोग योग कों दियो मिलाय।
नाम मात्र के त्यागी दीखें अपने मतलब रहे बनाय॥

***

कान काटते ग्रहवासिन के तिरिया संग लई विरमाय।
विभचारी पूरे बनि बैठे खाते मदिरा मांस अघाय॥
वासी चोली बीज मार्ग के साधन करते नाहिं लजाय।
अहं ब्रह्म ईश्वर बनि करिकें सत्य मार्ग को दियो भुलाय॥

***

हाथी, घोड़ा, डेरा, तम्बू, झूलें ज़रदोजी सजवाय।
कंगन कड़े सुनहरी पहिरें तकिया मखमल रहे लगाय॥
पीकदान सोने चांदी के तिनको वर्णन करो न जाय।
स्याही सवारी सजि धजि निकलें मेला माहिं धूम परि जाय॥

***

यही हाल है बैरागिन के उनकी कथा कही ना जाय।
फटकेबाजी में दिन बीते सुलफा गांझा रहे उड़ाय॥
आगि अगीठा आगें धरि लयो फूंकें द्रव्य पराई लाय।
काला अक्षर भैंस बराबर नहिं भोजते काम सिवाय॥

***

धर्म कर्म ते सूने सबरे विद्या बुद्धि तनकहू नाहिं।
संगति विदुषन की नहिं भावे अंधे रहें नशा के माहिं॥
सण्डों मुसटण्डों के चेले मिथ्या महिमा चहें अपार।
भारत के राजा महाराजा अन्धी अक्कलि के सरदार॥

***

अर्पण तन मन धन करि दीनों लिये गुसाईं गुरू बनाय।
विषयासक्त अफीमी पूरे कारबार कछु जानत नाय॥
भीरु आलसी अबूझ कोरे करते कामदार सब काज।
ज्ञानवान की क़दरि न तिनकें ऐसे भारत में महाराज॥

***

धर्म अवस्था देखि भयानक स्वामी दयानन्द पछिताय ।
दुर्गति हो रही आर्य्यजाति की सो कथिवे में आवे नाय ॥
जब तक मेला रहो कुंभ को मन को जोश सिरानो नाय ।
समय पिछारी को सुमिरन करि जियरा गयो सनाके खाय ॥

***

ऋषि सन्तान मुनिनु के जाये व्यास कपिल की जे औलाद ।
सच्चे ईश्वर के सेवक हैं मूरति पूजि भये बर्बाद ॥
रवि शशि वंशज जे क्षत्रिय हैं मनु औ पुरूरवा की जाति ।
मुसलमान ईसाई ह्वै गये स्वामी तिन्हें देखि बिलखात ॥

॥ छन्द ॥

दयानन्द सरस्वती दयानिधि करुणा करिकें कमरि कसी ।
भारत की दुर्दशा मिटाने उमंहि लालसा चित्त बसी ॥
दिव्य दृष्टि बारीक नज़र ने निश्चय यही कराय दिया ।
मति औरों की भांति पड़ा रहु परमब्रह्म ने हुकम दिया ॥

***

परमेश्वर ने आंखें दीनी सत्य धर्म परकाश किया ।
उठो खड़े हो करो मुनादी जैसा तुम को ज्ञान दिया ॥
सोते हैं सब इन्हें जगादो हिम्मत बांधो कमरि कसो ।
करो सहाय अविद्वानों की मृत्यु जीति निज धाम बसो ॥

***

॥ छन्द ॥

परमात्मा ने चिता दिया था । वेद मारग बता दिया था ॥
महान आत्मा पठा दिया था । धर्म का बल बढ़ा दिया था ॥
धरमरूप भानू उदय कर दिया । पाखंड जिससे जला दिया था ॥
योगी तपी सर्व विद्या का ज्ञाता । रहबर हमारी बना दिया था ॥
रोगी था भारत धरम छीनता से । चिकित्साका बीड़ा खिला दियाथा ॥
दया और आनन्द दोनों मिलाकर । इकनाम पूरा बना दिया था ॥
स्वामीदयानन्द सरस्वतीकोसाहब । निजशक्तिजलवा अताकियाथा
मतान्तरोंका जो पर्दा पड़ा था । स्वामीके हाथों उठा दिया था ॥
कुकर्मों में ससार फंस जो रहाथा । महर्षिने फंदाछुड़ा दिया था ॥
परोपकारीने घरघरमें जाकर । सोते हुओं को जगा दिया था ॥

॥ सोरठा ॥

भवनिधि तारन हेत दयानन्द जग अवतरे ।
भयो हृदय यह चेत पाप जाल जरिहैं सकल ॥

॥ रोला ॥

दयानन्द धरि ध्यान ज्ञान के नयन उघारे ।
सब विद्या सत शास्त्र देखि मन माहिं विचारे ।
परकारज के हेत संत जन जग में आवें ।
ग्लानि धर्म की मेटि धाम अपने को जावें ॥
यह अनुभव जब भयो दई तजि सकल सम्पदा ।
दृढ़ करि बांधि लंगोट धर्म हित सही आपदा ॥
भस्म रमाई अंग चले अवधूत मूर्त्ति बन ।
वस्त्र ग्रन्थ धन बांटि भये निर्द्वन्द अभय मन ॥
महाभाष्य व्याकरण थान इक मल मल लेकर ।
गुरु पर दियो पठाय एक मानुष को देकर ॥
डेरा दिये उखाड़ मार्ग गंगातट लीना ।
लोगन पूछा हेतु सरल उत्तर यह दीना ॥
कहना चाहत सत्य हमनु यह ठानि लिया है ।
सो बेखटकें हुयें निभे नहिं जानलिया है ॥
आवश्यकता नाहिं आपनी न्यून करेंगे ।
कार्य्यसफलता प्राप्तहोय नहिं वृथा फिरेंगे ॥
हृषिकेश की ओर गये स्वामी जी पहिले ।
कछु दिन रहि ता धाम चले दक्षिण की गैले ॥
मन निश्चय कर लिया धर्म उपदेश करूंगा ।
विद्या वेद प्रचार और नहिं चित्त धरूंगा ॥

इति चतुर्थ मयूखः

अथ पंचम मयूख:

॥ छन्द ॥

हरिद्वार कनखल होकरके गये लंढोरा माईं ।
बाड़ी पर बैंगन फल खाये क्षुधा निवृत्ति के ताईं ॥
आगें जाय तालशुक पहुंचे जहां शुक कथा सुनाई ।
नृपति परीक्षित के तारन को ज्ञानबुद्धि उपजाई ॥
नगर परीक्षितगढ़ मीरांपुर गढ़मुक्तेश्वर आये ।
वाणी देव संस्कृत भाषा बोलत लगत सुहाये ॥
पण्डित शास्त्रार्थ को आवें हारमानि कर जावें ।
स्वामी जी निर्भय जीवन निज गंगा तीर वितावें ॥

॥ छन्द ॥

ध्यानमें ईश्वर के रहकर मग्न हो आनन्द में ।
योगका अनुभव करें निर्द्वन्द हो एकान्तमें ॥
भारी पीड़ा एक थी यह देशकी लखि दीनता ।
आर्यजातीकी अधोगति धर्म वैदिक क्षीनता ॥
आहा यह कैसा दृश्य अद्भुत देखनेमें आ रहा ।
भस्मी लपेटें एक साधू ईश से यों कह रहा ॥
धर्म वैदिक होवे जागृति औ अधोगति दूर हो ।
आर्यसंतति त्यागि आलस धान्य से भरपूर हो ॥
राजा प्रजा सुख नींद सोवें एकता सबमें बढ़े ।
आनन्द का संचार हो पाखंड मग सारे कढ़े ॥
युद्ध धार्मिक के लिये तैयार इस विधि होरहा ।
प्रार्थना बलप्राप्तिकी ईश्वरसे पूरी कर रहा ॥
इतिहास भारतमें लिखो सब अङ्क सोने के यही ।
स्वामी दयानन्द ने जगाया धर्म वैदिक को सही ॥
धर्म का करि युद्ध जीता प्रबल था वह आत्मा ।
योग बल विद्या का बल दीया उसे परमात्मा ॥

०

॥ छन्द ॥

गंगा किनारे किनारे विचरते । सर्दी हो गर्मीहो नंगे ही रहते ॥
सर्वाङ्ग पर अपने भस्मी रमाते । केवल अकेला लंगोटा लगाते ॥
गायत्री संध्या सबको सिखाते । मनू शास्त्र औ उपनिषदें पढ़ाते ॥
जहां पर ठहरते यज्ञें कराते । न देते खबर अपनी आते औ जाते ॥
दुजोंको जनेऊ धारन कराते । पढ़ो वेद उपदेश ये ही सुनाते ॥
उपदेश उनका सुना जो किसी ने । पाखंड मत सारे छोड़े उसीने ॥
इसी विधि अनेकोंको विज्ञान देता । करनवास पहुंचा दयानन्द नेता ॥
यहांकाहैइतिहाससबसेनिराला । धरमकाहुआसबसेपहिलेउजाला ॥
लिखाएकपुस्तकअलहदा ही मैंने । धर्मदिवाकरोदय रखा नाम मैंने ॥
संक्षिप्त ब्यौरा लिखूंगा यहां पर । उसमें लिखा मैंने पूरा सविस्तर ॥
आगे सुनों हाल दिलको लगाकर । स्वामी किया आय जो कुछ यहां पर ॥
पहिले तो पूरब चले गये थे । वापिस करनवास आकर रहे थे ॥

॥ चौपाई ॥

संवत् उनईसे चौबीसा । अठारह से सड़सठि सन ईसा ॥
शुक्लपक्ष वैसाख मासमें । माह मई अंगरेज जासमें ॥
कर्णवास स्वामीजी आये । एकदिन ठहर पूर्वदिश धाये ॥
आषाढ़सुदी पांचेतिथि जानों । छठी जुलाई का दिन मानों ॥
स्वामी फेरि यहां पर आये । गंगा रज सब देह रमाये ॥
नागा बाबा मढ़ी अगारी । पेड़ बसेंदू को हो भारी ॥
ताकी अविचल रहती छाया । स्वामी आसन तहां लगाया ।
दर्शन को जो कोई जावे । सत उपदेश श्रवण करि आवे ।
नगर आय सो करे बड़ाई । स्वामी जी की महिमा गाई ।
चर्चा फैला गांम मंझारी । एक महात्मा आये भारी ।

॥ छन्द ॥

हरिद्वार के मेला मांहीं सभा जीत कर आये ।
देखे सुने न पहिले कबहूं जिनके दर्शन पाये ॥
भागवती भगवानदासजी एकदिन मिलने आये ।
कंठी तिलक निषेध श्रवणकरि चुपके उठकर धाये ॥

॥ छन्द ॥

स्वामी जी से हुऐ विरुद्ध उनि ग्राम आय यह कीना ।
जोरि ब्राह्मण करि पंचायति भेद सबै कहि दीना ॥
कंठी माला तिलक छाप अवतार एक नहिं माने ।
प्रतिमा पूजा सम्प्रदाय मत स्वामी मिथ्या जाने ॥
गायत्री तीनों वर्णों की एकहि ताहि बतावें ।
खंडन करें पुरान भागवत मारग वेद चलावे ॥
आश्चर्यमय स्वामी का चर्चा आस पास अति फैला ।
ग्राम ग्राम और नगर नगर में होने लगो झमेला ॥
अपने मतलब साधन के हित बड़ो प्रपंच रचावें ।
बाहिर ते पंडित कोउ आवे वाहू को अपनावें ॥
निहालाल दानपुर वाले करनवास में आये ।
स्वामी जी से करि वार्ता गंगाजाय अन्हाये ॥
महाभारती कमलनयन जी अहमदगढ़ के वासी ।
नन्दकिशोर उपाध्याय के संग करी सलाह जो खासी ॥
पंडित अम्बादत्त वैद्य जी अनूपशहर ते आवें ।
स्वामी ते शास्त्रार्थ होय तब अर्थ सिद्ध हो जावें ॥

॥ चौपाई ॥

पण्डित अम्बादत्त बुलाये । स्वामी से शास्त्रार्थ कराये ॥
शास्त्रार्थ संस्कृत में हुआ । स्वामी कथन मानि उनि लीआ ॥
नगर आय वह कहने लागे । हमरी चली न स्वामी आगे ।
वेद वाक्य को देय प्रमाना । औ उपनिषद् बखाने नाना ॥
जो कुछ लिखो पुरानन माहीं । उसे प्रमान मानते नाहीं ॥
वेद वाकयहैं स्वतः प्रमाना । परतः स्मृति ऋषिनु ने माना ॥
वेद विरुद्ध कहे जो कोई । ताकी निन्दा जग में होई ॥
अम्बादत्त कही यह बाता । हीरावल्लभ हैं विख्याता ॥
वेद व्याकरण सब कछु जाने । उनको स्वामी भले प्रमाने ॥
स्वामी बड़े वेद के ज्ञाता । चले तहां न पुरानिक बाता ॥

॥ दोहा ॥

पण्डित अम्बादत्त की सुनी जु इतनी बात ।
सम्प्रदाय मत हिलि गयो ढंग दूजो ह्वै जात ॥
क्षत्रिय सब प्रार्थी भये पूछे अपने कर्म ।
स्वामी जी बतलाय दो कहा हमारा धर्म ॥
आज्ञा स्वामी जी दई संस्कार के हेत ॥
गांठि मतो ठाकुर सबै हर्ष जनेऊ लेत ॥

॥ चौपाई ॥

गायत्री जप हेतु बुलाये । चहुं ओर ते पण्डित आये ॥
स्वामी जी की कुटिया आगे । रचना यज्ञ करन सो लागे ॥
वृहत् यज्ञ हित कुण्ड बनाया । मण्डप सुघड़ अपूर्व छवाया ॥
यूपस्तम्भ सामुहैं गाड़ा । चारों ओर खेंचि दिया बाड़ा ॥
ध्वजा पताका बन्दन वारा । वेदमंत्र लिख दीने द्वारा ॥
कदली खम्भ चहूं दिश सोहैं । छवि अनूप लखि मुनिमन मोहैं ॥
तीनों काल साम का गाना । करैं विप्र मिलि सहित प्रमाना ॥
उद्गाथा उद्गीथ उचारैं । विधिवत वैदिक क्रिया प्रचारैं ॥
ब्राह्मण एक कुमर जी नामा । जाको करनवास ही गामा ॥
कंठी तोड़ी तिलक मिटाये । वैदिक पंथ तासु मन भाये ॥
सो स्वामी जी के मन भाये । सब क्षत्रिनु के गुरू बनाये ॥
गुरुदीक्षा तिन्हते दिलवाई । संस्कार दुज दियो कराई ॥
क्षत्रिय बीसक शुद्ध भये हैं । करि अभिभूत स्नान लये हैं ॥
धर्मोदय भयो भानु प्रकाशा । दयानन्द यश छयो अकाशा ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय बनिया जाती । संस्कार नित आय कराती ॥
वैदिक धर्मध्वजा फुहराई । स्वामी विजय अलौकिक पाई ॥
निर्भय हो स्वामी महाराजा खण्डन करते बैठि समाजा ॥
आठ गप्पधरि लीने नामा । व्याख्या करते ह्वै निष्कामा ॥
तिनके आगे नाम सुनाऊं । विवरण सहित सबै समझाऊं ॥
अष्टादश पुरान की रचना । नाहिं व्यास का एकहु बचना ॥

वेदविरुद्ध बुरा सूझा है। दूजी गप्प मूर्त्ति पूजा है॥
सम्प्रदाय दीखे जग जेती। झूंठी सबै लोभ की खेती।
वाममार्ग के तंत्र ग्रन्थ जो। सब मिथ्या ओ महा भ्रष्ट जो॥
भंग शराब नशा की चीजें। जिनते मानुष बुद्धि छीजे॥
परस्त्री संग काम वासना। चोरी की मन माहिं भावना॥
छल अभिमान झूंठ के चेरे। आठ गप्प हैं जगत बडेरे॥
इन्हें छोड़ि मानुष बनि जैये। वेद मानि सुख पूरन पैये॥
नित प्रति स्वामी खण्डन करते। नेक न शङ्का चित में धरते।

॥ दोहा ॥

आवत पण्डित लोग बहु चहुंदिश ते करि चाव।
परि स्वामी जी वचन सुनि पलटि जात सब भाव॥

एक दिवस को सुनि लेउ बाता। पण्डित बड़े एक विख्याता॥
हीरावल्लभ शास्त्री नामा। अनूपशहर हो तिनको धामा॥
सो चलि करनवास में आये। मूर्ती पूजा संग में लाये॥
छोटे से सिंहासन ऊपर। अस्म गोटिका तापे धरि कर॥
साभिमान रखि तिन्हें अगारी। स्वामी जी से कह्यो प्रचारी॥
मूर्ती पूजा पक्ष हमारो। ताको खण्डन आप विचारो॥
सो मैं आजु लेउं पुजवाई। जो नहिं छोड़ि अखाड़ा जाई॥
यदि स्वामी जी जय को पावें। तो हम मूर्ती गंग सिरावें॥

॥ सोरठा ॥

सुनी प्रतिज्ञा येह चहुंदिश ते आये विदुष।
प्रतिमा को करि नेह शास्त्रार्थ के लखन हित॥

॥ दोहा ॥

खैर हाथरस बैसमां जवां अलीगढ़ धाम।
दर्भ पुरी ओ दानपुर, अहमदगढ़ शुभ ग्राम॥

॥ चौपाई ॥

मथुरापुरी जलेसर एटा । कासगंज ,छलेसर, वैटा, ॥
अकराबाद, सिकंदरा राऊ । नगर झंगीराबाद, विजाऊ, ॥
मूर्ती पूजक बड़े धुरंधर । आये सहस्त्रावधी विप्र वर ॥
इक ढ़ंग बैठे मिल पाखण्डी । दूजी लग स्वामी उद्दंडी ॥

॥ सोरठा ॥

जुरी भीर तहां आय, दर्शक पण्डित विदुष जन ।
दयानन्द समझाय सब को सम्बोधन करो ॥

॥ दोहा ॥

प्रतिमा पूजन वेद ने कहूं बतायो नाहिं ।
दे प्रमान साधन करो ह्वे निशंक मनमाहिं ॥

॥ छन्द ॥

पूजना प्रतिमा कहीं भी नहीं बताया वेदमें ।
इसलिये खंडन करूं मैं क्यों फंसे हो खेदमें ॥
सिद्ध यदि वैदिक प्रमाणोंसे करोगे आज तुम ।
जगतमें होगी विजय और मान जावेंगे भी हम ॥
करना वितंडावादका नहिं चाहिये तुमको भला ।
है विदुषमंडल यह सभा विद्या की दिखलाना कला ॥
सत्य ही का मानना औ सत्य ही का बोलना ।
शास्त्रसे निर्णय करो है धर्म का यह तोलना ॥
नाम का यश है महापति मान ही है जासुकी ।
इन्द्री अगोचर जो कहा महिमा बड़ी है तासुकी ॥
वेदमें वर्णन यही औ उपनिषिद् ऐसा कहें ।
फेरि क्या शंका रही अब आप इस पर कुछ कहें ॥

॥ छन्द ॥

संस्कृत भाषामें सुन गम्भीर स्वामीके वचन ।
हीरावल्लभ शास्त्री जी करने लागे फिर कथन ॥

विदुष थे ये भी बड़े यदि आप इनको देखते ।
धारा प्रवाहित संस्कृतका बोलना तब पेखते ॥
प्रतिमा पूजनका समर्थन छै दिवस करते रहे ।
ध्यान पूर्वक सब सभाके सभ्यगण सुनते रहे ॥
स्वामीजीका पक्ष प्रति दिन प्रबल ही होता गया ।
पौराणिकों का पक्ष प्रतिमापूजना गिरता गया ॥
शास्त्रीजीसे अन्तमें समझा के स्वामी जी कहा ।
यह शास्त्रका मन्तव्य है इससे नहीं कुछ बच रहा ॥
सत्य का स्वीकार करना धर्म सब का जानिये ।
प्रमाण ईश्वर वाक्य जो है वेद उसको मानिये ॥
हीरावल्लभ शास्त्री जी हंस के यों कहने लगे ।
आप के औतार से अब भाग्य भारत के जगे ॥
सुन लो भाई इस समय जो हैं सभा में विद्यमान ।
प्रतिमा पूजा छोड़ दो है अज्ञता लो ठीक जान ॥
छै दिवस संवाद का परिणाम यह तुम जानना ।
प्रतिमा पूजा वेदके प्रतिकूल भाई मानना ॥
नहिं सहारा मूर्तिपूजा ने मुझे कुछ भी दिया ।
सबके देखत स्वामीजी ने सत्व मेरा हर लिया ॥
जो कुछ कहा है स्वामीजीने शास्त्रयुक्त प्रमाण है ।
उपनिषिद् कहते यही वेदोंमें जिसका गान है ॥
धर्मका भानू उदय श्री स्वामीजी ने कर दिया ।
वेदका संचार करके जगतमें यश ले लिया ॥
यह कहके उठकर फेंकदी सब मूर्तियां गंगामें जा ।
मग्न मन हो आ सभामें शास्त्री जीने यों कहा ॥
स्वामी दयानन्दकी कृपासे वेद का मग मिल गया ।
पाखड था यह मूर्त्तिपूजा जाल उसका जल गया ॥
सारी सभामें खलबली चहुं ओर भारी पड़ गई ।
भागवत औ मूर्तिपूजा उस दिना से उड़ गई ॥
वैदिकविजय की दुन्दुभी चारों दिशामें बज गई ।
गंगा में मूर्ती फेंकने की राह चोखी चल गई ॥

॥ दोहा ॥

सत्य गह्यो मिथ्या तजो साहस कियो अपार ।
हीरा वल्लभ धन्य तुम धन्य तुह्मार विचार ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी जी ने महिमा गाई । सत्य ग्रहण की दई बधाई ॥
हठी स्वारथी लोक लुकाने । मूर्ती पूजक महा लजाने ॥
ग्राम ग्राम ते प्रतिमा लावें । गंगा माही आनि डुबावें ॥
विप्रन को थाको व्यापारा । मूर्ती पूजा नश्यो सहारा ॥
चहुंदिश मचो कुलाहल भारी । हिन्दू क्षुभित मलें करतारी ॥
माहमहीना अन्त भयो जब । स्वामी पूरब चले गये तब ॥
राम घाट औ बहुधा ठामा । भ्रमण करत बीते बहु जामा
लगते जेठ बगदि फिर आये । करनवास में बजे बधाये ॥
पर्व दशहरा को शुभ माने । साधारण नर आवें न्हाने ॥
पै इक राउ बरोली आवें । सज धज अपनी सबे दिखावें ॥

॥ दोहा ॥

कछु दिन पहिले इन लियो, चक्रांकित मत धारि ।
शंख चक्र ते उभय भुज, लीन्हे अपने जारि ॥

॥ छन्द ॥

करनसिंह बड़ गूजर ठाकुरराउ बरोली को सरदार ।
रंगा चारी के चेला हैं कंठी रहे गले विच डार ॥
चर्चा सुनि लई स्वामी जी की सो मिलने को चले विचार ।
स्वामी समझि बढ़ेरे ठाकुर आदर युत कीना सतकार ॥
आउ बैठना स्वामी दीनी सो सुनि कही करनसिंह राउ ।
जा आसन पर तुम बैठे हो तहंते सरकि अलग हूं जाउ ॥
एक सिरे को स्वामी हटिगये बैठो कही यहां पर आय ।
परि ठाड़े रहि पूछन लागे हम को एक देउ बतलाय ॥
गङ्गा को तुम क्यों नहि मानो सो सब हमें देउ समझाय ॥
पापकाटनी यह धारा है याकी निन्दा नाहिं सुहाय ॥

इतनी सुनि कर स्वामी बोले मम उपदेश सुनो चितलाय ।
हाथ कमण्डल यह हमरी है यामें कछु कहनो हतुनाय ॥
पानी स्वच्छ शुद्ध गङ्गा को पीवत चित्त खुशी ह्वै जाय ।
परि मुक्ति जो मानत मूरिख सो गङ्गाते मिलिहैं नाय ॥
धर्म कर्मते मोक्ष होति है ऋषी बताई शास्त्र मझार ।
तुम्हरी बातैं गप्प भरी हैं इन को हम नहि करैं विचार ॥

***

इतनी सुनिके टेढ़ो परिगयो राउ बरौली को सरदार ।
अंड बंड सो बकने लागो विकटरूपधरि सभा मझार ॥
हमरे गुरू अगाड़ी तुम से कीटपतंगनु की अनुहार ॥
दर्शन कार्जैं ललचत डोलैं धक्काखाय रहे दरबार ।

***

बड़ी शान्ति से हंस कर बोले ठाकुर सुनो हमारी बात ।
शास्त्रार्थ उनते करवावो सबरे भेद तबै खुलि जात ॥
जोवे यहां न आना चाहैं तो हम चलैं उन्हीं के ठाम ॥
वार्त्तालाप हहुनु की देखो फेरि निकारो कछु परिनाम ॥

***

क्रोधवन्त ह्वै करनसिंह ने कटुवचनों का करो प्रलाप ।
परि स्वामी जी को यत्किञ्चित ताको भयो नाहिं संताप ॥
गंभीरता युत शान्तिपूर्वक करते रहे सत्य उपदेश ।
खंडन चक्रांकित मत कीनों नाहिं न भयको चित लवलेश ॥

***

सिंह समान गरज कर बोले सुनि लेउ करनसिंह उमराव ।
नक़ल महापुरुषों की करते यह का परो तुम्हार सुभाव ॥
स्वांग तुम्हारी महिलागण को यदि कोई करै सामुहे आय ।
सो अति बुरो तुम्हे लागेगो ताकी देउ चांद पिटवाय ॥
रामचन्द्र महाराज शिरोमणि ताकी फजिहत करो अघाय ।
सीता सती पतीव्रता ही ताको राक्षस लेयं चुराय ॥
तुम क्षत्रिय ह्वै करि ना समझो ज़ियादा कछू कहो ना जाय ।
तिलक भिखारिनु के धारन करि लज्या रही आंखि में नाय ॥

***

इतनी सुनते खेंचि असी लई पकरो स्वामी ताको हाथ ।
धक्का देद्यो करनसिंह को पाछे गिरे कांपते गात ॥
जो शस्त्रार्थ बसो मन तेरे तो रजवाड़े माहीं जाउ ।
मारवाड़, जैपुर वालों से करना युद्ध अखाड़े धाय ॥

* * *

ग्रन्थकार के चचा किशनसिंह ठाड़े भये अगाड़ी आय ।
लट्ठ तानि सीधो करि दीनो हमसूं लड़िलेउ खूब अघाय ॥
सभा बीच कोलाहल मचि गयो बहुतक लोग उठे भैराय ।
हाथनु हाथनु बाहिर करि दयो ठाकुर मन ही मन पछिताय ॥

* * *

जो साधू को तुम छेड़ोगे किशनसिंह ने कही सुझाय ।
फोरि खुपड़िया हम तुम्हरी देयं चाहें फेरि कछू हूै जाय ॥
चले जाउ हमरे आगे ते सिर पर काल रहो घैराय ।
सम्बन्धी हम तुम्हरे हैंगे याते कछू कह्यो ना जाय ॥

* * *

नीचे सिर करि चले राउजी अपने साथी संग लिवाय ।
इतमें सलाह करन यों लागे ओ स्वामी से कहो बुझाय ॥
करो इत्तला पुलिस मंझारी या झगड़े की कथा सुनाय ।
देयं गवाही हम सबरे मिलि ठाकुर ठसक बिगरि सब जाय ॥

* * *

यह सुनि हंसि स्वामी जी बोले यह कर्त्तव्य हमारो नाय ।
धर्म दुहाई हम फेरत हैं ईश्वर रक्षक हमरा भाय ॥
परम धर्म संतोष हमारा ताको हम तजने के नाय ।
क्षत्रिय धर्म अधूरो वाको सो नित सोचि सोचि पछताय ॥

* * *

चक्रांकित मत खंडन स्वामी करने लगे तबै तत्काल ।
रामानुज आचार्य संपदा ताके काटन लागे जाल ॥
फिर कातिक तक स्वामी ठहरे ना आगे को सुनि लेउ हाल ।
विचार करत दिन बीते चातुर्मासिक वर्षा काल ॥

* * *

कृष्णानन्द विशुद्धानन्द जी संन्यासिनु को जुरो समाज ।
योगाभ्यास ओ ब्रह्मसूत्र पर करत विचार महामुनिराज ॥
कृष्णानन्द अहं ब्रह्मवादी तिनको पक्ष चलो हतुनाय ।
विशुद्धानन्द योग की चर्चा स्वामी संग करि गये अघाय ॥

* * *

आश्वनि शुक्ला शरदपूर्णिमा आये फेरि बरौली गाउ ।
स्वामीजी को देखि यहां पर हिरदें भयो हरौ पुनि घाउ ॥
दुर्वासना विचारि चित्त में खोटो करन चहौ व्यौपार ।
परि स्वामीको कछून बिगड़ा आगें सुनि लेउ अन्य बिचार ॥

॥ छन्द ॥

तस्कर कुटी पर दो गये । स्वामी जहां सोते भये ॥
कुछ टोह को लेते रहे । आगें बढ़ो कहते रहे ॥
साहस किसी का नहिं पड़ा । कुछ था नहिं पहिरा खड़ा ॥
परि धर्म जाग्रित है सदा । सोता नहीं पल भरि कदा ॥
भयभीत उसने कर दिया । सिर हिल गया कांपा हिया ॥
वो बगदि कुटिया से गये । सब हाल जा करिकें कहे ॥
अबके दिये करि साथ दो । बोले कि यह तलवारि लो ॥
तुम काम करिकें आओगे । इनआम पूरा पाओगे ॥
की बुज़दिली गर जो कहीं । फिर ठौर तुमको है नहीं ॥
पहुंचा अनर्थ कमाल को । समझा बुझा सब हाल को ॥
भेजा उन्हें जाओ वहां । वह साधु सोता है जहां ॥
वे पहुंचे कुटिया पर सभी । स्वामी जगे तहां पर तभी ॥
हुंकार मारी जोर सें । सब भग गये उस ठौर सें ॥
रक्षक वहां जो सो रहा । हुंकार सुनकर जग पड़ा ॥
आ गांव में उसने कहा । जो माजरा गुजरा वहां ॥
ठाकुर किशनसिंह जी तभी । हम लोग पहुंचे थे सभी ॥
चेलंज जाकर देदिया । उन तस्करों ने सुन लिया ।
ठाकुर किशनसिंह ने कहा । कल नगर में जो यह रहा ॥
तो इसका मज़ा चखाउंगा । उसके हवास उड़ाउंगा ॥
वह भोर होते चलदिये । निज साथियों को संगलिये ॥

॥ छन्द ॥

राउ साहब की खुटाई आम सब में होगई ।
दुर्नामता की पोट उनके सीस पर चपो गई ॥
मस्तिष्क उनके में खलल सा होगया ।
मद्यपी औ मांसभक्षी रोज़मर्रा होगया ॥
उनका मुकदमा एकथा उसको भी वह जीते नहीं ।
पीछे न कोई पुत्र छोड़ा मरगये इकले वहीं ॥
खूबही फिर बाद उनके घरमें झगड़ा पड़गया ।
रानियों में ठन गई पूरा मुकदमा लड़ गया ॥
उपदेश स्वामी जी यहांपर नित्य ही करते रहे ।
यज्ञ होते ही रहे पाखंड सब कटते रहे ॥
आनकर इक मुहमदनने स्वामी से पूंछा सवाल ।
हिन्दू बनसकते अगर हम कहिये अपना खुद खयाल ॥
हंसके स्वामी ने कहा तुम छोड़दो खोटा करम ।
वेद मारग पर चलो और मानलो सच्चा धरम ॥
कुरआन किस्सों से भरा ईश्वर की बानी है नहीं ।
खुद ग़रज़ का ग्रंथ है उपकार उसमें नहिं कहीं ॥
यह सुनके उनके चित्त में कुछ रंग ऐसा भरगया ।
हिंदुओं से प्रेम औ मोमिन से दिल भी फिरगया ॥

॥ दोहा ॥

चंद्रग्रहण के विषय में पूछन लागे लोग ।
भोजन करिये का समय ग्रसित शशी के जोग ॥
स्वामी जी उत्तर दियो क्षुधा लगे तब खाउ ।
ग्रहण परे निज चालिते इनको यही सुभाउ ॥
सूर्यग्रहण के पर्व पर मेला जुरो अपार ।
स्वामीजी खंडन कियो तीर्थ विषय अवतार ॥

***

॥ चौपाई ॥

या विधि करते नित उपदेशा । विचरत गंगा तीर प्रदेशा ॥
गये चासनी ग्राम मझारी । नन्दराम पण्डित तहँ भारी ॥
ओर पास के ग्रामन माई । जाटन को देता बहकाई ॥
मुखिया छोतरसिंह वहां को । नन्दराम पण्डित जु जहां को ॥
पण्डित सों उन यों कहवाई । स्वामी पास चलो जुरि भाई ॥
कहे महात्मा सोई मानो । पण्डित बात सांच तब जानो ॥
बहुतक पण्डित लेकर साथा । स्वामी निकट गये परभाता ॥
सुनि उपदेश विप्र सब लाजे । नन्दराम तो तुरतहि भाजे ॥
बहुतक जाटन पकरि मँगाये । नन्दराम के पते न पाये ॥
जो स्वामी जी कहे विचारा । तिनहीं के ह्वै गयो प्रचारा ॥
मानव धर्म कथा कहवाई । भारत दीनो तहां बिठाई ॥
चक्रांकित मत दियो उड़ाई । वैदिक धर्मध्वजा फहराई ॥
फेर चले ताहरपुर आये । आसन गंगा तीर जमाये ॥
तीन बजे निशि गंगा न्हाते । सात बजे तक ध्यान लगाते ॥
जो पहिले भोजन लेआवे । स्वामी हित कर भोग लगावे ॥
यह लखि ईर्षा करि वैरागी । आवे भोर बड़ो बनि त्यागी ॥
जरी लाय रोटी धरि देवे । स्वामी खाय ताय नित लेवे ॥
या विधि बहुत दिना अजमाये । विचलित नाहिं तनक करपाये ।
स्वामी जाय अहार पधारे । श्रीवल्लभ की कुटी मझारे ॥
एक मनुष ने हाथ दिखाया । स्वामी से उत्तर यह पाया ॥
हाड़ मास औ रुधिर चाम है । याते अधिक न एक दाम है ॥
दूजे जन्मपत्र दिखलाया । ताको शोकपत्र बतलाया ॥
जाती गंगा न्हाने आवें । सुनि उपदेश मगन ह्वै जावें ॥
जीवें तिन को आद्ध करावें । मरो तासु को नाहिं बतावें ॥

॥ दोहा ॥

तीन महीना तक टिके अनूप नगर में जाय ।
राजा जयकृष्णदास जी मिले तहां पर आय ॥
बहुत देर बातें करीं होवे वेद प्रचार ।
लौटि अलीगढ़ को गये करि हैं बहुरि बिचार ॥

॥ चौपाई ॥

पंडित एक सिकन्दराबादी । स्वामी जी के हुँ प्रतिवादी ॥
कागद लिखो एक दिखलायो । स्वामी लग्नपत्र बतलायो ॥
कृष्णानन्द सरस्वती आये । शास्त्रार्थ के हेतु बुलाये ॥
परि नाहिन सनमुख सो आये । एक दिवस रहे काशी धाये ॥
बहुतक साधू अन्यहू आवें । स्वामी सूक्षम विषय बतावें ॥
नाहं अविद्या समझन देई । बहुतेरो बतलावे कोई ॥
बालू मिली होय जो चीनी । ताकूं करी सके नहिं बीनी ॥
चिवटी बीन ताहि सब लेवे । यही विचार शास्त्र भधि भेवे ॥
एक विप्र ने विष दे दीना । न्यौली विधि करि शोधन कीना ॥
हाकिम सबरो सुनो हवाला । सजा दई ताकूं तत्काला ॥
हाकिम स्वामी नेरे आये । स्वामी नहि तिन सों बतराये ॥
हाकिम कारन पूछन लागे । स्वामी कहे वचन रस पागे ॥

॥ दोहा ॥

कैद कराने मैं नहीं आया हूं संसार ।
बन्ध छुड़ाने के लिये औ करने उपकार ॥
मूढ़ टेव छोड़े नहीं करे नित्य अपकार ।
सज्जन हू शिक्षा गहै तजै न सत व्यवहार ॥
करनवास होते हुए पुरो बेलवन माहिं ।
पीपर तर आसन कियो जाकी शीतल छांह ।
सिरी किशन पंडा कही हम को देऊ बताय ।
रामकृष्ण कैसे भये संशय देउ मिटाय ॥
महाराज श्रीराम हे अवधपुरी के माहि ।
यदुकुलभूषण कृष्ण त्यों निश्चय जानो याहि ॥
गोपिनु के संग रास की झूंठी है सब बात ।
व्यर्थ पुरान तुम्हें लिखो छीन चोरि दधि खात ॥
जार चोर जाली छली भलो कहे नहिं कोय ।
ये लक्षण नहि कृष्ण में कहे सो मूरखि होय ॥
आटी देही सों मलो किहि कारन महाराज ।
दूजो उत्तर देउ यह समाधान हो आज ॥

॥ चौपाई ॥

पिंडोर माटी के गुरु एहा । बहुतक रोग दूर हो देहा
ठंड शरीर माहिं नहिं व्यापे । और सतावति नाहि न तापे ॥
मक्खी मच्छर डंक न मारें । उत्तर याको यही सम्हारें ॥
अग्निहोत्र संध्या गायत्री । दोनों काल जाप सावित्री ॥
यह उपदेश हमारो मानो । वैदिक मार्ग याहि पहिचानो ॥
विप्र त्रिमिटि चहुं दिश ते आवें । संस्कार वैदिक करवावें ॥
या विधि धर्म प्रचार कियो हो । प्रति दिन यह उपदेश दियोहो ॥
जब लोगनु में निज हित जाना । स्वामी तब ही कियो पयाना ॥

॥ सोरठा ॥

रामघाट में जाय पद्मासन जु लगाय के ।
संध्या भई जु आय गंगातट बैठे रहे ॥
यह लखि कर सब लोग बनखंडी पर ले गये ॥
भलो बनो संजोग वादि रहे द्वै विदुषजन ॥

॥ दोहा ॥

खंडन स्वामी जी करो दोनों को तहं डाटि ।
धर्म दिवाकर उदय भो भूलिगये सो साटि ॥

॥ सोरठा ॥

सम्भाषण के हेत कृष्णानन्द सरस्वती ।
बैठारे करि चेत स्वामी जी के सामुने ॥

॥ चौपाई ॥

गीता को इक वचन कहो उनि । यदायदाहि प्रतीकलेउ गुनि ॥
उत्तर स्वामी दियो प्रमाने । निराकार ईश्वर सब माने ॥
सो शरीरधारी नहिं होवे । अपनी महिमा आपुही खोवे ॥
फिर वे कहने लगे विलक्षण । होता है लक्षण का लक्षण ॥
स्वामी जी उत्तर यह दीना । लक्षका लक्षण कहा प्रवीना ॥
आटे का आटा नहिं देखा । अद्भुत ज्ञान आप का पेखा ॥
क्षेमकरन ब्राह्मण इक आये । मूरतिपूजा अश्व लदाये ॥
उनि स्वामी के सुने विचारा । मूर्त्ती पूजा कृत्य विसारा ॥

॥ दोहा ॥

चरक और सुश्रुत कहे वैद्यक ग्रन्थ प्रमाण ।
अन्य आधुनिक माहिं कछु नाहिन है विज्ञान ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी बिरवा के लिये पूछी काहू बात ।
वायु शुद्ध अति ही करे दोष शमन हैं पात ॥

॥ चौपाई ॥

अतरौली द्वै वार गये हैं । भैरव मन्दिर माहिं रहे हैं ॥
स्वामी गये जलेसर माहीं । रईस मुकन्दसिंह रहत जहां हीं ॥
संस्कृतशाला तहां बिठाई । विद्यार्थी पढ़ते बहु आई ॥
मुकन्दसिंह जी के मन आई । मूर्तीपूजा दई उठाई ॥
गाम गाम ते मूर्ति मगाई । काली नदी माहिं फिकवाई ॥
जब जब स्वामी यहां पधारे । साठि गाम के करे सुधारे ॥

॥ दोहा ॥

राजा जयकृष्णदास जी किये प्रश्न कछु आय ।
निश्चय करि मांगी विदा लौटि अलीगढ़ जाय ॥
यहां ते गढ़िया को गये ढिग सोरमजी धाम ।
स्वामी जी महाराज ने जाय कियो विश्राम ॥

***

गया नरायन आदि ते कीनो अति संवाद ।
चक्रांकित मत ध्वंस करि मेटो सबै विवाद ॥
एक मास बसि बदरिया करत रहे उपदेश ।
जनसमूह सुनते रहैं सहस्रावधी हमेश ॥

॥ चौपाई ॥

नारायण चक्रांकित एका । तिहि मन उपजो धर्म विवेका ॥
स्वामी शरण गही तिन्ह आई । सोरमजी ले गयो लिवाई ॥
दस हजार मानुष की नगरी । स्वामी पहुंचत हिल गई सबरी ॥
बहुधा पण्डित जुरि मिलि आवें । सुनि संवाद शान्त होजावें ॥

एक दिन पंडित गोविंदरामा । मूर्ती पूजा तजि निज धामा ॥
स्वामी शरण आय तिन्ह लीनी। भांडभगति सबरी तजि दीनी॥
अंगद शास्त्री एक विदुषवर । ग्राम बदरिया में तिनको घर ॥
व्याकरणी पंडित कहलावें । विद्या पढ़न विप्र बहु आवें ॥
दूरि दूरि तक सो विख्याता । तिन्ह ते कही जाय सब बाता ॥
दयानन्द संन्यासी आये । सम्प्रदाय मत सबे हिलाये ॥
नारायण औ गोविंदरामा । स्वामी कृत्त कहो एक जामा ॥
सुनि शास्त्री जी कियो विचारा ।अवशि होय संवाद हमारा ॥
यह निश्चय मन में ठहराई । सोरों में विज्ञप्ति कराई ॥
स्वामी जी के पहुंच समीपा । कीने प्रश्न सिनिग्ध प्रदीपा ॥
सरल सुभाव युक्त कहि उत्तर । दीनो सकल समाज तृप्त कर ॥
काठ्य दोष व्याकरण अशुद्धी। भरी भागवत माहिं निपद्धी ॥
प्रतिमापूजन के बहु दोषा । खंडन करि प्रमाण सह तोषा ॥
वेदविहित सुनि स्वामी कथना । शास्त्री मानि लये सब बचना ।
पुनि शंका अंगद जी कीनी । स्वामी समाधान करि दीनी ॥
अंगद शास्त्री मगन भये अब । स्वामी जी के चरन छुये तब ॥
सकल सभा को यह समझाया । स्वामी शिव अवतार बताया ॥
मूर्त्ति पूजा त्यागि दई जिन । शालिग्रामहु फेंक दिये तिन ॥
यह लखि बहुतक मंदिरधारी । फेंकी मूर्ती गंग मंझारी ॥
कोलाहल चहुं दिश में छाया । स्वामी पाखंड सबे जलाया ॥

॥ सोरठा ॥

पण्डित युगलकिशोर स्वामी जी के संग पढ़े ॥
बोले बचन कठोर अंगदशास्त्री के लिये ।

॥ दोहा ॥

संभाषण होने लगे शब्दाशब्द विचार ।
उभय विदुष करने लगे उभयपक्ष संहार ॥
स्वामी जी मध्यस्थ ह्वै अन्त दिये समझाय ।
दोनों विधि ते शुद्ध है शास्त्र रहो बतलाय ॥

॥ छन्द ॥

पण्डित जुगलकिशोर गये जब मथुरा नगरी।
कही विवस्था देखि गये जो सोरों सबरी॥
दण्डी जी को जाय उलहना यह कहि दीयो।
दयानन्द ने नाम आपको उज्वल कीयो॥
प्रतिमा शालग्राम आदि फिकवाय देत हैं।
कंठी को तुड़वाय तिलक पुछवाय देत हैं॥
खंडन करत पुरान एकहू मानत नाहीं।
बड़ो कुलाहल मचो देश सबरे के माहीं॥
दण्डी जी हंसि कही बुरा वह क्या कुछ करते।
शालग्राम अशुद्ध शब्द तुम जाय उचरते॥
तिलक माल और छाप सबे पाखण्डहि जानो।
श्रेष्ट पंथ का मार्ग पुरानन् को ही मानो॥
जो इन में कछु लाभ हमें हू देउ बताई।
सत्यशास्त्र और वेद माहिं दैना दिखलाई॥
पण्डित युगलकिशोर ऋषि के बचन श्रवण करि।
कंठी डारी तोड़ न पूजी प्रतिमा हू फिर॥

॥ सोरठा ॥

इत सोरों के माहिं, अंगद शास्त्री के हितू।
ऐसो कोऊ नाहिं, जिनि प्रतिमा फेंकी नहीं॥

॥ दोहा ॥

सोरों के बहुं ओर, आस पास के ग्राम सब।
मचो कुलाहल घोर, पौराणिक मत हिलि गयो

॥ चौपाई ॥

वृन्दावन के रंगाचारी। आवें शूकरक्षेत्र मझारी॥
सहस्त्रावधि मुद्रा ले जावें तप्त तनूकरि शिष्य बनावें।
स्वामी का सुनि चर्चा कानो। सो नहिं सोरों बहुरि पयानो॥
चक्रांकित मत सबने त्यागो। वैदिक धर्म सनातन जागो ७

छोड़ भागवत सब ने दीना । मानवशास्त्र मानि मन लीना ॥
प्रातः सायं संध्या करनी । नितप्रति पञ्चयज्ञ की बरनी ॥
जगन्नाथ चक्रांकित आये । नगर बरेली ते बुलवाये ॥
नहिं स्वामी के समुहें आये । लिख श्लोक मनू भिजवाये ॥
रामदास जी वैद्य विशारद । जगन्नाथ सूं कही निरापद ॥
कालिदास इक ग्रन्थ लिखो है । संजीवनी सुनाम रखो है ॥
तामें लिखी समीक्षा ऐसी । हम देखी सुनलो तुम जैसी ॥
दस हज़ार भारत बतलाया । व्यासचारि में जोधा गाया ॥
दस पुरान जब तक बतलाये । अब अष्टादश परत लखाये ॥
सवालक्ष भारत की गणना । अब प्रक्षिप्त सहित है रचना ॥
विन विचार तुम नाहक बोलो । पोल आपुनी आपहि खोलो ॥
यह घटंत छिपि है अब नाहीं । जगन्नाथ सोचो मन माहीं ॥
जिन्हें बतावत हो प्राचीना । सो वह सब हैं अर्वाचीना ॥
यह सुन जगन्नाथ चक्रान्ती । गये बरेली हू करि शान्ती ॥

॥ दोहा ॥

रामानुज, बल्लभ, जुहै यम औ माध्वाचार्य ।
पोल खोलने के लिये स्वामी प्रण लियो धार्य ॥

चौपाई

प्रतिमा पूजन इनकी जड़ है । अष्टादश पुराण बेहुड़ है ॥
ताहि उपाटि काटि में डारों । फिर शृगाल सबरे जगमारों ।
वेद व्यास कहावत जै हैं । ब्रह्म सूत्र के कर्त्ता ते हैं ॥
तिनके कहे पुरान बतावें । नेक न दुर्मति हिये लजावें ॥
जगत् बुराई कोई देखे । सो सब मध्य पुरानन पेखे ॥
ईर्षा द्रोह कपट छलचोरी । मिथ्या कथन जार बरजोरी ॥
इन सब पापन को भंडारा । बरनन कियो पुरान मंझारा ।
अर्थ अनर्थ महा करि डारे । घोर पन्थ जगमांहि प्रचारे ॥

॥ दोहा ॥

भारत गारत इन कियो दियो भ्रष्ट उपदेश ।
ईश्वर को पार्थिव करो सहो न जात कलेश ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी के मन यह संतापा । पाखंडिनु पर बाढ़ो दापा ॥
पहिले तेश्रो अधिक वेग सें । काटन लागे दुद्म तेगसें ॥
बल्देवगिरि है एक गुसाईं । जिनको प्रभुता सोरों छाई ॥
तिन्हें जनेऊ दियो पिन्हाई । शुद्ध ब्राह्मण ताहि बनाई ॥
पण्डित अंगदराम नाम के । आये पीलीभीति धाम के ॥
सो शास्त्री अंगद के आगे । होय निरुत्तर घर को भागे ॥
साधू नंगा फिर इकआया । ताने हुल्लड़ अधिक मचाया ॥
ताकों स्वामी पत्र पठाया । परि न वहांते उत्तर आया ॥
गपोड़ बाजी दिन भरि कीनो । सांझ होत गङ्गा मग लीनो ॥
यह सुनि बात हंसे सब लोगा । स्वामी समझ गये सब योगा ॥
आपुहु गङ्गा और पधारे । वायूसेवन मन बहलाने ॥
जित को नागा साधु गया था । स्वामी मारग वही लिया था ॥
साधू मिला जाय कछु आगे । स्वामी कही जात कित भागे ॥
मूर्ती पूजा सिद्ध करो किन । वेद माहिं दिखलाओ ततछिन ॥
जो प्रण करो ताहि अब राखो । काहे वृथा साधु बनि भाखो ॥
चाहैं यहीं बात करि लीजै । अथवा लौटि नगर चलिदीजै ॥
मौन साधि साधू ने लीना । स्वामी को उत्तर नहिं दीना ॥
अन्त कही स्वामी यह बाता । जानि परी मुख सियों विधाता ॥
आत्मविरोध करो हो जैसो । ताको फल यह भोगो ऐसो ॥
झूंठ असत्य पक्ष नहिं लेना । धोखा वेदविरुद्ध न देना ॥
सत्य ग्रहण में उद्यत रहिये । वैदिक धर्म सनातन गहिये ।
करि उपदेश साधु समझाये । स्वामी बगदि पिछाड़ी आये ॥

॥ दोहा ॥

शोरों ते सहबाजपुर, स्वामी कियेा पयान ॥
दंडी को पंचत्व सुनि, मानो खेद महान ॥

॥ छन्द ॥

गूढ़ आशय प्रबल शैली युक्तिपूर्वक कथन को ।
वेद के मंतव्य को और दर्शनों के कथन को ॥

उपनिषिद् के भाव को इस विधि कहेगा कौन अघ ।
ऐसा दुनिया में भला फिर होय आगे कौन अब ॥
संस्कृत व्याकरण का रवि आज मथुरा छिप गया ।
स्वामीविरजानन्द जो संसार से हा उठगया ॥
नैनमूंदे स्वांस रोकी ध्यान में चुप होगये ।
योगविधि द्वारा मनो गुरू जी में मिलने को गये ॥

॥ दोहा ॥

स्वामी जी शहबाजपुर, कीनो धर्म प्रचार ।
वैरागी को नहिं रुचो, उपजो हृदय विकार॥

॥ छन्द ॥

एक ठाकुर से जाय कही तिन्ह दीजो तुम अपनी तलवार ।
शीस काटि स्वामी को लाऊं अपना पूरन करूं विचार ।
ठाकुर ताहि बड़ो फटकारो यह का सूझी तोहि गँवार ।
अबही कैद कराइ जायगी भेजें तुम्हें पकड़ि दरबार ॥
गिड़ गिड़ाय वैरागी बोलो ठाकुर सुनौ हमारी बात ।
माफ़ कसूर आज को करिदेउ तुम्हरे रहें पुत्र कुशलात ॥
क्षत्रिय हृदय दया भरिआई धिक् २ कहि के दियो उठाय ।
स्वामी निकट पहुंच ठाकुर ने सब वृत्तान्त सुनायो जाय ॥
हंस कर स्वामी जी यों बोले इसकी चिन्ता करें न आप ।
शक्तिहीन मूरख पाखण्डी तिनकी मोय न व्यापै ताप ।
तथापि ठाकुर उचित समझ कर निज के नौकर भेजे चार ।
शस्त्र बांधि रक्षा सो करते रात दिना बनि पहरेदार ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी गये ककोड़ा माहीं । कातिकी मेला होत जहांहीं ॥
स्वामी पास कलकूर आये । करि सत्कार खूब बतराये ॥
फेरि मौलवी और पादरी । एक उदारी साधु नागरी ॥
स्वामी से मिलने को आये । निज २ मत मन्तव्य सुनाये ॥
उनकी स्वामी करी समीक्षा । सब के मत की करी परीक्षा ॥
वेदधर्म को करो प्रचारा । पाखंड मत पर दृतो कुठारा ॥

मोली को कायथ वैरागी । ताके एक चेटका लागी ॥
हरि को जपो छोड़ि सब धन्धा । सबको यही सिखावत अन्धा ॥
ब्राह्मण चेला अपने करता । निज झूठा उन आगे धरता ॥
आठ दसक चेल संग लीयें । गौमुखी सब के कर दीये ॥
रेती माहिं डोलतो पायो । स्वामी ने ताको समझायो ॥
झूठनि काहू की नहिं लेनी । नहिं दूजे को अपनो देनी ॥
जे सब धन्धा छोड़त है जग । तिनकी कहा दूसरो है मग ॥
बिना किये भोजन कहां पावें । बनि आलसी क्षुधित मरिजावें ॥
कुपथ पन्थ तजि दीजे लाला । त्यागि गौमुखी तोड़ो माला ॥
सुनि उपदेश मगन मन ह्वै कै । हंसो बड़ो करतालिक दैकै ॥
चेला भागे सङ्ग विहाई । आपु बसे गङ्गा तट जाई ॥
स्वामी कम्पिल ओर सिधाये । कायमगंज वहां ते आये ॥
तहां बहुत श्रद्धालू आवें । सुनि उपदेश मगन होजावें ॥
कछु बैठें ऊँचे थल आई । तिनके ओरनु करी मनाई ॥
उनको स्वामी यों समझायो । पक्षी बैठि विटप सुख पायो ॥
यह विधि जानि शान्ति ह्वै जाओ । बैठो वहां जहां सुख पाओ
यह सुनि अट्टहास सब कीना । समझि पखेरू के समलीना ॥
कहो भागवत जानो कैसी । मिथ्या है नहिं कहैं अनैसी ॥
तहसीलदार कही तब जैसें । नहि रुचिकारक कहनो ऐसें ॥
स्वामी समझाये कहिं बैना । झूंठे बचना आप्त कहै ना ॥
मिथ्या कथा भागवत माहीं । फिरि क्यों झूंठी कहें न ताहीं ॥
जो दिल दुखे सांच के सुनते । तो काहे को निश्चय करते ॥
यहां ते गये फर्रुखाबादा । तहां को सुनो कछू संवादा ॥
गंगा तीरे डेरा दीना । वैदिक धर्म नगाड़ा दीना ॥

इति पंचम मयूख:

अथ षष्ठम मयूखः ।

छन्द ॥

नगर फर्रुखाबाद के सब पण्डित आये ।
स्वामी जी के बचन सुनि अति आनंद पाये ॥

॥ चौपाई ॥

थोड़े से ब्राह्मण पेटार्थी । करो विरोध बने अति स्वार्थी ॥
शास्त्र विषय में शक्ति न जिनकी । सुनिये गति कैसी भई तिनकी ॥
काशी जाय व्यवस्था लाये । पत्र आय स्वामी दिखलाये ॥
स्वामी ताहि बांचि मुसिकाये । पंडित काशी के लखिपाये ॥
कछु खोटे जन मतो बनायो । स्वामी बुरो चीतनो चायो ॥
पर नहिं कछु करि सके बिगाड़ा । चहुंदिशि बांधे फिरे अखाड़ा॥
शिवमन्दिर एक साहु बनाया । ताको काम बन्द करवाया ॥
विद्याशाला तहां बिठारी । वेद पढ़ें तामधि ब्रह्मचारी ॥
संस्कार बहुतक करवाये । पञ्चयज्ञ के मन्त्र पढ़ाये ॥
मंदिर दर्शन करे न कोई । नित्य हवन गंगा तट होई ॥
स्वामी दूजीवार पधारे । द्विज विश्वम्भरनाथ प्रचारे ॥
पड़ो तहलका नगर मझारा । हठी करें मिलि सोचि विचारा ॥
साधु जाति इक दिन जो आया । कढ़ी भात फुलका लेआयः ॥
स्वामी जी भोजन सो खाया । नगर निवासिनु नाहिं सुमाया ॥
स्वामी कही सुनो यह बाता । द्विविधि भोजन भ्रष्ट कहाता ॥
कष्टदेय, हिंसा करि लावे । निषिद्ध वस्तु डालि खिलावें ॥
जो कछु भोजन हम को लाया । उस में अवगुण एक न पाया ॥
पौराणिक लोगों ने देखा । हलकी होत आपनी पेखा ॥
साहू सेठ रईस फिरे सब । बालक तर्क करत पूरी अब ॥
बाहर ते पंडित बुलवाये । साहस पड़ा न सन्मुख आये ॥
श्रीगोपाल जिले मेरठि के । आये करन वार्त्ता छटके ॥
निश्चित समय सबन मिलि कीनो । सबरे नगर ढंढोरा दीनो ॥

॥ छप्पय ॥

मुख्य सभापति बने सेठि नीलम्बरदासा ।
पहुंचे जाय वहां सु जहां स्वामी का वासा ॥
पण्डित श्रीगोपाल संस्कृत में यों पूछा ।
खण्डन काहे करत कहो तुम मूरति पूजा ॥
आज्ञा इसकी शास्त्र में मनुस्मृति देखो तनक ।
वृथा वाद काहे करत व्याप गई है कह सनक ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी प्रथम कही यह बाता । भाषण शुद्ध नहीं है ताता ॥
आज्ञा कहां प्रमाण दिखाओ । विद्वत सभामें देत भुलाओ ॥
यह सुनि पण्डित कहने लागे मनुस्मृति यह तुम्हरे आगे ॥
मनु अध्याय दूसरे माहीं । देवार्चन है लिखो तहांहीं ॥
स्वामी उत्तर तब यों दीया । यह अनुमान पोच तुम कीया ॥
विद्वन को सत्कार कहा है । नाहिं मूर्ति का नाम लिया है ॥
पुनि थोड़ी सी तर्क चलाई । पाछे बैठे चुप्प लगाई ॥
शान्त भये जब श्रीगोपाला । महिमा स्वामी की तत्काला ॥
चर्चा विद्वत्ताकी गाढ़ी । प्रतिदिन दूनी दूनी बाढ़ी ॥
अनवसात को श्रीगोपाला । काशी चले गये तत्काला ॥
मायाकृत लिखवाय व्यवस्था । अपनी सम्हरी समझि अवस्था ॥
बगदि फ़र्रुखाबादहि आये । विजय ढोल अपने बजवाये ॥
गङ्गातीर बांस इक गाढ़ा । धर्मधुजा तर जुदा अखाड़ा ॥
कान्यकुब्ज हो ब्राह्मण एका । मद्यप महा भयो अविवेका ॥
कियो सहायक अपनो सोई । रही सही पण्डिताई खोई ॥
मेला जोरि कही यह बानी । सूखे बांस चढ़ाओ पानी ॥
बैठे सज्जन स्वामी पासा । मूढ़पने को लखें तमासा ॥
स्वामी जी ने कही देखलो । अबुध हठी का हृदय पेखलो ॥
श्रीगोपाल पठाय फिसादी । स्वामी जी सों यों कहवादी ॥
आज करो हम से संवादा । देंउ बताय शास्त्र को स्वादा ॥
स्वामी उत्तर दिया अगाधा । उनका ज्ञान सबनु लखि पाया ॥
जो कछु रहे हृदय दिखलाई । तिहिं विद्वत्ता दई बताई ॥

॥ दोहा ॥

पण्डित श्रीगोपाल ते लोगन कही बुझाय ।
आप चलो स्वामी निकट शास्त्रार्थ है जाय ॥
यह सुनि उत्तर उन दियो सुनो हमारी बात ।
जो कदापि जावैं वहां करैं मंत्र की घात ॥
कीलि रखो है भवन सब मंत्रशास्त्र के जोर ।
वाहीं आ बातैं करैं रहैं हमी सिरमौर ॥

॥ सोरठा ॥

स्वामी जी के पास भेजो चौबो भंगड़ी ।
आपु बुलाये खास पण्डित श्रीगोपाल ने ॥

॥ चौपाई ॥

चौबे ते स्वामी जी बोले । बचन रसाल शास्त्र युत तोले ॥
शास्त्रार्थ को अर्थ बखानो । हमें बताओ तुम कह जानो ॥
सज्जन विदुषन श्री गोपाला । औंकत स्वान समान श्रृगाला ॥
शास्त्रविचार जौन विधि होई । ताको नहिं जानत वह कोई ॥
स्वामी निकट बहुल विद्वाना । बैठे सुनत रहे व्याख्याना ॥
तबहुं कही चौबे सों ऐसे । नियम बांधने के विधि जैसे ॥
होनि अवज्ञा चहुं दिशि उनकी । नाहिं प्रतिष्ठा है कछु तिनकी ॥
विद्वज्जन समाज व्यवहारा । नाहिन श्री गोपाल विचारा ॥
आय जाय ऐसे नहिं होजै । शास्त्रार्थ को नाम न लीजै ॥
जो कछु उनके इच्छा होवै । स्वामी निकट आय किन खोवै ॥
यह सुनि चौबे [illegible] । सकल व्यवस्था जाय सुनाई ॥
बहुतक मूढ़ सिखावन लागे । नाहिं चलै कछु उनके आगे ॥

॥ दोहा ॥

जिलाधीश हाकिमनु कूं मिथ्या दियो सुझाय ।
संन्यासी उपदेश सुनि दङ्गा अति है जाय ॥

॥ चौपाई ॥

अनुसन्धान पुलिस ने कीया । भेदि लयो सब अपने जीया ॥
स्वामी दयानन्द संन्यासी । नत उपदेश करत सुखरासी ॥
आपुन काहू नाहिं बुलावत । आवे वही जाय मन भावत ॥
वेदशास्त्र उपनिषद् बखाना । व्याख्या करते देत बिज्ञाना ॥
पुलिस रिपोर्ट दई लिखि ऐसी । आगे सुनो बताऊं जैसी ॥
स्वामी जी नहिं काहु बुलाते । और न काहू को भड़काते ॥
करत धर्म उपदेश अकेला । वहां नहीं कछु होय झमेला ॥
है अधिकार सुनो जा कोई । जो व्याख्यान वहां पर होई ॥

॥ छन्द ॥

कछु दिना के बाद स्वामी निकट आ कुरसी बिछा ।
ज्वालाप्रसाद कनौजिया ने आय मदिरा को पिया ॥
चूर होकरके नशे में बड़बड़ा बकने लगा ।
जो वहां बैठे महज्जन क्रोध उनके मन जगा ॥
शान्त स्वामी जी ने सब को कहके यह तब करदिया ।
उन्मत्त के बकवास का परवाह किसने कब लिया ॥
बेअदब की हद्‌गई जब बेवकूफ़ी हद्द से ।
फेंकदी कुरसी उठा कर दूर उसको भद्द से ॥
गोशमाली दूर जाकर और भी करदी गई ।
शाक्त ब्राह्मण के लिये शिक्षा भली देदी गई ॥
गिरते पड़ते हबकते बकते बकाते चल दिये ।
वाममारग का महातम भोग सारे फल लिये ॥

॥ चौपाई ॥

किनहूं खोटी राय बताई । रपट पुलिस में कीनी जाई ॥
फेरि अगाड़ी कछू न कीना घरही माहिं समझि मन लीना ॥
उड़ी अवाई स्वामी सच्चा । कामी ब्राह्मण करिहैं दच्चा ॥
जगतनाथपरसाद सेठजी । स्वामी जी से आय भेंट की ॥
कही कहानी सुनी सुनाई । स्वामी को निज युक्ति बताई ॥
अंतपुर में रहा कीजिये । वहीं बैठि उपदेश दीजिये ॥

स्वामी सुनि हँस कर यों बोले । रक्षक कौन सङ्ग मम होले ॥
सच्चा रक्षक विश्वम्भर है । ताके बल मोहि न कछु डर है ॥
गङ्गा तीर अकेला रहता । मैं नहिं काहू की भय करता ॥
नाहिन बांका बाल भया है । ईश्वर की सर्वत्र दया है ॥

॥ कवित्त ॥

लाला प्रेमदास और देवीदास साहुकार हिम्मत कटि बांधि कही पण्डित बुलाओ जी । पञ्च कहेंगे जेतो खर्चिबे को देयं हम सोचि कर मन नाहिं इसमिंट बताओ जी ॥ हार जीत लेउ ठहराय जगमोहन से उठि करि विचार दयानन्द से कराओ जी । मेरे जान हलधर ओझा पै कोई जाय अथवा लिखि पत्रिका कानपुर पठवाओ जी ॥

॥ छन्द ॥

पण्डित हलधर ओझा मैथिल दूर दूर तक हैं सरनाम ।
शास्त्रार्थ को उन्हैं बुलायो जिन को जादू टोना काम ॥
हार जीत की बदाबदी पर करनो ठहरायो संवाद ।
चारों ओर कुलाहल है रहो होने लागो महाविवाद ॥

॥ छन्द ॥

जगतनाथ जब सुनी शरति की जिकर चली है ।
कहन लगे यों आय बात यह बहुत भली है ॥
लगे कहन हूँ मगन अवशि निश्चय हो जावे ।
जाको होगी जीत सोई बहुतक धन पावे ॥
विप्र सतावनलाल बुला कर यों समझाये ।
प्रेमदास की हाट मुद्रिका बांधि पठाये ॥
द्वै हज़ार सतपांच जमा हमरे करिलेवें ।
इतने ही गिनि आप अमानति में धरिदेवें ॥
हलधर ओझा जीति यदपि जो जाय सभा में ।
लाला देवीदास मुद्रिका सबरे पामें ॥
इस के होय विरुद्ध रक़म सब हम लेलेंगे ।
देखि भारि परिणाम जिसे चाहें देदेंगे ॥

यह संदेस ले गये निकट पंडित जी उन के ।
रुपया धरे हज़ार अढ़ाई आगे जिन के ॥
होय अचंभित कही कहा माया ले आये
हंसि हंसि पंडितराज भेद सबरे बतलाये ॥
लाला देवीदास सेठ यह वचन उचारे ।
हम ऐसे कब कही सेठ यह कहा विचारे ॥
प्रेम भाव के साथ बात सब होनी चहिये ।
स्वामी जी संवाद सबै मिलि सुननो चहिये ॥
जो निकले परिणाम शास्त्र को सो ही मानो ।
हठमें कहा सवाद मूर्खपन पूरो जानो ॥
इतते हलधर करें पक्ष अपने का साधन ।
उत स्वामी जी करें वेद मारग का थापन ॥
यह कहि पंडित हाथ रुपैया वापिस कीने ।
हलधर ओझा आय साथ पौराणिक लीने ॥
स्वामी जी के निकट नगर के बहुत सहज्जन ।
सुनत रहे उपदेश सभामधि बैठे सज्जन ॥
इतने में यह पहुंचि सबै समुदाय गयो हो ।
क्षेम कुशल पश्चात् बैठि शास्त्रार्थ भयो हो ॥
हलधर ओझा पक्ष मूर्त्तिपूजा को लीनो ।
युक्ति प्रमाणनु सहित दयानद खंडन कीनो ॥
ओझा जी निज पक्ष होत निर्बल पहचानो ।
प्रकरण दीनो बदलि विषय मदपान बखानो ॥
प्रबल युक्ति दे कियो मद्य को खण्डन स्वामी ।
तांत्रिक ग्रन्थ निषिद्ध जिन्हें मानत हैं वामी ॥
सोमपान को अर्थ कहो रस फल को जानो ।
सेवन औषधि तुल्य तासु को बुधजन मानो ॥
फेरि निरुत्तर होय पक्ष निज छोड़ो हलधर ।
लक्षण पूछन लगे संन्यासी कहु बुधवर ॥
सत्य शास्त्र अनुसार बताये शीघ्र ततक्षण ।
हलधर जी सो कही कहो तुम ब्राह्मण लक्षण ॥

बगलें झांकन लगे बताये नाहि गये तब ।
बोलन लगे अशुद्ध संस्कृत अटकि हिचकि जब ॥
भाषण त्यागो दिव्य सधे कछु याते अर्थ न ।
भाषा बिचही करो आपनो पक्ष समर्थन ॥
प्रकरण छोड़ो मती करो मतवाद मगन मन ।
निग्रह होतो कहैं आपुकों लखिकें बुधजन ॥
लज्जित होकर बैन कहे हलधर जी ऐसें ।
"प्रकरण" शब्द, प्रकार सिद्ध होता है कैसें ॥
स्वामी उत्तर दियो शीघ्र ही तिनकूं तैसें ।
"प्र" पूर्वक "कृञ्" धातु लगे "ल्युट प्रत्यय" जैसें ॥
फिर हलधर जी लगे पूछने हमें सुनाओ ।
है समर्थ "कृञ्" धातु याकि असमर्थ बताओ ॥
स्वामी जी ने तुरत सिद्ध करि शब्द बतायो ।
महाभाष्य को लेख तासु ऊपर बतलायो ॥
हलधर लागे कहन चकित ह्वै अस्त व्यस्त यों ।
जैसो है यह लेख कथन मेरो जानो त्यों ॥
स्वामी हंसि कर वचन कहन उनसों यों लागे ।
रोम बराबरि नाहिं आपु हैं उनके आगे ॥
जो है यह अभिमान तासु को प्रतिफल पेखो ।
किस की संज्ञा कलम सुनाओ हम को लेखो
हलधर ओझा नाहिं दियो फिर उत्तर ताको ।
सभा गई सब जानि जितिक विद्या ही वाको ॥
व्यर्थ करत बकवाद बड़ो अति काल भयो हो ।
दूजे दिन संवाद करन हित समय दयो हो ॥
करी विसर्जन सभा समर्थःपद विधि लिखिकें ।
हार जीत तिहि माहिं सबनु दीनी ही रखिकें ॥
लगे सूत्र सर्वत्र जीत स्वामी की हुइ है ।
अथवा होय विरुद्ध विजय हलधर जी पैहै ।
दूजे दिन के माहिं राति के आठ बजे पर ।
जुड़ी सभा फिरि आय विराजे बहुत विबुधवर ॥

करि दीनी विज्ञप्ति विना कारण जो बोले।
कोलाहल को करे उठे बैठे पुनि डोले॥
सोई निकाला जाय सभा ते बाहिर भाई।
इस पर रखिये ध्यान नियम यह दिया सुनाई॥
गौरीशङ्कर मिश्र एक पण्डित कश्मीरी।
हो करके कुछ क्रुद्ध चले दिखलाय अमीरी॥
स्वामी जी गत राति प्रतिज्ञा को बतलाकर।
महाभाष्य दिखलाय सूत्र सर्वत्र लगा कर॥
स्वामी निर्णय अर्थ पण्डितनु से यह बोले।
सत्यधर्मयुत कहो वचन निर्पक्ष अमोले॥
जगतनाथपरसाद सभा में कहा पुकारी।
झिझकत हो अब कहा कहो करि सत्य अगारी॥
इस पर सबने कहा पक्ष हलधर का हारा।
यही विवस्था पत्र समझिये आप हमारा॥
हलधर आंखों बीच अंधेरी छाय गई ही।
मूर्छा आने लगी साथ किनु साधि लई ही॥
हलधर होय निराश कानपुर चले गये थे।
वचन मात्र सत्कार काहु ने नाहिं किये थे॥
जगतनाथपरसाद फ़र्रुख़ाबाद निवासी।
जगे ओस में बैठि अन्हाये पानी बासी॥
याते कछु बीमार दूसरे दिन सुनि पाये।
हलधर दिये हराय उननु चेटक दिखलाये॥
ओझा यह भय मानि सेठ सो मिलने आये।
मिथ्या देत कलंक वृथा के दोष लगाये॥

॥ दोहा ॥

विजय फ़र्रुख़ाबाद करि स्वामी कियो पयान।
सिंही रामपुर ठहरि निशि चाले होत विहान।

॥ छन्द ॥

गये जलालाबाद विप्र ने जोति दये हैं।
भोजन भये तैयार बुलाने आय गये हैं॥

जो घर खाते अन्न फेरि क्यों ऐसे फिरते ।
हँसि स्वामी यों कही भला क्यों यहां ठहरते ॥
आप हमारे लिये यहां पर ही ले आवें ।
क्षुधा मिटावें तुरत आपके सनमुख खावें ॥
आप कही सो ठीक बनाया भोजन कच्चा ।
स्वामी हँसि यों कही लाइये कच्चा पक्का ॥
कछुक आदमिन कही विस्तरा देयं लगाई ।
गङ्गारज पर सोय इँट सिर तरे लगाई ॥
उठे यहांते भोर जाय कन्नोज सिधाये ।
द्विज गुलजारीलाल हरीशङ्करजी आये ॥
मूर्ती पूजा विषय बहुत दिन तिन्हसु चलायो ।
अन्त मानि कर हार पक्ष वैदिक मन भायो ॥

* * *

कनवज दीनी छोड़ि बिठूरहि देखो जाई ।
ग्राम मदार मकाय कानपुर सुरति लगाई ॥
वर्षा के आरम्भ घाट विश्रान्त कानपुर ।
आसन दिये जमाय कियो उपदेश डाट कर ॥
स्वामी जी की ख्याति प्रथमते फैलि गई थी ।
नगर फ़र्रुख़ाबाद माहिते अधिक भई थी ॥
सुनिबे को उपदेश हज़ारों मनुष आवते ।
प्रश्नोत्तर करि अधिक लाभ आनन्द पावते ॥
हृदयनरायण विप्र आदि श्रद्धालू बहुजन ।
स्वामी जी के निकट बैठते दिन भरि सज्जन ॥
सावन में शिवलिंग पूजि स्वामी ढिग आवें ।
पूछत देयं बताय बेल के पात चढ़ावें ॥
स्वामी हँसियों कहैं जंट को क्यों न खवाये ।
भरि जातो ता उदर काम को करत सवाये ॥
मेगजीन ही वहां कबहु सरकार बहादुर ।
रहैं सिपाही तहां राति दिन चौ पहरे पर ॥

बत भैरव ने आय आपनो फेरो कीनो ।
पहिरे वाले जाय टीक तब उनको दीनो ॥
ऊपरते दियो पटकि गिरो धरनी पर आई ।
पहिरो कीनो बन्द न भेजा उते सिपाई ॥
स्वामी ने समझाय एक दिन सबै सुनाया ।
निद्रा देवी आय सिपाई धरनि गिराया ॥
हम विरुद्ध नित कहें फेंकि क्यों नाहिक देते ।
सहजहि टंटा काटि जगत् में जस नहिं लेते ॥
थोड़े दिन पश्चात् बाढ़ गंगा की आई ।
भैरव दीने डाय गई ले तिन्हैं बहाई ॥
स्वामी जी सें मिलन सेठ दुर्गाप्रसाद जी ।
कही कथा सब आय पुराणिक मत विवाद की ॥
साहू पन्नीलाल छोड़िदई मूरति पूजा ।
एक वेदपथ गह्यो नाहिं कछु सूझत दूजा ॥
एक दिना की बात पुजारी ने यों आके ।
कपड़ा मांगे गरम शरद ऋतु निकट बताके ॥
झिड़क सेठने कहा वृथा तुम क्यों बकते हो ।
झूंठे देकर लोभ देश को क्यों ठगते हो ॥
जो ठाकुर जगदीश ताहि नहिं शरदी आवे ।
सदा एक रस रहै सतावति नाहिं न तावे ॥
ठाकुर हमरो वही जाहि जाड़ो नहिं लागे ।
अगिनी देउ जराय जाय पाथर के आगे ॥
सुनि कर सब हँसि पड़े जुक्ति जो सेठ कही थी ।
प्रतिमा श्रद्धा घटी तनक जो कछू रही थी ॥
स्वामी को उपदेश कानपुर में अति बाढ़ो ।
कुपथ पंथ को रोग नगरते बाहिर काढ़ो ॥
प्रतिमा दीनी फेंकि भले ते कंठी तोड़ी ।
सम्प्रदाय मतत्यागि प्रीति वैदिकमत जोड़ी ॥
पंडित जी शिवराम मूर्ति शिवजी की लेकर ।
पीसन लागे भांग मसाला नितिप्रति उठकर ॥

बूढ़े पंडित आय वहां उपदेश जु सुनते ।
प्रायः मानत यही सत्य स्वामी जी कहते ॥
छोड़ी कैसे जाय मूर्तिपूजा है रोज़ी ।
हैं ब्रह्मा औतार छोड़िदें खंडन तोजी ॥
उन्हीं दिनों वहां नाम ब्रह्मानंद ताको ।
आयो साधू एक विदित करि दीनो साको ॥
अंगरेज़ों ने भेजि दयानन्द को दीना है ।
रूप बदल कर भेष सन्यासी कर लीना है ॥
व्याख्यानों को सुने भ्रष्ट सो हो जावेगा ।
ईसाई बनि जाय धर्म अपना खोवेगा ।'
अवसर न उसका हुआ काहु नहिं कहना माना ।
स्वामी जी के पास रुका नहिं आना जाना ॥
स्वामी जी व्याख्यान एक दिन दीनो ऐसो ।
वर्णन कीनो सकल भेद जानत है जैसो ॥
चक्रांकित यों कहैं मांसते घृणा बड़ी है ।
तप्त मुद्रिका करैं भूंज डारैं चमड़ी है ॥
ताकूं पानी मांझ बुझा कर चेलनु प्यावैं ।
उसको अमृत पान नाम धरि महिमा गावैं ॥
समझो सुधजन लोग कहो यह करनी कैसी ।
करियो न्याय विचार सुनी सब बनी जैसी ॥
पूछी ब्राह्मण एक मुक्ति कैसे हो जावे ।
करूं कौनसा कर्म फंद जगते छुट जावे ॥
स्वामी उत्तर दिया नित्यप्रति सन्ध्या कीजै ।
वैदिक मारग गहो दान विद्या का दीजै ॥
मूर्ती पूजा त्यागि एक ईश्वर को मानो ।
या विधि साधन करो मुक्ति को यह मग जानो ॥
कही विप्र दुख पाय न छूटे प्रतिमा पूजन ।
लड्डुआ पूरी कहां मिले फिर ऐसो भोजन ॥
स्वामी जी ने कही चोर चोरी करि लावे ।
सुजन सरहली बैठि कहां सो महिमा पावे ॥

सत्य ग्रहण के लिये सदा उद्यत ही रहिये ।
जानि परे जो झूंठ त्याग करना ही चहिये ॥
यदि खोटा कुछ काम भूल से करते आये ।
होवे ठीक प्रतीत उसहु का करता जाये ।
गुरुनारायण विप्र प्रेम धर अपने रारुत ।
उनसे स्वामी कही धर्म की कहा सनातन ॥
इक दिन आकर एक मसखरा रहस करी थी ।
स्वामी उत्तर सुनत सबनु में हँसी परी थी ॥
लगातार उपदेश सुनत खलबली मची थी ।
पौराणिक मत हिलो सम्प्रदा नहीं बची थी ॥
गुरुप्रसाद जी शुक्ल नगर में बड़े धनिक वर ।
स्वामी का उपदेश सुनत हे बहुत ध्यान धर ॥
विप्र तिवारी धनिक दूसरे तहां कहावैं ।
स्वामी के व्याख्यान सुनन कूं बहुधा आवैं ॥
स्वामी जी समझाय कहन यों उनसे लागे ।
दूजो नाहिं धनाढ्य दीखतो तुम्हरे आगे ॥
लाखन रुपया वृथा आपने दिये लगाई ।
विद्याशाला कहूं एकहू नाहिं बनाई ॥
ब्राह्मण होते विदुष आपको यश रहि जातो ।
धर्म फैलतो देश वेदमग आश्रय पातो ॥
ईश्वर छोड़ि पखान बहुत से आप पुजाये ।
बिन सोचें बिन बूझ कहा फल यामें पाये ॥
वे पौराणिक लोग आपनी हेठी जानी ॥
शिक्षा दई महान् उनने उलटी मन ठानी ॥
लागे निश्चय करन कोऊ विधि ऐसी कीजे ।
स्वामी जी के लिये उलहना जाविधि दीजे ॥
हलधर ओझा क्षुभित खारखायें बैठा था ।
इसको हुआ ज्ञात शुक्ल जी पर पहुंचा था ॥
इत उतसे दस बीस आदमी और मिले आ ।
पौराणिक पण्डितनु उभारा यजमाननु जा ॥

छूजो सुनिये और दियो स्वामी विज्ञापन ।
मूर्ति खण्डन कहं करो कोऊ आपापन ॥
जितने अष्टपुरान सबों का खण्डन करता ।
गप्प आठ की पोल खोल कर आगें धरता ॥
जिसको हो अभिमान अगाड़ी मेरे आवे ।
मूर्ती पूजा विरुद्ध वेद से करि दिखलावे ॥
होगी वेद विरुद्ध यदपि पुस्तक जो कोई ।
सो नहिं मानीजाय कहो वह कैसी होई ॥
सार बात यह एक पुरानी जुरे सब आये ।
जौलाई इकतीस दिवस निश्चय करिपाये ॥
भैरवघाट नगीच फ़र्श सबरे में बिछ गये ।
साहूकार रईस लोग अफसर सब डटि गये ॥
अहलकार सरकार ज़िले के सबही आये ।
मिष्टर डबल्यू पैन बहादुर आप सुहाये ॥
दुहू पक्षते अलग संस्कृत के विद्वाना ।
उभय पक्ष यह सोचि सभापति अपना माना ॥
पचास हज़ार इकट्ठे तहां लोग सब ।
उत्तम पुलिस प्रबन्ध चहूं दिश करि राखो जब ॥
बारह पै द्वै बजे सभापति आज्ञा दीनी ।
हलधर ओझा बात आपनी प्रारम्भ कीनी ॥
स्वामीजीप्रति चिते कही यों सबै सुनाकर ।
विज्ञापन को लेख ग़लत तुम दियो बनाकर ॥
यह सुनि उत्तर दियो वृथा क्यों समय बितावो ।
विज्ञापन के मांहि अशुद्धि एक न पावो ॥
यदि शंका कछु होय फेरि काहू दिन आना ।
समाधान करि देउं व्यारथाते सुन जाना ॥
चर्चा कीजे वही जासु हित सभा जुरी है ।
व्यर्थवाद में कहा विकलता जान पड़ी है ॥
ओझा जी जब प्रश्न दूसरो यह कर दीना ।
मूर्तीद्रोन बनाय व्यसन विद्या का कीना ॥

वाही को गुरु मानि मनोरथ अपनो पायो ।
भारत में यह लेख व्यास ते कवि कर गायो ॥
इसको सुनिकरि फेरि आपु स्वामी जी पूछा ।
इस में आज्ञा कहां बताई मूर्त्ती पूजा ॥
भील कुपढ़ अंगली अबुध और मूर्ख गँवारा ।
ताकू विदुषन लिखा करो विद्वान् विचारा ॥
ऋषि मुनि हो वह नाहिं आप नहिं करी प्रेरना ।
यह क्या दिया प्रमान नाहिं कछु याहि हेरना ॥
अभिप्राय यह होय उसे ऐसा करने से ।
विद्या आई धनुष गुरु प्रतिमा वरने से ॥
सो यह मानन जोग नाहिं है विदुषजनन को ।
करो घोर अभ्यास मिलो फल तासुर मन को ॥
वर्तमान में करें चांदमारी को जैसें ।
भील कियो जो कृत्य मानिये सोऊ ऐसें ॥
वैदिक नाहि प्रमान आर्ष उपदेशहु नाहीं ।
याकूं माने कौन समझि देखो मन माहीं ॥
थोड़ी बिरियां ठहरि प्रश्न तीजा यह कीना ।
प्रतिमा पूजन मने वेद में कहूं न कीना ॥
स्वामी उत्तर दिया सुनो तुम ध्यान लगाकर ।
पूर्व दिशा को जाउ कार्य है एक वहां पर ॥
पश्चिम उत्तर और दिशा दक्षिण के ताईं ।
सत्य लीजिये मानि अवशि कर दीनी नाईं ॥
वेदन माहिं निषेध मूर्त्ति पूजा का बहुधा ।
तुम को कबहू नाहिं मिली देखन को सुविधा ॥
ऋचा सुनाईं बहुत वेद चारों की चुनकर ।
चुप के धोखा भये अर्थ औ युक्ति सुनकर ॥
मिष्टर चैन अजंट तहां पर परचय लीनो ।
स्वामी के कर एक संस्कृत पत्रा दीनो ॥
पढ़िये इस को आप और आशय कहि दीजै ।
सो सुनाय फिर कही पूछि कछु औरहु लीजै ॥

साहब दूजा प्रश्न किया मानत हो किस को ।
स्वामी उत्तर दिया एक ईश्वर है जिसको ॥
यह सुनि मिस्टर वैन विह्वलथा विजय देखकर ।
स्वामी ओर निहारि मुसकराये सलामकर ॥
सभा विसर्जन हुई सभापति के उठते ही ।
सब उठि कर चल दिये विजय स्वामी सुनते ही ॥
पौराणिक हरसाय पुकारन ऐसें लागे ।
स्वामी जी गये हार आज हलधर के आगे ॥

॥ दोहा ॥

पौराणिक चूके नहीं करी शरारति एह ।
आठ रुपये के दाम ले बरसायो तहां मेह ॥

॥ छन्द ॥

पैसा ऊपर फेंकि रुपैया आठ के ।
प्रागनरायण दिये लुटा मधि बाट के ॥
गाड़ी में बिठलाय उड़ाते चल दिये ।
हलधर की जय बोलि पहुंच घर पै गये ॥
पंडित गुरुपरसाद दूसरे दिन गये ।
मालिक शोलेतूर ताहि कहते भये ॥
लिखिये खबरि बनाय हारि स्वामी गये ।
हलधर ओझा जीति सभा तिनकूं लये ॥

॥ दोहा ॥

शोलेतूर अखबार के मालिक ने समझाय ।
कही खबरि झूठी लिखें जुरमानो है जाय ॥

॥ छन्द ॥

जो कुछ होगा ताहि भुगति हम आपुहि लेंगे ।
तुम पर नेकहु वार आमने नाहिन देंगे ॥
जो भी देना पड़े पास अपने से देंगे ।
नातर अभी छुड़ाय ठाम अपना हम लेंगे ॥
मालिक शोलेतूर बड़ा कमज़ोर जीव था ।
लिख डाला बे जोड़ अकल का भी अजीब था ॥

सब को था मालूम कि हलधर ओझा हारे ।
लक्ष्मण शास्त्री अजय कहैं आपनी विचारे ॥
आदर शोलेतूर उठ गया बहुत जगत् से ।
ग्राहक कम होगये झूंठ पढ़ि उसी वक्त से ॥
रहा सहा अभिमान पौराणिक चूर हो गया ।
साधारण का चित्त पंच प्रतिमा से हट गया ॥
पाथर के शिवविष्णु फेंकि गंगा में दीने ।
ऐसी हलचल देखि विज्ञापन हलधर दीने ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य छांड़ि कुल धर्म आपना ।
देवन देत बहाय जुरी यह करी कल्पना ॥
मंदिर है कैलाश वहां मूर्त्ती पहुंचा दें ।
हम लेंगे उठवाय अनुचरों से कहवादें ॥
गंगा फेंकें ताहि पाप है भारी इस में ।
धर्म जानि लें मानि देत हैं उन को किस में ॥
किस को है सामर्थ्य सत्य को रखे छिपा कर ।
वोही शोलेतूर लिखन यों लगा उजागर ॥
संन्यासी सत्सङ्ग पाय कर हिन्दू भाई ।
मूर्ती दरिया गङ्ग फेंकते हैं नित जाई ॥
ऐसा करना भला वेद ने नाहिं बताया ।
हलधर ओझा एक विज्ञापन माहिं लिखाया ॥
मिष्टर डबल्यूवैन एक चिट्ठी लिख दीनी ।
स्वामी की भई विजय विवस्था अपनी दीनी ॥

॥ दोहा ॥

बहुत हिलाई कानपुर स्वामी जी महराज ।
पौराणिक दल तोड़िकै कियो पयान जु आज ॥

इति षष्ठम मयूख:

अथ सप्तम समूलः

॥ दोहा ॥

काशी जी को चलि दियो मन में यही विचार ।
वहां जाय कर करहिंगे वैदिक धर्म प्रचार ॥

॥ चौपाई ॥

मगविश्राम अधिक नहिं कीया । नहिं उपदेश कहूंपर दीया ॥
दिनप्रति मञ्जिल करते जाहीं । द्वैदिन कहूं ठहरते नाहीं ॥
तिथि इकईस नितम्बर मासा । रामनगर जा किया निवासा ॥
तहां रामलीला के मेला । बड़ो धूम ते ह्वैरह्यो मेला ॥
भ्राता लघु काशी नरेश के । जे उत्साही थे हमेश के ॥
दूर दूर के दर्शक आवें । सो मेला को दृश्य बढ़ावें ॥
वेद धर्म का किया प्रचारा । स्वामी दियो बजाय नगारा ॥
समस नगर में भई अवाई । सारे मेला धूम मचाई ॥
पण्डित और शिष्य हू इनके । चकित होंय सुनि उत्तर जिनके ॥
छिपिके बहुत रईसहु आवें । सुनि उपदेश मगन हो जावें ॥
हृदय प्रभाव सत्य का होई । यद्यपि प्रकट करै नहिं कोई ॥
अंगरेजीदां जितने आवें । शान्ती दायक उत्तर पावें ॥
स्वामी के अनुचारी बन कर । करें प्रशंसा अति सराहकर ॥

॥ दोहा ॥

अष्टादश शत साठि नौ, सन ईसा कों जान ।
अक्टूबर बाईस तिथि, बुध जन करो प्रमान

* * *

दयानन्द जी जाय बाग आनन्द मझारी ।
आसन दियो लगाय बनारस सबै प्रचारी ॥
एक दिना महाराज भरतपुर और रीवांके ।
साथ माहिं अंगरेज और अधिपति नरवां के ॥
बातैं ऐसी करी पास स्वामी जी जाके ।
ईश्वर मानत नाहिं नाहिं गुण मानत वाके ॥

स्वामी जी समझाय प्रश्न युक्तिन सों दीनो ।
अन्त मानना पड़ा हृदय सों आदर कीनों ॥
ये रईस उन दिनों बनारस कालिज पढ़ते ।
नास्तिकता के भाव चित्त में आय उमड़ते ॥
सुनि सुनि कै उपदेश विदुष घबराय गये हैं ।
पौराणिक मत हिलो हृदय सन्देह छये हैं ॥
पण्डित अपने शिष्य भेज कर प्रश्न करावैं ।
स्वामी उत्तर सुनत चुप्प ह्वै कर रहिजावैं ॥
शास्त्री राजाराम शिरोमणि काशी माहीं ।
लिख कर भेजा प्रश्न एक दिन तिनके पाहीं ॥
स्वामी का मन्तव्य बांच घबराय गये थे ।
बोले बचन कठोर सभ्यता त्याग गये थे ॥
कहि दोउन से यही छुरी आगे रखि लेवैं ।
हमको लेयं बुलाय फेर उत्तर सुन लेवैं ॥
समाधान करि दिया नासिका काटि जुलैंगे ।
अधिक और क्या कहैं प्रसादी ऐसी देंगे ॥
शास्त्री जी के बचन सभ्यपन भरे अमोले ।
स्वामी जी हँसि कही विदुष ह्वै यह क्या बोले ॥
ह्वै छुरिका धरि लेयं पराजित जो होजावे ।
सोई अपने हाथ काटि के नाक कटावे ॥
काशी के विद्वान् शास्त्री और महज्जन ।
भीड़ भाड़ नित रहै प्रति समय आवें सज्जन ॥
वेदधर्म सिद्धान्त सत्य को करनो मण्डन ।
सम्प्रदाय मत पोल खोलि कर करनो खण्डन ॥
स्वामी निर्भय होय पक्ष पौराणिक तोड़ो ।
देत गरजि ठय.ख्यान सबन को मुखड़ा मोड़ो॥

॥ सोरठा ॥

काशी अधिपति पास कहला भेजा या यही ।
शंका होवे खास समाधान करि लीजिये ॥
अथवा विदुष बुलाय निज समक्ष बैठाय कर ।
वार्तालाप कराय सत्य असत्यहि जांचिये ।

॥ चौपाई ॥

तुम नरेश काशी कहलावो । राजधर्म के नियम निभावो ॥
वैदिक धर्म सनातन जानो । मन, वच, कर्म, ताहि को मानो ॥
सुनी नृपति स्वामी की बानी । उलटी बात हिये में ठानी ॥
जो प्रसिद्ध काशी में बुधवर । नृपति बुलाय लिये सब चुन करि ॥
सभा जोरि मन्तव्य सुनायो । समाचार जैसो कछु आयो ॥
स्वामी से संवाद कीजिये । पौराणिक मत थापि लीजिये ॥
महाराज के जो लघु भ्राता । कहन लगे सब सों सो बाता ॥
जैसे बने करो विधि सोई । प्रतिमा पूजन साधन होई ॥
महाराज काशी तब बोले । वचन सर्वप्रिय अधिक अमोले ॥
यदि स्वामी खण्डन नहिं करते । तो हम उन्हें गुरु निज वरते ॥
वेदशास्त्र हम जानत नाहीं । उतनी बुद्धि न हमरे माहीं ॥
जो उनसे करिहैं संवादा । तो करिहैं खण्डन अपवादा ॥
वृथा हमारा खर्च कराते । लाखों रुपया नित्य लुटाते ॥
स्वामी से शास्त्रार्थ करो अब । मूर्ती पूजा सिद्धि होय जब ॥
तब हम जानैंगे पण्डिताई । नातर बड़ी खराबी आई ॥
यह सुनि कर काशी के पंडित । बड़े कहावैं बुधि के मण्डित ॥
सो सब सोच समुद्र मझारी । गोता खान लगे बिनु वारी ॥
स्वामी बारम्बार पुकारैं । वेद प्रमाण मांगि ललकारैं ॥
पुस्तक बहुत पढ़े हम देखे । वेद शास्त्र कबहू नहिं पेखे ॥
यदि अवकाश तनक मिल जाई । तो लावैं कछु बात बनाई ॥
मूर्ती पूजा विषय विचारी । धरैं आय लिखि आप अगारी ॥
दयाभाव करि आज्ञा दीजै । इतना कहा मानि प्रभु लीजै ॥

॥ सोरठा ॥

महाराज ह्वै खिन्न तमकि बैन ऐसे कहे ॥
सब की बुद्धी छिन्न आज जानि हमने लई ॥
निश्चय तुम मुनि लेउ शास्त्रार्थ करनो पड़े ॥
उत्तर हमको देउ पन्द्रह दिन के भीतरे ॥

॥ दोहा ॥

पन्दरह दिन तक सोचि कर छलको सतो बनाय ॥
तब भेजी इक खबरिआ मन में खूब ढृढ़ाय ॥
भेष कुभेष बनाय एक पण्डित जी आये ।
स्वामी जी के पास संदेसो या विधि लाये ॥
कौन कौन से ग्रन्थ प्रमाणिक आप मानते ।
सो दीजै बतलाय नाहिं हम उन्हैं जानते ॥

॥ छन्द ॥

स्वतः प्रमाण सुवेद अन्य ऋषि कृत है जेते ।
परतः जिन्हैं प्रमाण मानते बुध जन तेते ॥
हाकिम लोगनु सुनो कि स्वामी जी से भारी ।
होयेगा संवाद करेंगे मूर्तिपुजारी ॥
राजा काशी पास प्रकट इच्छा यह कीनी ।
देखि करैं हम लोग सभा ऐसी जो कीनी ॥
सभा माहिं अंगरेज़ आवते नाहिं सुहाने ।
याते दीया टालि व्यर्थ के बना बहाने ॥

॥ छन्द ॥

दयानन्द मार्तण्ड दूसरे जग के माहीं ।
तिन्हु बहुहिं खद्योत चमक दिखलानी चाही ॥
सत्य अगाड़ी भला झूंठ की कहां चलेगी ।
पातिक करतें मुक्ति कौन को कहो मिलेगी ॥
मारन धर्महि चहै सुतो आपहि मरि जावे ।
रवि प्रकाश को धूलि कौन विधि ताहि दबावे ॥
द्वै और द्वै को योग चारि सब कोई जाने ।
झूंठो करे जहान तऊ जो पांच बखाने ॥
डालो चहैं प्रभाव आपनो दिखा अडंबर ।
छिन पर उड़नो चहैं छूनने के हित अम्बर ॥
सोई गति करि रहे बनारस के अधिवासी ।
रह्यो न हृदय विचार बुद्धि जिन की सब नासी ।

सजि सजि भेष बनाय यान चढ़ि चढ़ि के धाये।
दिखला के ऐश्वर्य्य करो चाहैं मन भाये॥
सोलहे नौम्बर माहि बाग आनन्द मंझारी।
पौराणिक गये पहुंचि बनारस के तरफ़ारी॥
लगभग साठि हज़ार भयो एकत्रित जनदल।
बहुधा निपट नदान जिन्हैं नहिं तनक बुद्धिबल॥
काशी के कुतवाल पुलिस के इंसपेक्टर।
शास्त्रार्थ के दिवस कियो प्रबन्ध आन कर॥
उच्च तीनि मंचान तहां पर दिये बनाई।
स्वामी, पंडित, जहां नृपति हू बैठें आई॥
काशी के नर नाह आय सब पलटि दियो हो।
निज इच्छा अनुसार दौंदलौं डालि दियो हो॥
बैठे पंडित लोग चहूं दिश घेर लगाके।
तिन के मधि महाराज अगाड़ी बहुतहि जाके॥
स्वामी जी के पास न काहू आने देते।
करि हीया संकेत रोकि मारग में लेते॥
स्वामी जी कुलवाय एकको आप लिया था।
करि पंडितनु विवाद उन्हैं उठवाय दिया था।
बुरा लगा व्यवहार समझि स्वामी जी लीना।
टंटा करना चहैं ठीक निश्चय करि लीना॥
संक्षेप रूप यह काव्य कहा मैं याहि बढ़ाऊं।
वार्ता जो कुछ भई ताहि पाठकनु सुनाऊं॥
काशी माहिं प्रसिद्ध बड़े पंडित हैं जेते।
सबरे आये सिमिटि कौन विधिते गिनिलेते॥
याको जो वृत्तान्त सविस्तर सुननो चाहो।
तो काशी शास्त्रार्थ नाम पुस्तक मंगवाओ॥
मूर्ती पूजा पक्ष प्रथम पंडितनु चलायो।
कारण कर्ता बहुरि छोड़ि कै पक्ष उठायो॥
स्वामी उत्तर दियो कहो पक्षान्तर त्यागो।
मूर्ती पूजा सिद्धि करो क्यों इत उत भागो॥
घंटा चारि बितीत व्यर्थ योंहीं करदीने।
स्वामी जी ने घेरि फेरि मुनमुख करलीने॥

कही बहुत ललकार मूर्ति पूजा को साधो ।
त्यागि वितंडावाद पक्ष अपनो ही बांधो ॥
भयो विपक्षी चुप्प अन्त संध्या है आई ।
छयो अंधेरो आय नायं कछु देत दिखाई ॥
विप्र माधवाचार्य्य कछुक पत्रा ले कर के ।
पुस्तक है यह वेद कहा यों आगें धरिकें ॥
इस में है यह लिखा यज्ञ पूरन जब होई ।
दसवें दिना पुरान सुने यजमान जु सोई ॥
स्वामी जी से प्रश्न किया अतलाओ इसको ।
क्या पुरान का अर्थ कहा क्यों ऐसा उसको ॥
स्वामी जी ने कहा संस्कृत बांचि सुनाओ ।
फिर उसका सम्बन्ध देखकर उसे मिलाओ ॥
स्वामी विशुद्धानन्द पृष्ठ सब उठा लिये थे ।
स्वामी जी के हाथ ऊपरे राख दिये थे ॥
दयानन्द जी फेरि उन्हें ही बगदा करिकें ।
कहा आपही पढ़ें दीजिये समझा करिकें ॥
कही विशुद्धानन्द नहीं मैं चश्मा लाया ।
पढ़ें आपही इसे समय सन्ध्या हो आया ।
हठके कारण पृष्ठ आप स्वामी जी लीया ।
अन्धकार हो रहा रोशनी को नहिं दीया ॥
पौराणिक इक उठा चालबाजी कर लाया ।
रद्दी बत्ती एक जलाकर झट ले आया ॥
लगे देखने पृष्ठ रोशनी हिलने लागी ।
तीन नर्फ थी बन्द धूंधली होने लागी ॥
इतने पर दो मिनट समय भी नहीं लगाया ।
साधु विशुद्धानन्द तभी बड़बड़ा उठाया ॥
खड़े विशुद्धानन्द हो गये सभा छोड़के ।
वृथा झूंठ को बोल चले मुख आप मोड़के ॥
अधिक नहीं अवकाश हमें अब यहां रहनको ।
तुमको नाहिन बोध शास्त्र के लेख पढ़न को ॥

हारिगये शास्त्रार्थ सभा में मारन लागे ।
महा अनर्थ प्रचारि दिये अलि निपट अभागे ॥
स्वामी जी ने देखि दृश्य यह बड़े ज़ोर से ।
है असभ्य व्यवहार कहा यों शब्द घोर से ॥
सुने वहां पर कौन धूर्तता फैलादी थी ।
करिके अंधाधुन्ध अज्ञता दिखला दीयी ॥
इंसपेक्टर पुलिस कही राजा से ऐसी ।
हठधर्मी हो रही आपके आगे कैसी ॥
मेरा किया प्रबन्ध आपने पलट दिया था ।
किया राज्य का मान ध्यान कुछ नहीं किया था ।
वृथा ऊंठ सुनि रहे आप राजा कैसे हैं ।
दयानन्द गये जीति बकत जैसे तैसे हैं ॥
यह सुनि के शरमाय हाथ में हाथ डाल कर ।
अपने साथ लिवाय चले राजा जी बाहर ॥
मग में कहने लगे प्रयोजन कहा आप को ।
सोने दो सुख नींद मिटा कर महाताप को ॥
शत्रु विजय के हेतु सभी कुछ करना चहिये ।
मूर्ती पूजा पक्ष किसी विधि रहना चाहिये ॥
कहि रघुनाथप्रसाद इंसपेक्टर यह दीना ।
अपयश महा अपार शीस सबने धरि लीना ॥
सत्य छिपाये छिपा कभी यह क्या कहते हैं ।
पाप किये ते विजय कौन को जग सुनते हैं ॥
इसके पीछे समाचारपत्रों ने लिक्खा ।
पक्ष विपक्ष विचार बड़ी युक्ती से रक्खा ॥
छिपा सके नहिं सत्य विपक्षी सम्पादक हो ।
निर्बलता स्वीकार करि जु लो निर्विवाद जो ॥
पौराणिक मत ढोल पोल सब निकल गई थी ।
विद्वानों के हृदय वेद की छवी भई थी ॥

* * *

स्वामी तीजी बार गई सोलहे को काशी ।
लाला माधवदास बाग में भये प्रवासी ॥

खण्डन मत अद्वैत भयो विधि अबके कीन्हे ।
अहं ब्रह्म का खण्ड ताहि काशी ने दीनो ॥
पुस्तक एक बनाय भेद सब दिये बताई ।
लाइट प्रेस छपाय नगर में ताहि बँटाई ॥
२ ७ ८ १
युगल, ऋषी, वसु, इन्दु, ईसवी मार्च महीना ।
काशी चौथी बार आय कै खण्डन कीना ॥
लाला माधवदास खास उनके जे भ्राता ।
थे मधुसूदनदास बाग जिन को विख्याता ॥
स्वामी तामें ठहरि पण्डितन को ललकारा ।
पौराणिक जड़ मूर्ति पूजना ताहि उखारा ॥
पञ्चम विरियां आप बनारस माहिं पधारे ।
युगल निधि वसु औ इन्दु ईसवी जून मँझारे ॥
करत निरीक्षण रहे पाठशाला के ताईं ।
जाको पहिले आप यहां पर गये बिठाईं ॥
प्रथम बार प्रारम्भ व्याख्या भाषा माहीं ।
दयानन्द ने किया सभा में बैठि यहां हीं ॥
निज विचार को कहा आज हम भाषा बोलैं ।
भाषा में व्याख्यान कहा अति ललित अमोलैं ॥
माधवप्रसाद से कहा नित्य मूर्ती का पूजन ।
सङ्गति हमरी पाय आप को नहिं कछु सूझत ॥
वृथा पुष्प बहु टूटि आप के गृह को जाते ।
नहिं वायू की शुद्धि कछू भी करने पाते ॥
गुलदस्ता बनवाय नहीं कोठी रखवाते ।
पाथर पर धरवाय व्यर्थ योंही फिंकवाते ॥
लाला जी पुनि कही हमारी विनती सुनिये ।
मूर्ती पूजक नहीं आप यह निश्चय गुनिये ॥
पुष्प भेजना बन्द यदपि गृह माहीं करदूं ।
दो रुपये का खर्च नित्य अपने शिर धरलूं ॥
बड़ी हँसी की बात हँसे स्वामी जी सुन कर ।
कठिन दशा है बड़ी कहैं क्या अधिक तहां पर

समारोह के साथ पहुंच बँगला सबजज के ।
दो तीनक व्याख्यान दिये थे बड़े गरज के ॥
करसय्यद के साथ कमिश्नर साहब से मिल ।
कीनो वार्त्तालाप आपने खूब खोलि दिल ॥
स्वामी जी से भेंट करन को काशी नरवर ।
रामनगर ले आय बिराजे भवन नदेसर ॥
निजका भेजा यान प्रार्थना दई कराई ।
करें क्षमा अपराध दरश मोह देवें आई ॥
स्वामी जी महाराज सवारी फेरि दई थी ।
दूजे दिन नरनाह दुबारा भेज दई थी ॥
अपने सहचरवर्ग साथ में दिये पठाई ।
करि सत्कार यथार्थ लेगये साथ लिवाई ॥
स्वागत राजा किया पूजि आसन बैठारे ।
क्षमा हेतु अपराध जोरि कर बचन उचारे ॥
जिस का चाहें करें आप खण्डन मत माना ।
नहिं मेरा सम्बन्ध मानता सबै समाना ॥
अन्त एक मन सिद्ध पदारथ भेंट किये थे ।
स्वामी जी सो तुरत बांटि सब वहां दिये थे ॥
रसनिधि बसु औ इन्दु ईसवी मास नवम्बर ।
उत्तम गिरि के बाग जाय कर टिके धुरन्धर ॥
छटवीं बिरियां जाय हिलाया काशी जी को ।
उत्तर काहु न दिया आय कर स्वामी जी को ॥
पट्ऋषि वसु शशि माहिं सातवीं बार पधारे ।
विज्ञापन छपवाय लगाये द्वारे द्वारे ॥
ईसाई महमडन तथा सब मत के नेता ।
शङ्का करें निवृत्त दिया सब ही को चेत ॥
देशान्तर के माहिं भेजि विज्ञापन दीने ।
सबरे भारत मध्य काहु करवट नहिं लीने ॥
करनल जे अलकाट अमृषा देश निवासी ।
मेडम बलवस्थिती रूस की योगिनि खासी ॥
स्वामी जी से मिलन बनारस माहीं आये ।
बंगला में अति निकट तिन्हें सादर ठहराये ॥

होवेगा व्याख्यान छापना यह दे दीनो ।
बीस दिसम्बर तिथी तासु हित निश्चय कीनो ॥
ताही अवसर कछुक कथन अलकाट करेंगे ।
मतवादिनु की पोल खोल सामने धरेंगे ॥
यह विज्ञप्ति देखि सम्प्रदायक मत हालो ।
नगर खलबली मची सबनु के पड़ि गयो लालो ॥
एक निवेदन पत्र सबन मिलकर लिखवायो ।
गये कलक्टर पास झूठ कहि के समझायो ॥
स्वामी का व्याख्यान निवारन नाहिं होयगा ।
तो अशान्ति भय बड़ा उपद्रव खड़ा होयगा ॥
बिना परीक्षा किये मानि प्रस्ताव लिया था ।
निर्बलता दिखलाय रोकि व्याख्यान दिया था ॥
स्वामी का मन्तव्य और निज कहना अपना ।
साहब दिया सुनाय सकल देशन का भ्रमना ॥
स्वामी के व्याख्यान बन्द होने को सुन कर ।
अख़बारों ने किया बड़ा आन्दोलन लिखकर ॥
हलचल फैली बड़ी लाट साहब सुनि लीना ।
आज्ञा का प्रतिवाद कलक्टर साहब कीना ॥
स्वामी जी के पास पत्र यह भेजा लिखकर ।
अपने धर्म विचार प्रकट कीजे पबलिक पर ॥
पूरन आप स्वतंत्र नहीं कछु बाधा डाले ।
करो नित्य उपदेश धर्म अपने को पाले ॥
होन लगे व्याख्यान फेरि तो बड़ी धूम से ।
श्रवण करैं सब लोग आय कर बड़ी झूम से ॥
ताको यह परिणाम हुआ मिलि बहुत सभ्य जन ।
काशी आर्य्यसमाज नींव रखि दई महज्जन ॥
राजा शिवपरसाद जैन मत के अनुयायी ।
निज प्रकृती अनुसार कुटिल गति आनि दिखाई ॥
होय सचाईशून्य देशहित तनक न तामें ।
स्वार्थ खुसामद भरो भाव लेते बहि जामें ॥

जब तक स्वामी रहे बनारस नगर प्रवासी ।
तब तक उनके चित्त न आई कबहुं उदासी ॥
जब स्वामी प्रस्थान आपना कर दीया था ।
सब निज का असबाब रेल पर भेज दिया था ॥
तब स्वामी जी पास एक चिट्ठी भेज पाई ।
उत्तर मांगा आप कुटिलता यह दिखलाई ॥
यद्यपि नहिं अवकाश तदपि उत्तर लिखवाया ।
अधिक पूंछना होय यहां आवें कहलाया ॥
राजा शिवपरसाद रची यह पीछे माया ।
नामवरी निज हेतु प्रकट यह करि दिखलाया ॥
कई वार हम लिखा उनहुं नहिं उत्तर दीना ।
काशी को तजि गये छिपा मुख अपना लीना ॥
सत्य दुरा नहिं सके सबन इँसि यही कहा था ।
राजा जी को बोध शास्त्र का इतना नहीं था ॥
स्वामी जी के जो समक्ष करते संवादा ।
व्यर्थ मारते गल्प वृथा करते अपवादा ॥
स्वामी गये प्रयाग मकर संक्रान्ति कारने ।
मेला होता बड़ा सत्य मारग प्रचारने ॥

॥ दोहा ॥

तिरवैनी गंगा निकट स्वामी कियो निवास ।
भीड़ भाड़ रहने लगी राति दिना तिहि पास ।

॥ चौपाई ॥

पंडित साधु संन्यासी आवें । स्वामी साथ बैठि बतरावें
सहस्रावधि लोगों के ताईं । कियो उपदेश जुमेला माहीं ॥
पंडित शिवसहाय मे लिख कर । टीका वालमीकि के ऊपर ॥
मेला माहिं सुनावन लागे । निज पांडित्य कहैं सब आगे ॥
सो टीका ले आनि दिखाया । स्वामी देखि अशुद्ध बताया ॥
यह सुनि शिवसहाय जी आये । स्वामी जी से आ बतराये ॥

लागे करने वृथा विवादा । ओतन मिलो नेक नहिं स्वादा ॥
स्वामी कहि प्रमाण औ हेतू । दिये दिखाय अशुद्ध निकेतू ॥
सहमि चले उठि तुरत वहां ते । चुप के पहुंचे गये जहां ते ॥
पंडित रामाधीन तिवारी । लगे कहन सर्दी अति भारी ॥
आप नगिन रहते दिन राती । बर्फ पड़े सो नाहिं सताती ॥
स्वामी ने हंसि यों समझाये । शारीरिक बहु नियम सुनाये ॥
नासा नयन खुला मुख रहता । आतप वात शीत सब सहता ॥
सोई दशा हमारी जानो । है अभ्यास सत्य यह जानो ॥
मेला करि मिरजापुर आये । डेरा गंगा तीर लगाये ॥
प्रायः पण्डित आस पास के । औ मिर्ज़ापुर नगर खास के ॥
स्वामी सदुपदेश सुनत हैं । मूर्ती पूजन तुरत तजत हैं ॥
बाबा बालकृष्ण वैरागी । थे साहित्य शास्त्र अनुरागी ॥
टीका करी महाभारत पर । स्वामी दियो अशुद्ध बता कर ॥
संस्कृतशाला बहुत बिठाई । करन निरीक्षण तिन के ताई ॥
एक वर्ष पुनि गंगा तीरे । भ्रमण करो चले धीरें धीरें ॥
चलत चलत पहुंचे डुमरावा । आसन जाकर वहां लगावा ॥
नागा ही थे तहां उदासी । स्वामी तिनके भये प्रवासी ॥
फिरि चलि आरा नगर पधारे । वेद उपनिषिध धर्म प्रचारे ॥
थे वकील हरवंशराय जी । स्वामी तिनकें निकट जाय जी ॥
शास्त्रार्थ भी हुआ यहां पर । चकित भये जु वक्तृता सुनकर ॥
आरे से प्रस्थित हो करके । पटना में पहुंचे जा करके ।
मुंशी एक मनोहरलाला । मावनमल डिपटी तिह काला ॥
मोहनलाल रायसाहब ने । स्वामी ठहराये मिलि सब ने ॥
धर्मप्रचार तुरत करि दीना । सबरा पटना जागृत कीना ॥
पंडित आस पास के आवें । विषय अनेक माहिं बतलावें ॥
प्रसिद्ध पण्डित एक यहां थे । पौराणिक दल बांधि जथाते ॥
स्वामी जी के पहुंचे पासा । वावदूक संग लिये पचासा ॥
करे प्रश्न द्वै चारि अटपटे । उत्तर सुनि ह्वै गये सटपटे ॥
शास्त्रार्थ को छोड़ि अधूरा । उठि चलि दिये पड़ा नहिं पूरा ॥
दुर्गा पाठजु गरुड़ पुराना । स्वामी कियो तासु व्याख्याना ॥

तिनकी गड़बड़ खूब बताई । खंडन कियो पोल दिखलाई ॥
पंडित रामलाल कालिज के । मूर्ती पूजन दिया जु तज के ॥
पंचयज्ञ नित्ति प्रति ही करना । दुहू काल गायत्री जपना ॥
शुद्ध तपोनिधि के सुन बैना । खुले विवेकी दृज के नैना ॥

॥ दोहा ॥

स्वामी से कहने लगे एक महाशय आय ।
कब तक कहना आप का माने देव बताय ॥
स्वामी जी उत्तर दियो सुनिये चित्त लगाय ।
जब तक माथे माहिं कछु नहिं विकार ह्वै जाय ॥

॥ दोहा ॥

गुरुप्रसाद पूछी यही स्वामी जी से आय ।
दो बातों में ठीक कहा दीजे हमें बताय ॥
या अगाध संसार को त्यागि देयं वा नाहिं ।
दारा सुत भ्रातादि घर रहें कि इन के माहिं ॥

॥ छन्द ॥

सुनि स्वामी जी कही विचारो बात हमारी ।
बाबू जी महाराज करो गृह अर्थ विचारी ॥
बाबू यह सुनि मौन साधि कर बैठ गये थे ।
गृह का मतलब देखि प्रयोजन पाय गये थे ॥
उत्तर मिलो यथार्थ नाहिं कुछ रहो अन्देशा ।
स्वामी को कहि धन्य सुनो वैदिक उपदेशा ॥
इक दिन तिरहुत देश निवासी पंडित आये ।
पुष्टि भागवत करो बड़े व्याख्यान सुनाये ॥
स्वामी खंडन किया महा अश्लील भागवत ।
प्रामाणिक नहिं कभी बुरी ता मध्य कहावत ॥
यह सुनि पण्डित लगे कहन यों नयन फेरकर ।
दोष बताना सहज काव्य करना है दुस्तर ॥
स्वामी जी ने कही आप हैं बड़ी भूल में ।
हम बनायदें द्विगुण मिलालें जिन्हें मूल में ॥

यदि निश्चय नहिं होय कलम ले लिखते जाओ।
प्रश्नोत्तर की भांति ग्रन्थ को पूरण पाओ ॥
लैन परीक्षा हेतु विदुष काग़ज़ मँगवाया।
उद्यत लिखने काज भये स्वामी अति भाया ॥
जूना का संवाद खड़ामू के संग बोला।
बिना रोक के काव्य रचा अति नया अमोला ॥
रचनाशक्ति अपूर्व देखि पण्डित घबराये।
स्वामी जी को चितय चकित ह्वै शीश नवाये ॥
करि प्रणाम उठिदिये कहो यह बचन जोरि कर।
आप लियो अवतार धर्म थापन विश्वम्भर ॥
बाबदूक ह्वै चूक त्यागि पटना तिन्ह दीनों।
स्वामी जी महाराज दखल अपनो करि लीनों ॥
विप्र रामअवतार तिवाड़ी सँग में आये।
मिलि पौराणिक सबे पास स्वामी के आये ॥
कियो वितंडावाद साथ किनु रोक दिये थे।
हार मानि चुपचाप चले गृह मार्ग लिये थे ॥
स्वामी जी मुंगेर जाय उपदेश किया था।
वैदिक धर्म प्रचार नगाड़ा बजा दिया था ॥
आस पास के ग्राम नगर सारा उठि धाया।
चहुं दिश रोला पड़ा दयानन्द स्वामी आया ॥
मूर्ती पूजन त्यागि पुराणनु भ्रष्ट बतावैं।
वैदिक धर्म विरुद्ध जिते सब नष्ट बतावैं ॥
बालीसक अनुमान उपस्थित थे पण्डित सब।
मूर्ती खण्डन कियो घड़ल्ले से स्वामी तब ॥
यद्यपि अवसर दियो करो शंका मन मानी।
अनुमोदन के इतर नाहिं बोले पुनि ज्ञानी ॥
आये साधू एक मौन जिन धारि लई थी।
स्वामी जी ने भली शुद्ध बुद्धी करि दी थी ॥
जो हो विद्याहीन मूक रहि समय बिताओ।
नातर सत् उपदेश सुनो और आप सुनाओ ॥

यह सुन साधू हँसा फेरि वह बोलन लागा ।
खुले विचार कपाट मनों सोवत ते जागा ॥
लागा कहने धन्य अहो स्वामी अवतारा ।
प्रगटे हो शिवरूप करो जग का निस्तारा ॥
धर्मपन्थ अवरोध चहूंदिशि मांहिं भयो हो ।
याही ते मैं साधि मौन ह्वै मूक गयो हो ॥

॥ छन्द ॥

अक्तूबर की बीस तिथी भागलपुर मांहीं ।
स्वामी जी उपदेश करो हो जाय तहां हीं ॥
दो ही दिन के बीच प्रान्त सब उठिकर धाया ।
स्वामी जी के निकट आय मेला सा छाया ॥
बाहिर लगें दुकान बिकें मेवा पकवाना ।
प्रतिदिन स्वामी पास जुरें पण्डितजन नाना ॥
साहस नाहिन होय तर्क प्रस्तुत करने का ।
सुनकर भौंचक रहै न बल स्वांसा भरने का ॥
पण्डित जी भयराम निकट राजा के जाई ॥
स्वामी जी की सकल व्यवस्था जाय सुनाई ॥
बर्दवान ते सुमति चारि पण्डित बुलवाये ।
स्वामी जी के पास करन संवाद पठाये ॥
पण्डित करि शास्त्रार्थ निरुत्तर ह्वै उठिधाये ।
सत्य सत्य वृत्तान्त नृपति को जाय सुनाये ॥
बचन दिये नरनाह चलें दर्शन के काजें
स्वामी जी महाराज जौन स्थान विराजें ॥
ईसाई पादरी झुंड मौलवी मुहम्मदन ।
मतो गांठि सब गये सुनन स्वामी का बरनन ॥
वाही दिन महाराज गये संयोगवशातें ।
जाय सुना संवाद भई जो जैसी बातें ।
उनके संग हो विप्र एक ईसा अनुयायी ।
रोदन करि निज कथा सविस्तर सबै सुनाई ॥

पौराणिक मत पोच जानि भी मैं ईसाई ।
स्वामी को सुनि कथन रह्यो मन में पछिताई ॥
अध्यापक हो रहा मिशनरीशाला माहीं ।
सुनता था आक्षेप बहुत हिन्दू मत पाहीं ॥
आकर नगर मझार पंडितन पूछा करता ।
उत्तर उचित न मिला नाहिं मन मेरा भरता ॥
बकते ऊट पटांग टालि भी जाते कोई ।
मेरी पूरन तुष्टि पुष्टि कछु नाहिन होई ॥
यदि मैं सुनता प्रथम आज जैसा सुनि पाया ।
तो नहिं तजतो कबहु धर्म अपने को भाया ॥
मुसलमान खृष्टीय दुहुन की वार्तालापा ।
स्वामी कृत प्रतिवाद सुना जो तुरत अलापा ॥
सुन करके संतुष्ट मगन नरनाह भये थे ।
स्वामी जी के अर्थ निमंत्रण देउ गये थे ॥
स्वामी जी अवरोध किया अरु नीति विचारी ॥
जावेंगे नहिं वहां होयगी हानि हमारी ॥
हम सेवी एकान्त ध्यान धरि रहें अकेला ।
होवेगा विक्षेप चित्त ना सहै झमेला ॥
दूजै दिन नरनाह गये जब स्वामी पासा ।
ब्रह्मू के संग बात चीत को लखो तमासा ॥
स्वामी की सुनि बात निरुत्तर होय गये थे ।
धर्मगुरु लें मानि यही कहि चले गये थे ॥
भागलपुर के एक धनिक जो बड़े कहावैं ।
स्वामी जी के पास बड़ी श्रद्धा ते आवैं ॥
सीखी विद्या योग करो अभ्यास जिन्होंने ।
पीछे भये विरक्त त्यागि सब दिया उन्होंने ॥
कहते हैं उपदेश इसे, पुनि श्रोता ऐसे ।
दोनों का संजोग हुआ था आकर जैसे ॥

इति सप्तम मयूखः

अथ अष्टम मयूखः

॥ छन्द ॥

युग्म ऋषि वसु इन्दु दिसम्बर था जु महीना ।
तजि भागलपुर दिया ध्यान रजधानी कीना ॥
बैरिष्टर ऐट ला चन्द्रशेखर जी मिष्टर ।
करने को आतिथ्य परिश्रम किया अधिकतर ॥
स्वागत के हित गये किया अति साह समारा ।
हबड़ा पहुंचे जाय उचित सत्कार अचारा ॥
कलकत्ता के माहिं बड़े जो नामी राजा ।
तेहू सुन कर गये देखने स्वामी साजा ॥
स्वतः हुआ अनुराग हृदय में उन के आई ।
आदर पूर्वक मिले तुरत श्री जी से जाई ॥
उसी समय निज माण वाटिका लेजु गये थे ।
प्रमोद कानन माहिं जाय ठहराय दये थे ॥
सारा किया प्रबन्ध आपने बाग संभारी ।
आवश्यकता योग्य वस्तु सब दई संभारी ॥
कलकत्ता में जाय विराजे स्वामी तबही ।
समाचार करि दिये विदित पत्रों ने जबही ॥
श्री जी निकटहि जाय जुरे समुदाय घनेरा ।
श्रवण करत उपदेश होय सब पाप निवेरा ॥
पौराणिक बहु विदुष ब्रह्मवासी मिलि आवैं ।
अधिक समय तिहि धाम करत संवाद बितावैं ॥

॥ सोरठा ॥

आदी ब्रह्मसमाज कलकत्ता में जगि रहो ॥
हेमचन्द्र द्विजराज महोपदेशक तासुके ॥

॥ दोहा ॥

स्वामी जी की ख्याति लखि मेटन निज संदेह ।
वर्णाश्रम ईश्वर विषय पूछो सहित सनेह ॥
स्वामी जी ने प्रेम करि बतलाये सब भेद ।
उत्तर सुनि संतुष्ट ह्वै त्यागो मन को खेद ॥

॥ सोरठा ॥

भयो पूर्ण विश्वास स्वामी जी प्रति तासु को।
सीखन योगाभ्यास नितप्रति ही आवन लगे॥

॥ दोहा ॥

यही हेतु करिके उन्हें सहित योग अष्टांग।
शिक्षा स्वामी ने करी विधिवत् सांगोपांग॥

॥ दोहा ॥

गायत्री के मंत्र को अर्थ सहित जप ध्यान।
यह आज्ञा स्वामी दई पण्डित करी प्रमान॥

॥ छन्द ॥

हेम चन्द्र ने प्रश्न एक दिन कीनो ऐसे।
सांख्यशास्त्र रचियता विदित नास्तिक हैं कैसे॥
स्वामी उत्तर दिया मनुष जो यह कहते हैं।
मूरख हैं अज्ञान वृथा हठ करि बकते हैं॥
देखो भागुरि भाष्य मिटैं मन संशय सबरे।
शुद्ध हृदय ते कपिल मुनी थे आस्तिक हमरे॥
स्वार्थी बुद्धि विहीन शास्त्र के मर्म न जाने।
व्याख्या करने लगे तिन्हैं कोउ कहा प्रमाने॥
ऋषिकृत जो विज्ञानशास्त्र है ताहि दिखावो।
नास्तिक आस्तिक भेद तबहि लखि परै हमारो॥
सत्य मार्ग जिहि माहि सरल करि आप प्रचारो॥
ईश्वर को मानि दियो जिन ठोंकि नगारो॥
बाबूकेशवचन्द्रसेन जी बड़े विज्ञ थे।
संस्कृत में जो शास्त्र उन्हों से महा अज्ञ थे॥
उनको था यह तर्क ब्रह्म उपदेश करै जो।
कछु न होय उपवीत जनेऊ नाहि धरै सो॥
ब्रह्मसमाजाचार्य नाहिं इनके सहमत थे।
करतो बहुत विरोध नहीं जो वैदिक मत ते॥

हेमचन्द्र ने आय अनेक विषय चलाया ।
स्वामी जी ने तिन्हैं शास्त्रयुत यों समझाया ॥
तुम हो विप्र सुविज्ञ अनेक नाहिन छोड़ो ।
ब्राह्मण का यह चिन्ह तासु ते क्यों मुख मोड़ो ॥
उपवीती का विषय अन्य हूं बहुरि चलावैं ।
स्वामी जी ते वही उक्त इक उत्तर पावैं ॥
दैव अनुग्रह कियो भेजि स्वामी जी दीये ।
वैदिक मत ते विचल होत सो राखि जु लीये ॥
बङ्गाली विद्वान् बहुत से नितप्रति आवैं ।
स्वामीजी व्याख्यान सुनैं हर्षित उठि धावैं ॥

॥ छन्द ॥

तारानाथ तर्क वाचस्पति कलकत्ता के विबुध महान् ।
न्यायरत्न महेशचन्द्र जी औरहु बहुत विदित विद्वान् ॥
ऊहापोह करैं वहि बढ़िक स्वामी संशय देयं मिटाय ।
आस्तिक, जो धनिक बड़ेरे सुनि २ तर्क मगन ह्वै जाय ॥

॥ छन्द ॥

बाबू केशव चन्द्रसेन जी तथा द्विजेन्द्रनाथ टागोर ।
राजनरायण बसू बिराजैं स्वामी पुष्टि करैं गहि ओर ॥
बन्द्योपाध्याय हेमनाथ जी बाबू कृष्णचन्द्र जी मित्र ।
बड़ी प्रशंसा कीया करते पक्षपात तजि ह्वै एकत्र ॥

॥ छन्द ॥

बाबू केशवचन्द्रसेन जी राजनरायन वसु ने आन ।
पुनर्जन्म औ इश्वर विषय पर शास्त्रार्थ को दीना ठान ॥
स्वामी हँस कर प्रबल युक्तियुत उत्तर दीने सहित प्रमान ।
उभय महाशय अति प्रसन्न ह्वै श्रीजी का कीया सनमान ॥

॥ छन्द ॥

वास्तव महिमा तथा प्रतिष्ठा आदर औ पूरा सत्कार ।
केशवादि बाबू सब करते विधिवत् साधन शिष्टाचार ॥
एक दिवस निज गेह बुला कर करवाया था धर्मप्रचार ।
जुरे प्रतिष्ठित समस्त नगर के शिक्षा सुनि माना उपकार ॥

॥ छन्द ॥

विद्या बुद्धि विशारद पूरे श्रीदेवेन्द्रनाथ टागोर ।
तीजी मञ्जिल अपने महल की स्वामी हेत बनाया ठौर॥
स्वामी जी सुन कर प्रसन्न हुे कहने लगे बचन सिरमोर।
गृहस्थियों के सँग में बसना मेरे लिये न अच्छा तोर ॥

॥ छन्द ॥

प्रमोद कानन युक्त सर्वथा यहां बना है नीका योग ।
बाहर रहना अति उत्तम है जाको कहैं उचित सब लोग ॥
विपिनवाटिका की वायू से रहता स्वच्छशरीर निरोग ।
स्वरुच स्वतन्त्र निचिन्तित रहता भ्रमणादिक का बड़ा सँयोग॥

॥ छन्द ॥

अष्टादशशत और तिहत्तर सन ईसा को लीजे जान।
मास फरवरी तेइस तिथि को स्वामी दिया एक व्याख्यान ॥
कतिपय सुज्जन और प्रतिष्ठित कलकत्ता के पुरुष महान् ।
बाबू श्रीगुरुचरणदत्त घर श्रोता जन का था घमसान ॥

॥ छन्द ॥

ईश्वर और धर्म की व्याख्या श्रीजी निज मुख करी बखान ।
चारों वेद उपनिषद् नाना कपिलशास्त्र का दिया प्रमान ॥
श्रवण करो विदुषन चित देकर सांख्य शास्त्र आस्तिक विज्ञान ।
नास्तिक बुद्धि धूरि में मिल गई जाता रहा सर्व अज्ञान ॥

॥ छन्द ॥

महेशचन्द्र जी न्यायरत्न ने बंगला माहिं किया अनुवाद ।
ताहि श्रवण करि विदुष महज्जन हंसि हंसि करने लगे विवाद ॥
संस्कृत कालिज के छात्रों को खोटा जंचा असद् व्यवहार ।
आज्ञा लेकर खंडन कीमा पंडित जी का बुरे प्रकार ॥

॥ छन्द ॥

स्वामी जी से अधिक अन्यथा जो कुछ पंडित किया बखान ।
ताहि अनावश्यक कहि करिके महेशचंद्र का किया निदान ॥
न्यायरत्न जी लज्जित होकर बहुत बुरा माना मन माहिं ।
स्वामी साथ अप्रीतिभाव करि बहुरि निकट आये फिर नाहिं ॥

॥ छन्द ॥

बाबू केशवचन्द्रसेन जो स्वामी जी प्रति कही सुनाय ।
संस्कृत भाषण का गुण ऐसा जो छात्रों ने दिया बताय ॥
भाषा में उपदेश कीजिये समझे साधारण समुदाय ।
कथन आपुके को अनुवादक अन्यहि अर्थ देत समझाय ॥

॥ छन्द ॥

विद्या, धर्म, सत्यवक्ता का करते थे अति ही सत्कार ।
सत्य बात के स्वीकरने में श्री जी सदा रहित तैयार ॥
अर्थ भरी प्रीतियुत सम्मति स्वामी तुरत करी स्वीकार ।
याही ते अनुमान कहत है स्वामी अवशि धर्म अवतार ॥

॥ छन्द ॥

मार्च महीना की दूजी तिथि ईश्वर जीव भक्ति उपदेश ।
हवन नित्य करने की महिमा पंचयज्ञ को कहा विशेष ॥
बड़ा नगर बोरन्यू के कमरे में स्वामी बैठि दिया व्याख्यान ।
कलकत्ता के विदुष प्रतिष्ठित हितकर सुना आय विद्वान ॥

॥ छन्द ॥

नवम मार्च को स्वामी जी ने बुरहानपुर के जाय मंझार ।
बालविवाह हानि बतलाई जातिभेद पर किया विचार ॥
वैदिक सिद्धान्तों को कहि करि के वर्णविवस्था का विस्तार ।
महाप्रभाव पड़ा पबलिक पर सबने कहा शंभु अवतार ॥

* * *

बंगाले के लाट साहब ने इन्हीं दिनों में किया विचार ।
संस्कृत कालिज तोड़ा जावे व्यर्थ देश पर पड़ रहा भार ॥
प्रकाश्य रीति से स्वामी कह दिया उचित न कालिज का व्यवहार ।
सत्य शास्त्र को नाहिं पढ़ावे नहिं वेदों का तहां प्रचार ॥

* * *

इन्हीं दिनों कालिज थापन कियो टगोर बाबू प्रसन्न कुमार ।
स्वामीतिन्ह को सम्मति दीनी करिये वेदों का उद्धार ॥
षड्दर्शन और वैदिक शिक्षा प्रचरित करिये लाहु प्रकार ।
स्वामी पूर्णतया सहमत है आयुर्वेद प्रथा अनुसार ॥

* * *

वैद्यक उन्नति करने के हित डाक्टर महेन्द्र लाल सरकार ।
बहुत देरतक बातें करके स्वामी संग में किया विचार ॥
केशवबाबू की पुस्तक लखि स्वामी दई अशुद्धि बताय ।
संस्कृत की अज्ञानता कहि करि शोकित होत रहे पछताय ॥

। छन्द ॥

ब्राह्म सभा के सभी सभासद् प्रायः सुनत ज्ञान व्याख्यान ।
प्रश्नोत्तर भी होता रहता आनन्द पावे अधिक महान ॥
भट्टाचार्य्य तर्कवाचस्पति पंडित तारानाथ जु नाम ।
ब्राह्म सभा में मुख्य पुरुष हैं उपदेशा का करते काम ॥
विदित करत रहते नित बाहर अपना विद्यारूप प्रकाश ।
स्वामी के सम्मुख जाने का नाहिन मिलत मोहि अवकाश ॥
जादिन पहुंच गया आगें में स्वामी नैन मूंद रहजाय ।
होट सूखि पपड़ी बंधि जावे मुखड़ा खुले सभा में नायं ॥
डींग विलक्षण सुनि सुनि करि के लोगनु पंडित लिये उठाय ।
बहुतक करत मखोलें लागे ताराचंद जायं खिसियाय ॥
अन्त क्रुद्ध होकर पंडित जी पहुंचे स्वामी जी के पास ।
सत्तरि प्रश्न झड़ाझड़ करि दिये उत्तर मिलने की नहिं आस ॥
सरलप्रकार योग्यतापूर्वक स्वामी उत्तर दिये सुनाय ।
कुपित भये पंडित जी बैठे तिन को तुरतहि लियो मनाय ॥
बाइस तेइस उत्तर माहीं सत्तरि प्रश्न दिये समझाय ।
तारानाथ तर्कवाचस्पति सुनि व्याख्यान चकित रहिजाय ॥
स्वामी चरन छुये उठि पंडित पूजन किया सहित उपचार ।
स्तुति करि यह कहने लागे स्वामी अवश्य शंभु अवतार ॥
जो उपदेश ग्रहण नहिं करिहैं उनपै परै धर्म की मार ।
कलकत्ता से बड़े नगर में उत्तम कीना धर्म प्रचार ॥
कलकत्ता में बसि कर स्वामी अनुभव पूर्वक किया विचार ।
पाठशालादिक धन्धे तजि कर अब करिहों में वेद प्रचार ॥
वेद भाष्य करि भाषा माहीं प्रचरित करूं सकल संसार ।
तब उद्देश्य सफल हो जावे हलका होय भूमि का भार ॥

॥ दोहा ॥

कलकत्ता से चल दिये हुगली पहुंचे आय ।
अति सुन्दर इक वाटिका कियो निवास सुजाय ॥

छन्द

अप्रेल पहिली आठ दस सन सत सिद्धपति मानिये ।
बाबू वृन्दावन जी महाशय अति प्रतिष्ठित जानिये ॥
वाटिका में आ विराजे धूम चहुं दिश मचगई ।
प्रत्येक मत के लोग चौंके तलवातर की लगगई ॥
होकर इकट्ठे सम्प्रदायी सिमिट कर आने लगे ॥
स्वामी जी की वक्तृता सुन चुपके हो जाने लगे ॥
हुगली कालिज के महाशय प्रिंसपिल आकर मिले ।
वर्णआश्रम विषय पर कुछ प्रश्न कर खुश हो चले ॥
अनभिज्ञता बतला के अपनी वेद के सिद्धान्त से ।
अन्यथा समझे हुए था भागवत को भ्रान्त से ॥
उपदेश सुनने के लिये श्री स्वामी महाराज से ।
मिलकर सभा में आगये सब शहर के सरताज से ॥
आकर खड़े कुछ दूर पर ताराचरण जी होगये ।
भीतर बुलाते ही रहे पर वह महल पर चढ़गये ॥
ऊपर पहुंच कर अनावश्यक बड़बड़ाने कुछ लगे ।
बाल क्रीड़ावत् समझ व्यवहार सब हँसने लगे ॥
अपनी बड़ाई को दिखाना चाहते थे जो जहां ।
उलटा असर जिसका हुआ जाना उन्हें मूरिख वहां ॥
अन्त को दो दिन विद्यार्थी बहुत कुछ समझा बुझा ।
बाबू वृन्दावन जी अव्वल हुए जो सबको सुझा ॥
स्वामी जी के निकट लाकर पक्ष उन्हें दिखला दिया ।
शास्त्रार्थ उनको घेर कर लोगों ने करवा ही दिया ॥
सब के समक्ष यह बात फिर मध्य में फैली गई ।
वेद को वेदांत के पुष्टि प्रमाण से माने सर्व ॥

प्रथम ताराचरण ने श्लोक एक सुना दिया।
योग पातञ्जलि का उसको सूत्र भी ठहरा दिया॥
फिर व्यास जी का वचन कहकर अर्थ को कहने लगे।
स्थूल वस्तू के बिना मन ठहरता नहिं इक जगे॥
यह तर्क उनका श्रवण करके स्वामी जी उत्तर दिया।
इस वाक्य में संदेह पूरा आपने स्वी कर लिया॥
पहिले कहा था योग का फिर व्यास का बतला दिया।
कुछ अन्य निश्चय अपना कहिये जिस से मिट जावे भिया॥
झट से वाचस्पति वचन ताराचरन लागे कहन।
नियम की प्रतिकूलता लखि नहिं किया स्वामी सहन॥
यह आप जो कुछ कह रहे हो सो प्रतिज्ञा थी नहीं।
निग्रह तुम्हारा होगया बस मान लो मेरी कही॥
स्थूल वस्तु में जगत की चीज सारी मानिये।
वृक्ष पर्वत घोड़ा गदहा किस को पूज्य प्रमानिये।
दो चार बातें अन्य भी स्वामी सुना चुप हो गये।
ताराचरन जी हो विकल निज पक्ष से भी खोगये॥
पश्चात् यों कहने लगे पूजा का करना व्यर्थ है।
स्वामी ने सूचित करदिया बस मेरा पक्ष समर्थ है॥
सब सभासद उठ चले पंडित के सुन मन्तव्य को।
मंडन को तजि खंडन किया धनि धन्य तब वक्तव्य को॥
ताराचरण होकर निरुत्तर महल पर को चढ़ गये।
पीछे से स्वामी जी विसर्जन कर सभा का उठ गये॥

॥ दोहा ॥

उत्तरह तिथि अपरैल की भागलपूर में जाय।
स्वामी जी महाराज ने डेरा दिया लगाय॥
एक मास उपदेश सुनि बाबू मनमथन नाथ।
डेढ़ वर्ष पढ़ते रहे स्वामी जी के साथ॥

॥ छन्द ॥

भागलपुरते चलि पटना में श्री स्वामी जी आये ।
आठ दिना तक लगातार रहि नित उपदेश सुनाये ॥
अवण करन उपदेश धर्म्म का नगर प्रतिष्ठित आवैं ।
पटना कालिज के विद्यार्थी बहुधा मोद बढ़ावैं ॥
परि पौराणिक एक न आवे विज्ञापन हूं पठि कर ।
घरघर माया चरते डोलैं व्यर्थ गपोड़े गढ़ कर ॥
दयानंद ईसाई जरमन पण्डित बन कर आया ।
धर्मभ्रष्ट यह करता डोले ठीक भेद हम पाया ॥
सन् अष्टादश अधिक तिहत्तरि पञ्चिस मई जु आई ।
पटना त्यागि चले स्वामी जी छपरा आय चिताई ॥
शिवगुलाम जी रायबहादुर तहां प्रसिद्ध रईसा ।
ठहराया विशालमन्दिर में जाय नाय निज सीसा ॥
पौराणिक व्याकुल हूं धाये रायबहादुर पासा ।
भड़कावा झूंठी बातें कहि कलित भईन दुरासा ॥
छोटे बड़े नगर के वासी मगन होत नित आवैं ।
शिक्षा धर्म सुने प्रफुलित हूं मन प्रसन्न करि जावैं ॥
देखि दशा दिन प्रति दिन ऐसी पौराणिक घबराते ।
घात करन की विधि में डोलैं कोला हूए जाते ॥
अन्त सफलता होत न देखी फेरि मतो यह बांधो ।
पण्डित जगन्नाथ पर जाकर मतलब चाहत साधो ॥
पण्डित जगन्नाथ उठि बोले सुनो हमारी बाता ।
नास्तिक मुखड़ा पड़े देखना यासे मैं नहिं जाता ॥
यह स्वामी जी ने सुनि पाया हँसकर कहने लागे ।
पण्डित जी जब यहां पधारें मधि में कपड़ा टांगे ॥
खींच तान कर पण्डित जी को लोग वहां ले आये ।
सत्य प्रतज्ञ महाप्रभु स्वामी परदा बीच लगाये ॥
भाषण कियो संस्कृत माहीं पण्डित अचरज लागे ।
शास्त्र प्रमाण अकाट्य अवण करि भाव अलौकिक जागे ॥
हूं परास्त पण्डित उठि धाये संग लिये सब साथी ।
मूक भये पण्डित की लखि दै सभा पण्डित रहि जाती ॥

॥ छन्द ॥

ग्यारह जून छोड़ कर छपरा पहुंचे आरा माही ।
करत रहे उपदेश नित्य प्रति बाईस जौलाय ताई ॥
श्री बाबू हरिवंशलाल सत्कार यथोचित कीया ।
स्वामी जी उपदेश धर्म का आरा माहीं दीया ॥
आरा से हो विदा श्री जी डुमरावे में आये ।
महाराजा साहब के बंगले में आसन जाय लगाये ॥
स्वामी का आतिथ्य यथाविधि राजद्वार ने कीया ।
अन्य प्रबन्ध यथोचित पूरन मंत्री जी करि दीया ॥
मंत्री सहित श्री महाराजा दर्शन के हित आये ।
बहुत देर तक करी बातां निज सन्देह मिटाये ॥
पौराणिक पंडित भी आकर धार्मिक विषय चलावें ।
समाधान स्वामी के सुनि कर शान्ति चित्त हो जावें ॥
पण्डित दुर्गादत्त तहां पर आत्मश्लाघी पूरे ।
शैव सम्प्रदा के अभिमानी विद्या माहिं अधूरे ॥
श्री महाराजा ने कहि करिके स्वामी पास पठाये ।
पाथर का लोढा धरि आगे शङ्कर नाम बताये ॥
स्वामी जी मुसिकाकर बोले इष्ट आपका देखा ।
विद्या, बुद्धि, विवेक, तुम्हारा सारा हमने पेखा ॥
स्वयं ब्रह्म बन कर पण्डित जी बातें करने लागे ।
स्वामी कृत खंडन को सुन कर सबरे संशय भागे ॥
आश्रय लेकर हठ आग्रह का निज घर को उठि धाये ॥
अंड बंड बकते फिरि डोले जहं तहं लोग हँसाये ॥
आत्मश्लाघा के रोगी जो इसी तरह बकते हैं ।
विदुष मण्डली में आकरके तुच्छ जीव जंचते हैं ॥

॥ छन्द ॥

डुमरावे को त्याग कर । मिर्ज़ापुर में आय कर ॥
पाठशालाहि देख कर । भलो प्रबन्ध न पेख कर ॥
साधु जवाहरदास को । बुलवाय लियो जासु को ॥
परामर्श देकर कहा । नहिं काम चलता है यहां ॥

काशी जी लेजाइये । शाला वहां बनाइये ॥
कह के स्वामी चल दिये । कानपुर का मग लिये ॥

॥ छन्द ॥

गङ्गा किनारे कानपुर, कुटी माहिं ठहरे ।
श्रीयुत पण्डित हेमचन्द्र, निकट आय विहरे ॥

॥ चौपाई ॥

बाबू क्षेत्रनाथ बंगाली । मजिष्टरेट से आज्ञा पाली ॥
कोतवाल कछु कियो विरोधा । सो साहब ने तत्क्षण सोधा ॥
स्वामी का उपदेश कराया । परेट वासिनु के मन भाया ॥
इस पर भी कुछ ढूँटे आई । कोतवाल कर तूति दिखाई ॥
बंगाल बंक में दूजी बारा । स्वामी जी उपदेश प्रचारा ॥
तहां विघ्न कुछ हुआ न भाई । सत उपदेश सुना चित लाई ॥

॥ छन्द ॥

बीस नवम्बर को चलि स्वामी पहुंचे नगर फ़र्रुख़ाबाद ।
निकट पाठशाला के ठहरे तहां वाटिका एक अपवाद ॥
प्रान्तिक लाट म्यार साहब से स्वामी मिले तहां पर जाय ।
गोहिंसा के बन्द कराने बात चीत कीनी समझाय ॥
सरविलियम ने करी प्रतिज्ञा यथाशक्ति भरि करें उपाव ।
धनि धनि स्वामी जी के ताई जिनके हृदय धर्म का भाव ॥
गोकरुणानिधि रची पुस्तकी रोका बाल व्याह विवहार ।
प्रतिमा पूजन का खण्डन करि दीनों परब्रह्म आधार ॥
तहां आठ दस दिन तक ठहरे फिर आगे का सुनो पयान ।
स्वामी नगर फ़तहगढ़ छोड़ो कासगंज को कियो पयान ॥
प्रस्थितभये छलेसर के हित राजघाट में ठहरे आन ।
सन अष्टादश अधिक तिहत्तर बीस दिसम्बर को शुभजान ॥
यहो आगमन सुनि स्वामी को करणवासके क्षत्रिय लोग ।
मानो भाग धन्य करि अपनो पायो दर्शन को संयोग ॥

॥ छन्द ॥

[illegible] जी [illegible]कृष्ण डिपुटी कलकृर, स्वामीका दर्शन किया आय यहांपर ।
प्रार्थी हो बोले अलीगढ़ पधारो, देकर के उपदेश हमको सुधारो ॥

स्वामीने स्वीकर बचन देदिया था, आवेंगे अलबत यही कहदियाथा ॥
ठाकुर मुकन्दसिंहको साथ लेकर, स्वामी जी पहुंचे अलीगढ़ में जाकर॥
शोभित किया बाग़ लालाजी वाला, आने लगे सब हलाला दलाला ॥
बड़ी भीड़ होने लगी थी वहां पर, स्वामी जी ठहरे शहर में जहां पर ॥
जैसा जिसे जो विषय सूझता था, स्वामी से आकर उसे पूछता था ॥
समाधान करते थे सबका यथोचित, होतेथे संशय निवारन यथोचित॥
नगर प्रतिष्ठित सभी लोग आते, सुनते थे व्याख्यान आनन्द पाते ॥
हाकिम अहलकार राज्याधिकारी, उपदेश सुनके होते सुखारी ॥
सामान्य पुरुषों का समुदाय रहता, अनेकान प्रश्नो प्रत्येक कहता ॥
उत्तर जो अपना यथायोग्य पाते, सन्तुष्टतायुक्त निज घर को जाते ॥
नगर हाथरस को स्वामी विधारे, साथहिं छलेसर के ठाकुर पधारे ॥
डिपुटीकलकूर नेपहलेही जाकर, कियाथा बन्दोबस्त सारावहांपर ॥
खबर सुन बहुतसे नगरके महाजन, व्याख्यानमें आये पण्डित विद्वज्जन॥
प्रतिमाकी पूजा मृतक का पुजापा, ये विश्वास झूंठा उड़ाया सरापा॥
वैश्यों में मानव की पूजा थी भारी, उसकी भी कलई उड़ादीथी सारी ॥
तन मन व धन का गुरुजी को देना, अर्धाङ्गिनी को प्रसादीमें लेना॥
बहुत से छिपे भेद मतवादियों के, जु थे देशके सारे बरबादियों के ॥
युक्ति प्रमाणों से बतला दिये थे, सबको धड़ल्ले से जतला दिये थे ॥
मथुरा शहर हाथरससे निकट है, पहुंची वहां तक भी इसकी लपट है
सम्प्रदायक विचारे भस्म हो रहे हैं, इधर से विधर से टोह लेरहे हैं॥
कहते हैं सब से अब क्या करेंगे, बिना मूर्तिपूजा के भूखों मरेंगे ॥
बड़ीगड़बड़ी जगत् में फैलायदीनी, जीविका बामनोंकी छिनाय ली जो ॥
पबलिक में दी पूरी हलचल मचाई, दयानन्द स्वामीने धरती हिलाई ॥
गये हाथरस त्यागि मुरसान मांहीं, राजा थे टीकमसिंह जी जहांहीं ॥
ठहर थोड़े दिन फेर मथुरा पधारे। वैदिक धर्म के बजाये नगारे ॥
उनहीं दिनों रंग जी का था मेला। आचारियोंका था पूरा झमेला ॥
वृन्दाविपिन माहिं उसही समय पर। स्वामीजी पहुंचे मथुरासे चलकर ॥
निकट बाग़ था रंग जी का जहां पर। डेरा लगा था मेलेमें जाकर ॥
वैष्णव अनेकों औ यात्री हजारों। अंकित भी इतने जहां तक सभारों॥
सभी प्रश्न करते निराले बना कर। होते मगन ठीक उत्तर को पाकर ॥
सरल प्रेम पूर्वक स्वामी जी कहते। कटू वाक्य सुनते हुए सबके सहते ॥
जमघट बड़ा रहता सोते समय तक। चारों तरफ होती रहतीथी बकबक

विदुष आनकर तर्क अपनी उठाते। स्वामी समाधान पूरा सुनाते ॥
नगर बीचहलचलबड़ीबढ़गई थी। सभी मन्दिरों कीप्रभाउड़गईथी ॥
इधर पत्र भेजा दयानन्दजी ने। पढ़ा ध्यान देकरके आचारी जी ने॥
आचारीजी पहले टलाते रहे थे। इधर की उधर की उड़ाते रहे थे ॥
फेर अन्त को आप बीमार बनकर। अस्वस्थता का बहाना बनाकर॥
पीछा छुड़ा अपने घरबीच सोये। सब जानने से भले हाथ धोये ॥
आचारी इकदिन कलकूर से मिलकर। स्वामीकेहालात सारे सुनाकर॥
शास्त्रार्थ करने को उद्यत बता कर। खंडन पुरानोंकाकरते हैं कहकर॥
भड़काना चाहा जिलाधीशको था।असरकुछ हुआनाहिंवागीशबोधा॥
चेलोंमें कट्टर जिन्हें जानते थे । श्रद्धालू सेवक उन्हें मानते थे ॥
उभारा था उनकों लड़ाई करो जा। स्वामीके सँगमें भिड़ोओमरोजा॥
इस यत्न में भी अधूरे रहे जब। अपना मुख ले चुपके हुए तब ॥
स्वामी बगदि फेरि मथुरामें आये। विज्ञापन नगरमेंचहूंदिशलगाये॥
विदुष नहीं कोई आया वहांपर। किन्तूउजड्ड चौबे आये जु मिलकर॥
अधिक पांचसेके ये समुदाय सारा। मूर्खों के मण्डल का पूरा अखाड़ा ॥
सिपाही रिसाले स्वामी निकट थे, लड़ाईके पंडित वहां दुर्विकटथे॥
फ़ौरनहीफांटकलगाजोदियाथा, ओलड़नेका सामानभीकरलियाथा॥
पचासेक क्षत्री करनवास के थे, स्वामी से मिलने मथुरा गयेथे ॥
पहुंचे उसीवक्त हमसब वहांहीं, डराथा वोचौबोंकाजमघटजहांहीं॥
लिये सोंटे घोटोंको चौबोंको देखा, अश्लील बकते हुए उनको पेखा॥
ललकार करके कहा यों जु उनसे, आओ लड़ो आगे बढ़ करके हमसे ॥
प्रथमतो कुछ हुज्झड़सा करने लगेथे, मगर फेरि पीछेको हटने लगेथे॥
इतने में आई पुलिस की जु सैना। उन्हें देख कर पड़ गया लेनादेना ॥
इधर को चटक कुछ उधरको भी सटके। धक्के सहे ठोकरें और झटके॥
लखा फौज वालों ने हमको खड़े हैं।लड़नेको मुस्तैद होकर अड़े हैं ॥
तुरतहीदियाखोलिफाटिककासंकर। मिलेआनसबहमसेबाहरनिकलकर॥
सवारी ओ हम सब गये हाते माहीं।स्वामीजीउपदेशकरते जहां हीं॥
स्वामीजी हंसतेहुए कह रहे थे। अविद्या भरे धूर्त जो बक रहे थे ॥
बैठे महज्जन बहुत सुन रहे थे। धएल्ले से व्याख्यान को देरहे थे ॥
देखा हमें पर न पूछा था कुछभी। चहरा विकारित न पायाथाकुछभी॥
नमस्ते को लेकर बैठो कहा था।व्याख्यान निर्द्वन्द होता रहा था ॥
तभी आन पहुंचे थे डिपटी कलेक्टर। कुछ एक चौबोंको उनमेंसेलेकर॥

स्वामी निकटजा बिठाया था सबको। वेदोंका उपदेश सुनवाया सबको॥
उठ बैठे करके विसर्जन सभाका। कहने लगे ढंग बदली हवाका॥
विद्याकीभूमी थी मथुरा किसी दिन। वही लंठसंडोंसे पूरितहैइसछिन॥
अहो कालकी देखो महिमा यही है। जनमभूमि थी कृष्णकीसोयहीहै॥
चतुर्वेदवक्ता जो चौबे कहाते। सो भंगड़ हैं पूरे धतूरे चबाते॥
संभललो उठोवेदमारग निहारो। शास्त्रोंका मत क्याहै उसकोविचारो॥
नन्दनजो ज्ञानी गुरू हैं तुम्हारे। एक समय के हैं सुसज्जन हमारे॥
संवाद उनसे हमारा कराओ, मथुरा के सबरे विदुषजन बुलाओ॥
शास्त्रोंको लखि सत्यकी खोज देखो, मारग धर्मका जु वेदोंसे पेखो॥
पाछें फिर इसके कईदिन वहां पर, उपदेश देते रहे थे बराबर॥
देशी विदेशी अनेकों ही आते, व्याख्यान सुन २ के आनन्द पाते॥
एक दिन मदनदत्तजी पंडितजी आये, व्याख्यान सुनते रहे चितलगाये॥
सिद्धान्त वेदोंके मन भा गये थे, पुराणोंका मतभेद भी पागये थे॥
स्वामीके अनुयायी तत्काल बनकर, वैसाही खंडन लगे करने डटकर॥
थी मूर्तियां जो कि पंडितके घरपर, फेंकी तुरत लाके जमुनामेंजाकर॥
नगरमें बड़ाभारी शोरा मचा था, चर्चासे खाली न कोई बचा था॥
बहुतोंने ब्रजमें प्रकट कर दिया था, धूर्तोंने अपना मताकर लियाथा॥
स्वामी पे जादू है ऐसा बताते, जो पास जाता उसे वे लुभाते॥
टीकमसिंह राजाजी मुरसान वाले, स्वामी पे श्रद्धा बड़ी रखने वाले॥
लिवानेको स्वामीको खुदही पधारे, स्वामीजी मुरसानकोथेसिधारे॥
एक आदमी बेसवांको पठाया, ठाकुर वहांके को राजा बुलाया॥
यजुरवेदका भाष्य भी लेते आवें, स्वामीके आगे हमको सुनावें॥
गुरुप्रसादसिंहजी आये वहां पर, ठहरे अलग बाग राजामें आकर॥
स्वामीनिकट जबही उनको बुलाया, उत्तर अजब औंधा यह कह पठाया॥
राजाजी स्वामीको लेकरके आवें, जो होवें शंका सो मुझको सुनावें॥
करूंगा समाधान मैं बैठ करके, सुनेंगे खड़े ही खड़े वो ठहर के॥
इसी तौरकी और भी बहुत बातें, कहने लगे आप बकते बकाते॥
जानी गई सभ्यता जाटपनकी, अश्लीलतासेभरी जाटपनकी॥
हंसकरके राजाने यह कह सुनाया, शिष्टाचार उनका भलाजान पाया॥
वास्तविक योग्यताप्रकटहोगईहै, परीक्षाकी अब कुछ भीजरूरतनहींहै॥
कहदोयहजाकरवोचाहैंतोआवें, खुशी उनकी घरको बगदि अपने जावें॥
बुलाया भुसेरा न आये आगाड़ी मूरख अपना दिखाते पिछाड़ी॥

स्वामीके संगमें स्वयं आप राजा, राज्याधिकारी औ सारा समाजा ॥
मेंहूसिटीसन तलक साथ आये, गाड़ी में असवार उनको कराये ॥
इनसे विदा होके स्वामी सिधारे। अलीगढ़से होते जलेसर पधारे ॥
कुछ दिन ठहरकर यहांसे गये थे । प्रयागमें जाके ठहरे रहे थे ॥
पं०पादरी मौलवी लोग आते।समीक्षाको सुनकर चकित होके जाते॥
आश्चर्य करते थे सब सुनने वाले । इंजील कुरआनके सुन हवाले ॥
उपदेश वैदिकधर्मका धड़ाधड़ । खंडन पुरानोंका करते तड़ातड़ ॥
व्याख्यान बंगालियोंमें दिया था।पर्देके सिस्टमका खंडन किया था ॥
बहुत छात्रगण म्योर कालिजके आते।उपदेश सुनकरके आनन्द पाते ॥
स्वामीके श्रद्धालु सब होगये थे । वेदानुयायी भले बन गये थे ॥
अब भी जहां पर है उनमेंसे कोई । सहायक समाजोंका पूराहै वोई॥
यहांसे बनारसको स्वामी गये थे । दोड़ासा कर फिर यहीं आगये थे।
बादलोंसे सफा आसमां होगया था।शरदऋतुका अच्छा समय होगयाथा॥
इलाहाबादसे उठ जबलपुर सिधाये।एक वाटिका माहिं डेरा लगाये॥
व्याख्यान देकर विदुष सब चिताये।जबलपुरके सोते हुए सब जगाये॥
नासिक व त्र्यंबकमें पहुंचेथे स्वामी।बटी पंचतोरथ जहांपर है नामी॥
भारतमें ख्याती यहांकी है भारी। भरी याचकोंसे पड़ी भूमि सारी ॥
उपदेश कुछ दिन ठहरकर किया था।प्रतिमादि खंडन वहांपर कियाथा॥
भिक्षुक चहूंओर फिरते थे बकते,सनमुख नहीं आनकर कोई डटते ॥
परदेशियोंको उभारा भुतेरा, उठाना चाहा और भी बखेड़ा ॥
मगर कुछ नहीं बस भी उनका चला था,
वृथा करके बकवाद तोड़ा गला था ॥
दक्षिणमें घूमें यही मनमें चीता, आगेको जानेका बांधा सुभीता ॥

इति नवम मयूख ।

अथ दशम मयूख प्रारम्भः ।

॥ छन्द ॥

उनइससे इकतीस विक्रमी संवत् माहीं,
अक्टूबर छब्बीस मास आसोज तहां हीं ॥
मुंबापुरी प्रसिद्ध महानिधि के तट सोहे,
अद्भुत अनुपम छटा देखि मन कविजन मोहे ॥
श्रीस्वामी महाराज विराजे जहां जायकर,
स्वागत के हित सेठ उपस्थित भये जहां पर ॥
करिकें अति सत्कार बालकेश्वर ले जाकर,
ठहराये रमणीय जगह थी एक जहां पर ॥
धर्माधर्म विचार हेतु विज्ञापन लिखकर,
नगर माहिं बटावय दिये तत्कालहि घर घर ॥
मची धूम चहुं ओर दयानन्द जी आये हैं,
दर्शन करने काज विदुषजन उठि धाये हैं ॥
पंडित सेवकलाल कृष्णदासात्मज जो थे,
स्वामी जी से खूब प्रथम ते परिचित सो थे ॥
आकस्मिक संजोगवसातें काशी माहीं,
शास्त्रार्थ के समय उपस्थित रहे वहां हीं ॥
आर्य्यमित्र के माहिं छपाया था सब विवरण,
पक्षपात के विना बताया था सब कारण ॥
एक मास के पूर्व यहां के जो हे विद्वन,
विस्मित चित हो रहे सुनत प्रतिमा का खंडन ॥
परि नहिं था मालूम तुरत ही आ धमकेंगे,
धर्मदिवाकर भानु बम्बई आ चमकेंगे ॥
कोलाहल मचि गया सम्प्रदायक सब हाले ।
पौराणिक लुकि रहे गये पछि कठिन कसाले ॥
वैदिक धर्म प्रचार इते स्वामी जी करते ।
पाखंडी सुनि सकुचि इते उत छिपते फिरते ॥
दक्षिण का पाखण्ड छिपा कुछ नहीं रहा था ।
वल्लभ मत का भेद उन्होंसे सभी कहा था ॥

वल्लभ मत आचरन बड़े ही भ्रष्ट जान कर ।
खंडन करना प्रथम उन्हीं का लिया ठान कर ॥
वल्लभ मत के गुरू गुसांई जो कहलाते ।
तन, मन, धन, की भेंट सेवकनु से करवाते ॥
स्वामी जी चैलंज उन्हीं को डट कर दीया ।
खोलि दई सबपोल प्रबल अति खंडन कीया ॥
जीवन जी इस समय गुसांई वहां प्रतिष्ठित ।
स्वामी सँग व्यवहार चहा कछु करना अनुचित ॥
कानकुब्ज था विप्र रसोई करने वाला ।
स्वामी का विश्वासपात्र था बड़ा निराला ॥
उसको लिया मिलाय दियाथा लालच भारी ।
जहर खिला दे मार यही मनमाहिं विचारी ॥
पांच रुपैया नक़द हाथ में दये गहाई ।
रुक्का एक हज़ार झोर भरि दई मिठाई ॥
करिके आओ काज वेगि तुम पास हमारे ।
औरहु मिलै इनाम दरिद सब टरैं तुमारे ॥
लेत मिठाई हाट मांझ कोई लखि आया ।
स्वामी जी से आय वृत्त वह सहज सुनाया ॥
उसी समय पर विप्र वहां ही आय गया था ।
खोलि कहा वृत्तान्त भेद सारा गाया था ॥
रुक्का दिया देखाय रुपैया औरमिठाई ।
दुष्टन की करतूति सभा में सबहि सुनाई ॥
स्वामी जी ने डाट कहा बलदेव सुनो तुम ।
यह पूरा अपवाद लगावें क्यों उनको हम ॥
रुक्का दीना फाड़ आग में फेंक दिया था ।
ऐसी जगह न जाउ यही उपदेश दिया था ॥
शिरनी दीनी बांटि बधाई के मिस स्वामी ।
सरल हृदय अति शान्ति बड़े पूरण निष्कामी ॥
आप विना को करे उचित जैसा यह कर्तव ।
पापिनु पै अस क्षमा कौन धारे या जन्म अब ॥
धन्य महर्षी धन्य बड़ा ही यह यश लीना ।
मुनि वशिष्ठ के तुल्य आपने परिचय दीना ॥

प्रश्न लिखे चौबीस न अपना नाम प्रकाशा ।
डाक मारफ़त दिये भेजि स्वामी के पासा ॥
स्वामी जी तत्काल सबै उत्तर छपवाये ।
विज्ञापन की भांति गली कूंचा लगवाये ॥
करना क्या संकोच धार्मिक वाद मँझारी ।
जिसको हो सन्देह करे वह आय अगारी ॥
धर्मपक्ष का दृढ़ी नहीं कुछ अन्यायी हूं ।
मैं स्वतन्त्र नहिं किन्तु वेद का अनुयायी हूं ॥
जीवन जी आचार्य सोच मन में करि भारी ।
झींकन लगे महान जु गट्टूलाल अगारी ॥
गट्टूलाल प्रसिद्ध गुसाइन में पण्डित थे ।
शतावधानी विज्ञ शिरोमणि गुणमण्डित थे ॥
सोचि समझि परिणाम बड़े घबड़ाने लागे ।
सेवक फिरते देखि करन उद्यम कछु लागे ॥
चारि दास समझाय पठाये गुप्त रीति से ।
स्वामी जी के साथ भिड़ो जा गूढ़ नीति से ॥
निधि तट करने भ्रमण अकेले नितप्रति जावें ।
करदो काम तमाम पता नहिं कोई पावें ॥
सभा करी इक नगर बुलाये निज अनुयायी।
पौराणिक हूं लिये शहर के बहुत बोलाई ॥
बके बहुत अश्लील अनर्गल भाषण कीये ।
श्वान समान प्रलाप करत व्याख्यानहु दीये ॥
पण्डित छोटेलाल देखि अनुचित व्यवहारा ।
गट्टूलाला प्रती कहा उठि निज सुविचारा ॥
विदुष मण्डली और सभा मधि यह असभ्यता ।
अनुचित है सर्वथा इसे को कहै विज्ञता ॥
स्वामी का अन्तव्य उसे मिलि खण्डन कीजै ।
प्रतिमा पूजन आप वेद से मण्डन कीजै ॥
सुनी अनसुनी करी गये शरमाय सभापति ।
वेद मन्त्र पढ़वाय करी थी सभा विसर्जित ॥
प्रति पण्डित दक्षिणा अर्थ मुद्रा दिलवाया ।
पूर्ती पूजा सिद्धि हुई प्रत्यक्ष कराया ॥

इतने पर भी शिष्य गोसाईं विचलित होकर ।
वल्लभ मत को त्याग अनर्थों से कर धोकर ॥
स्त्री पुरुष अनेक किरिचले उनके मतसे ।
छोड़ि दिया पाखण्ड सबे लखि वैदिक मत से ॥
मथुरा पंथ प्रसिद्ध वल्लभी मत अनुयायी ।
सच्च मत से दिया त्यागि वह मल दुखदाई ॥
वैष्णव मत के बहुत भाटिया औ गुजराती ।
तोड़ि दई कण्ठियां भये मत वेद सँगाती ॥
इन सब की प्रेरणा और प्रार्थना श्रवण कर ।
दस सहस्र की भीड़ उपस्थित थे नारी नर ॥
मूर्ती पूजा विषय सम्प्रदायों का खण्डन ।
वैष्णव मत की पोल और वैदिक मत मण्डन ॥
गुप्त भेद किये प्रकट वैष्णव मत के सारे ।
वल्लभ मत भयो छीन हीन मति फिरे दुखारे ॥
स्वामी जी सामुहें बहुत से पण्डित हारे ।
जीवन जी महाराज सटकि मद्रास सिधारे ॥
पण्डित जी जयकृष्ण गुरूघण्टाल बड़े थे ।
पौराणिक लै साथ एक दिन आय डटे थे ॥
जीव ब्रह्म एकता करन की उन ठहराई ।
शास्त्रार्थ गये हारि उठे मुख फेरि लजाई ॥
स्वामी जी अद्वैतवाद के खण्डन ऊपर ।
छोटी सी पुस्तिका एक छपवा दी लिख कर ॥
पौराणिक बम्बई एक दिन मिलकर आये ।
पुस्तक आलय माहिं बैठि स्वामी बुलवाये ॥
करी प्रतिज्ञा एह वेद ते प्रतिमा पूजन ।
आज सिद्ध करि देयं प्रमाणों द्वारा मण्डन ॥
लज्जित भये महासर्व साधारण आगे ।
भई प्रतिज्ञाहानि सभा सें उठि सब भागे ॥
आमंत्रित करि लोग प्रभू को लेयं बुलाई ।
सुने बैठि उपदेश वेद मत की महताई ॥
ब्रह्म प्रार्थना आदि समाजों के भी अधिपति ।
समझि रहे थे यही होयगी अपनी उन्नति ॥

परि स्वामी को करत सभी का खण्डन देखा।
वेद विरोधी जौन तौन सब का सम लेखा॥
शिथिल पड़ा उत्साह देख स्वामी का करतब।
ह्वै उदास सब गये निराशा करि बैठे सब॥
सत्य अगाड़ी कछू न तिनकी चली नेकहू।
पीछें हू प्रतिवाद करि सके नाहिं एकहू॥
स्वामी जी के प्रेमपात्र जे थे अनुरागी।
वैदिक मगरस पगे अनर्थनु ते रुचि त्यागी॥
दृढ़ कीना संकल्प कहा स्वामी सें ऐसें।
चिरता पूर्वक रहे वेद मत जग में जैसे॥
नये सिरे संतोषजनक हो वह विधि करिये।
होता है प्रचार प्रकार वोही अनुसरिये॥
स्वामी जी तत्काल सोचि यह उत्तर दीना।
करो समति एकत्र ढूंढ़ी मन हूं लौलीना॥
सात दिवस पर्यन्त बराबर इसी विषय में।
होता रहा विचार नित्यप्रति सभी समय में॥
परामर्श यह हुआ साठि पुरुषों का मिल कर।
आर्यसमाजहि देयं बना जगका हो हित कर॥
करि प्रार्थना जाय सबनु स्वामी के पासा।
श्रीजू दई असीस फुरे शुभ तुम्हरी आसा॥
सम्प्रविष्ट हम होयं प्रतिज्ञा को करते हैं।
वैदिक धर्म प्रचार करें यह प्रण भरते हैं॥
सेशनजज के पुत्र महोदय आय गये थे।
स्वामी जी को साथ आपने लेजु गये थे॥
एक प्रतिष्ठित सेठि अहमदाबादी आकर।
स्वागत कारन आय उपस्थित हुए वहां पर॥
अपनी गाड़ी माहिं लाय स्वामी बैठारे।
विनती करकें बैठि गये संग यान मंझारे॥
मारग माहीं लगे कहन यों सेठि विज्ञ वर।
तीन लाख धन लगा बनाया है इक मंदिर॥
यह सुनकें अफ़सोस किया स्वामी ने भारी।
व्यर्थ किया धन ख़र्च दुहत्थड़ गाढ़ी मारी॥

विद्यार्थिनु के काज पाठशाला बनवाते ।
वेदादिक सच्छास्त्र तहां विप्रनु पढ़वाते ॥
धरमात्मा सुविज्ञ वेदवित् बनते पंडित ।
करते जग उपकार महज्जन ह्वै गुन मंडित ॥
कहा सेठि ने फेरि मूर्तिपूजा पर तुम्हरा ।
होवेगा शास्त्रार्थ तभी हो निश्चय हमरा ॥
निदान करिकैं मंत्र कई पंडित बुलवाये ।
राजा जी मल्हारराव हू को अपनाये ॥
जज साहब की सुघर बाटिका माहिं विदुषजन ।
जुरे प्रतिष्ठित पुरुष नगर के सबहि महज्जन ॥
करने को शास्त्रार्थ मूर्तिपूजा पर भाई ।
सुनने को संवाद अधिक परजा उठि धाई ॥
छै घंटा के निकट रहा शास्त्रार्थ विशेषी ।
पौराणिक की हार भई बिगड़ी सब शेखी ॥
रावबहादुर जज्ज अहमदाबाद निवासी ।
भाई भोलानाथ विवस्था कहि सुख रासी ॥
सब को दई सुनाय और समझाय सभा में ।
मूर्तिपूजा सिद्धि हुई नहिं आज सभा में ॥
पौराणिक अणुमात्र वेद से मूर्ती पूजा ।
बतला सके न युक्त प्रमाणहु नाहिन सूझा ॥
अब यह है प्रत्येक मनुष की इच्छा जैसी ।
माने अथवा नहीं करे मन आवे वैसी ॥
राजकोट के माहि उन्हीं दिन था दर्बारा ।
लाट साहब के हेतु मिलन आये सरदारा ।
स्वामी जी यह सोच वहां को चले गये थे ।
लगातार व्याख्यान नित्य प्रति तहां दिये थे ॥
साधारण जन और प्रतिष्ठित बड़े प्रेम से ।
सुनकर होत प्रसन्न वेद उपदेश नेम से ॥
एक दिन राजकुमार महाविद्यालय माहीं ।
अध्यापक हो गये यहां स्वामी के ताहीं ।

दीन्ही भेंट कराय प्रिंसपिल साहब आपा ।
अति प्रसन्न सो भये सुनत वेदों की गाथा ॥
समयोचित इस समय करो कुछ शिक्षा ऐसी ।
मनभावन रुचिकरन बुद्धि बल बाढ़े जैसी ।
छात्रों के प्रति एक व्याख्यान सुनाया ।
शिक्षायुत उपदेश समझि सबके मन भाया ॥
विदा होन के समय भेंट ऋग्वेद दिया था ।
कहि तथास्तु हो मगन उसे स्वीकार किया था ।
प्रभावशाली एक मांसभक्षण के ऊपर ।
दीया था व्याख्यान किया था खंडन डटकर ॥
जिसका बड़ा प्रभाव पड़ा पबलिक के ऊपर ।
द्वादश दे व्याख्यान किया उपकार बड़ेरा ।
मतवादिन का पक्ष तोड़ि सब मिटा बखेड़ा ॥
लौट अहमदाबाद फेर स्वामी जी आये ।
राजकोट के माहिं दिना पचईस बिताये ॥
मास दिवस करि वास बम्बई फेर पधारे ।
शिथिल हुए जन देखि पुनरपि जाय प्रचारे ॥
आर्य्यसमाज के हेतु जुथा उत्साह अनारी ।
ठंडा देखि उमाह सभा इक दिन करि डारी ॥
धन्य आजकी घड़ी सराहेंगे जग जाकों ।
उपकारिक मंतव्य प्रकाशे हैं पुनि वाकों ॥
पांडूरंग दादूबाजी को बना सभापति दीना ।
आर्य्यसमाज स्थापना के हित यह पुनि कीना ॥
नियमोद्देश विचार करनको योग्य पुरुष चुनि लीने ।
तिन्हमें ते कछु एक न अपने परामर्श असदीने ॥
संस्थापन समाज समय अभी नहीं आया है ।
इसीलिये कुछ दिन के तांई उसको ठहराया है ॥
उनका कर कतिपय पुरुषोंने यही मता ठहराया ।
जग उपकार अभी कुछ होगा जाय समाज बनाया ॥
यह विचार आगे करि अपने सर्वसम्मति दीनी ।

आर्य्यसमाज के नियम बनाने एक समिति रचि लीनी ॥
राजमान राजेश्वर पारिखपानाचन्द आनद जी ।
उत्तमता से शीघ्र पूर्णकरि कार्य सभी सानद जी ॥
स्वामी भये प्रसन्न देखकर कहने लागे ऐसे ।
जादिन शुभ अवसर को देखो सुफल कृत्य हो जैसे ।
परामर्श इतना है मेरा शुभ कारज में देरी ।
करना नेक उचित नहीं सभ्यो यह सम्मति है मेरी ॥

॥ छन्द ॥

चैत सुदी पंचमी और अप्रेल महीना ।
उनइस से बत्तीस विक्रमी संवत्मीना ॥
अट्ठारे से और पिचत्तर सन हो ईसा ।
बम्बापुर गिरिग्राम महल ता बिच इक सीसा ॥
डाकुर मानिकचन्द वाटिका थी अति सुन्दर ।
प्रगटो आर्य्यसमाज शुभ घड़ी शुभदिन अन्दर ॥
नियम सुनाये गये भये सब स्वीकृत जबहीं ।
अधिवेशन यह प्रथम लोक में हुआ जु अब ही ॥
बीस आठरधि नियम और उपनियम सुनाये ।
सर्व सम्मति भई नियम सब के मन भाये ॥
फिर अधिकारी चुने दिवस शनिवार बताया ।
पर कुछ दिन पश्चात् सबनु रविवार जताया ॥

॥ छन्द ॥

आर्य्यसमाज बनाय बम्बई स्वामी तुरत पधारे ।
जाय अहमदाबाद मंझारी पुनि सब लोग प्रचारे ॥
स्वामीनारायणमत ऊपर करी समीक्षा भारी ॥
रची पुस्तिका एक विलक्षण उनके मतकी न्यारी ॥
नगर बम्बई मांहि कुलाहल पौराणिक अस कीना ।
विचार को हम उद्यत हुए तबहि नगर तजदीना ॥
भ्रान्ति कुछ होने सी लागी सुनत प्रवाद इन्होंके ।
मन्त्री तार दियो स्वामी को पहुंचा पास उन्होंके ॥
पौराणिक लखिकर स्वामी को जित तित छिपनेलागे ।
आग्रह करने पर भी पंडित कोई जाय न आगे ॥

कमलनयन आचार्य्य शिरोमणि सब में माने जाते ।
शास्त्रार्थ करने को वे भी नहीं सामने आते ॥
नगर निवासी बहुत प्रतिष्ठित कहन लगे थे अड़के ।
बाधित किया सभ्य लोगोंने बहुत पिछाड़ी पड़के ॥
बड़ी कठिनता से स्वी कीना स्वामी सन्मुख जाना ।
बारह जून नियत तिथि करदी शुभ मुहूर्त सो माना ॥
इन्सीट्यूटक्रानजी का जो स्थान वही ठहराया ।
शास्त्रार्थ का विज्ञापन लिखि सारे नगर घुमाया ॥
नियम समयसे नगर निवासी प्रथम ही आय विराजे ।
तीन बजे पर श्रीस्वामी जी आये सहित समाजे ॥
उच्च स्थान धरी इक कुर्सी वहां दिया बैठारी ।
कमलनयन आचार्य्य कारने दूजी धरी अगारी ॥
मध्य में पुस्तक धरी डेढ़ सो देखन काज प्रमाना ।
आठ कुरसियों पर सम्पादक बैठे युत सनमाना ॥
साहूकार सेठ अधिकारी लगभग सभी प्रतिष्ठित ।
सभा मंझार उपस्थित सबरे विदुष पुरुष जो शिक्षित ॥
ऐसी सभा प्रथम नहिं बैठी मुम्बापुरी मंझारी ।
देवलोक में जुरे देवता मानो इन्द्र अगारी ॥

॥ दोहा ॥

सुनी खबरि उड़ती भई कही एक ने आय ।
आते नहिं आचार्य्य जी सभा गई घबड़ाय ॥
करि सलाह कछु महतजन दीने तुरत पठाय ।
ज्यों त्यों करि लाये उन्हें दिये सभा बैठाय ॥

॥ छन्द ॥

रावबहादुर बेचरदासा । किये सभापति करि विश्वासा ॥
उनने प्रथम वक्तृता दीनी । सार भरी सब विधि रंग भीनी ॥
हम सब वास्तव में पौराणिक । पुनि सब ही हैं मूर्ती पूजक ॥
मूर्तीपूजा मैं भी करता । विना पुराण पैर नहिं धरता ॥
परि हम यहां इस लिये आये । उभय महाशय दर्शन पाये ॥
जो संवाद सभा में होई । पक्षपात तजि सुनिये सोई ॥

स्वामी जी का पक्ष यही है। पूजन प्रतिमा भला नहीं है॥
वेद निषिद्ध बताते इसको। कहते पाप कर्म हैं जिसको॥
पै विपरीत सर्वथा याके। श्री आचार्य्य पक्ष है ताके॥
विद्यापूरित सारभरी जो। चित दे सुनियेगा खबरी जो॥
क्रोधा वेग हठादिक बादा। आग्रह त्यागि सुनो संवादा॥
वेदविहित जाकूं जो जाने। सत्य समझि ताकूं सो माने॥
यह पुरुषार्थ देखि जो पढ़ता। ताके उभय धनि कहैं करता॥
एक लंग ठक्कर जी को जानो। दूजे शिवनारायण मानो॥
इसका जो होवे परिणामा। ताके आगो उभय सुमाना॥
जिस का पक्ष समर्थन होवे। सोई निज मत से कर धोवे॥
यों सुनि शिवनारायण बोले। कहन लगे कछु बचन अतोले॥
ठक्कर जी उठि उत्तर दीया। पत्र प्रतिज्ञा का रखि दीया॥
सभा माहिं पढ़वाया वाको। सुनत मौनि ह्वै बैठे ताको॥
बोले कमलनयन आचारी। जिनने पण्डित सभा संभारी॥
सो सब हम को देंय बताई। किस किस मत के हैं वह भाई॥
तब हम निज मंतव्य बतावें। सभा माहिं सबकों समझावें।
विदुष सदस्य कहन यों लागे। कौन कहै निज मत तब आगे॥
जैसो जाको है विश्वासा। तैसो ताको मत है खासा॥
तुम्हें प्रयोजन है क्या याते, सीधी करो आपनी बाते॥
वृथा असंगतिही कहते हो, व्यर्थ समय खोटा करते हो॥
जौन सभापति आप बताये, सो स्वीकृत सबके मन भाये॥
श्रोता जो तिन को अधिकारा, सुमति अन्त करें निरधारा॥

॥ दोहा ॥

कालिदास गोविन्द जी यह सुनि बोले बैन।
सम्बोधन करिकें कहो मानि लेउ तुम अैन॥
सभा उपस्थित सुजन जे आप सहित सब लोग।
करूं प्रतिज्ञा पूर्ण मैं समझि उचित संजोग॥
बिना पक्ष और सत्ययुत अपनी बुधि अनुसार।
दुहू ओर को पक्ष लिखि धरिहौं सभा अगार॥
नष्ट समय नहिं कीजिये व्यर्थ वितंडा माहिं।
विज्ञ विदुष पंडितनु की यह शैली है नाहिं॥

॥ छन्द ॥

कमलनयन आचार्य्यन इस पर ध्यान दिया था ।
तब स्वामी महाराज मधुर आलाप किया था ॥
समझा है दिन धन्य बड़ा शुभ मंगलकारी ।
अब आवश्यक विषय धर्म का किया अगारी ॥
वार्तालाप निमित्त सभा में आप पधारे ।
होता है अनुमान देखि समुदाय जु भारे॥
प्रबल हुआ उत्साह सत्य के निर्णय कारण ।
करिये पक्ष समर्थ प्रतिज्ञा जो की धारण ॥
मेरा जो कुछ पक्ष सभापति सुना दिया है ।
सत्तमता के साथ सभी ने जान लिया है ॥
उचित आप पर हुआ मूर्ति पूजा के तांई ।
दे प्रमाण सिधि करें चारि वेदों के मांई ॥
मूर्ती में संचार प्राण का जिस से होता ।
आवाहन का कृत्य विसर्जन किस से होता॥
पूजनादि करतूति प्रमाणिक कर दिखलावो ।
वेदों के पढ़ि मंत्र अर्थ सब को समझावो ॥
वास्तव में मध्यस्थ वेद हैं चारों हमरे ।
लिखा हुआ संवाद पढ़ेंगे सज्जन सबरे ॥
सम्मति का अधिकार बराबर सब को होगा ।
निर्धारन परिणाम करन का अवसर होगा ॥
स्वतंत्रता के साथ विदुष जन अनुमति देंगे ।
पढ़ि विचार संवाद उचित शिक्षा को लेंगे ॥
समीचीन यह युक्ति तनकहू मन नहिं भाई ।
कमलनयन आचार्य्य ग्रहण कीनी हठताई ॥
आशय था सब यही प्रयोजन ठीक यही था ।
करना वार्तालाप सभा में ठीक नहीं था ॥
इस रगड़े को देख सेठ इक उठि कर बोले ।
आदि अन्त तक कहे सो हिले बड़े अमोले ॥
शास्त्रार्थ के अर्थ आदि की सभी कहानी ।
अपने को तरकीब भली विधि टाल बतानी ॥

सब विधि हो लाचार यहां तक ये आये हैं ।
कहते चित्र विचित्र सभा में अब पाये हैं॥
यह सुन कर हो चुप्प बिना उत्तर के दीये ।
होकर लज्जित महासभा से उठि चलि दीये ॥
ऐसा लखि व्यवहार सभापति कहने लागे ।
सुनिये जी आचार्य्य कहां जाते हो भागे ॥
बिना कहैं कुछ जात कहा यह मनमें आया ।
चमत्कार पांडित्य नहीं अपना दिखलाया ॥
सहस्रावधि हम लोग बड़े उत्साहित होकर ।
सुनने को संवाद धर्म का आज मनोहर ॥
सब को किये निराश तुम्हें जाना नहिं चहिये ।
स्वामी जी की सुनी आपनी भी पुनि कहिये ॥
फिर स्वामी जी कहा सुनो आचार्य्य हमारी ।
प्रतिमा पूजा सिद्धि करन की पैज तुम्हारी ॥
लाखों का निर्वाह मूर्तिपूजा करती है ।
मूर्खजनों का पेट बिनाश्रम के भरती है ॥
ऐसा अवसर फेरि कभी नहिं तुम पाओगे ।
होवेगा उपहास यदपि हटि अब जाओगे ॥
परक्षण भर भी कठिन ठहरना उन्हें होगया ।
सभा त्यागि चलिदिये चित्त विक्षप्त होगया ॥
सेठ लक्ष्मीदास बोलजी ठाकुरशी ने ।
प्रकट किया अति शोक बुरा माना सब ही ने ॥
कुछ न किया आचार्य सभा से जो उठि धाये ।
कोरे ही घर गये अनूठे ही बन आये ॥
किया सभा में प्रश्न सेठि गोविन्ददास जी ।
सब को दो समझाय कथा इस के विकास की ॥
मूर्ती पूजा चली सनातन से है आई ।
अथवा है आधुनिक दीजिये हमें बताई ॥
स्वामी उत्तर दिया ध्यान देकर सुनि लीजै ।
बहुतहि थोड़ा समय प्रवृत्ति इसका गुनि लीजै ॥
बुद्धजैन के बाद पुरानिक पंथ चलाया ।
मूर्ती पूजा धर्म इसीने सबै बताया ॥

ऋषिकृत जैसे ग्रन्थ पुराने तुम देखोगे ।
प्रतिमापूजनमात्र नहीं तिनमें पेखोगे ॥
यौक्तिक दे व्याख्यान सिद्ध कर यह दिखलाया ।
वेदादिक सच्छास्त्र पाप इस को बतलाया ॥
पड़ा प्रभाव महान एक मुख सब उठि बोले ।
स्वामी जी ने सत्य सुनाये वचन अमोले ॥
भली मिटाई भ्रान्ति कुढ़ाया भला बखेड़ा ।
पाप मार्ग से आज किया तुम भला निखेड़ा ॥
सभापती महाराज धन्य कह वचन सुनाया ।
स्वामी का सत्कार किया गलहार पिन्हाया ॥
सेठि छबीलेदास आपनी निज गाड़ी में ।
स्वामी को बैठाय ले गये निज आड़ी में ॥
नगर माहिं होगया विदित प्रतिमा का खंडन ।
श्री स्वामी की विजय वेदमत का शुभ मंडन ॥

***

जौलाई के निकट जाय पूना में उतरे ।
रहे मास द्वै पूर्ण धर्म वैदिक नित प्रचरे ॥
दिये बहुत व्याख्यान नगर का किया सुधारा ।
आर्य्यसमाजहि थापि देश का करि उपकारा ॥
पांच दशक व्याख्यान मरहठी भाषा माहीं ।
लोगनु दिये सुपाय टूंकु लिखि तुरत वहां ही ॥
समाचार इक पत्र लोक हितवादी माई ।
समालोचना करी उचित महिमा तिन गाई ॥
पुनि पूना ते बगदि बम्बई आनि विराजे ।
इस विरियां श्री प्रभू टिके बिच आर्य्यसमाजे ॥
तुरत मेटि सब देय जिज्ञासू के संदेहां ।
ठहराया कर्त्तव्य आपना स्वामी एहां ॥
ब्रह्मसमाजी विदुष प्रतिष्ठित बुद्धिविशारद ।
करत आय संवाद होत तिहि पक्षवदारद ॥
स्वामी जी करिप्रेम उन्हें सीधा समझाते ।
वे करते हठवाद पक्ष उलटा उरझाते ॥

ब्राह्म लोगन सोचि मता अपना ठहराया ।
स्वामी जी को तरफ आपनी करना चाहा ॥
नहीं चलेगा काम साथ बिन लिये हमारे ।
सूरज देखा चहैं जोरि कर दीप उजारे ॥
पीछे अनुभव सिद्धि होगया था यह पूरा ।
ज्योति देय खद्योत कहा रवि माहिं अधूरा ॥
ऐसा ही कुछ राग ढूंढियनमिरर अलापा ।
पाछें होगया चुप्प सोचि निज वृथा कलापा ॥
एक दिना उपदेश समय बहु भद्र विदुषजन ।
सुनते थे व्याख्यान पास स्वामी के दे मन ॥
बड़े घरों की बाल अचानक जुरि मिलि आईं ।
पुछवाया जब हाल दिया उनि यों बतलाई ॥
ऐसी कीजै कृपा दीजिये संतति हम को ।
करिये प्रभू निहाल मिले जग में यश तुम को ॥
स्वामी उत्तर दिया सत्य उपदेश हमारा ।
पतिसेवा को करो होय कल्याण तुम्हारा ॥
वे साधू हैं नहीं नहीं हम हैं वैरागी ।
जो देते औलाद पाप के बनते भागी ॥
यह सुनि भई निराश बगदि निज घर को चालीं ।
स्वामी के सुनि गूढ़ बचन भै सभा विहाली ॥
जितने साहूकार सेठ थे वहां उपस्थित ।
ग्रहणिनु का कर्त्तव्य देखि हुए अति लज्जित ॥
प्रायः उन की वधू बेटियां संतति काजें ।
वैरागिनु पै जायं त्यागि निज कुल की लाजें ॥
ऊंच नीच का ध्यान छांड़ि सेवा करती हैं ।
तन मन अर्पण करें भेट धन भी धरती हैं ॥
पानी पानी हुए दृष्टि नीची कर बैठे ।
कारण लीना समझि बने जेठे अति हेठे ॥

* * *

एक दिना व्याख्यान माहिं स्वामी जी बोले ।
भारत के जब राज धर्म तिन दे सब खोले ॥

वैष्णव का जो ह्रास और अवनति का कारण ।
मूरखता औ दुष्ट मंत्रियों का अवधारण ॥
प्रति दिन धन का नाश तमाशों में होता है ।
आफूमादिक द्रव्य पान करके सोता है ॥
शक्ति देह की नशी मानसिक स्मृति खो गई ।
बाढ़ा इन्हें प्रमाद ज्ञान की कमी हो गई ॥
जिससे राजप्रबन्ध माहिं गड़ बड़ हो जाती ।
नित्य बखेड़े रहैं आपदा भी अति आती ॥
विद्या बुद्धि विचार और मंत्री शुभ होते ।
करते जो पुरुषार्थ कबहुं नहिं खाते गोते ॥

***

बिलसन साहब बड़े पादरी एक यहां पर ।
लिख आमंत्रण पत्र पठाया निज उनके घर ॥
उत्तर उन नहिं दिया मिले स्वामी खुद जाकर ।
हुआ वर्तालाप खूब धार्मिक विषयों पर ॥
होते हुए परास्त पक्ष अपने को जाना ।
स्वामी जी के तईं टलाया किया बहाना ॥
आवश्यक है काम मुझे अब माफ़ी दीजै ।
स्वयं आप से मिलूं बात पूरी करि लीजै ॥
पौराणिक बम्बई जुरे मिलि मतो बनायो ।
रामलाल हे विप्र तिन्हें जाकर अपनायो ॥
स्वामी जी से आप भिड़ें हम देयं सहारा ।
होय बड़ा विख्यात देश में नाम तुम्हारा ॥
होकाभाई थान सभा का निश्चय कीया ।
भौजाऊजी विदुष सभापति वर करि लीया ॥
बहुत हुआ समुदाय एकट्ठा सभा मंझारी ।
मूर्ती पूजा विषय देखने वेद मंझारी ।
स्वामी जी ने कहा वेद वह कौन बताओ ,
मूर्ती पूजा लिखा जहां हमको दिखलाओ ॥
रामलाल जी खटर पटर की कहने लागे ।
लेखा पुराण प्रमाण एक दो पढ़ने लागे ॥

स्वामी जी ने कहा सुनो पंडित धरि ध्याना ।
यह नहिं माना जाय वेद का देउ प्रमाना ॥
पंडित जी ने कभी वेददर्शन नहिं कीये ।
असम्बद्ध बकि उठे सभापति ने चुप कीये ॥
सम्बोधित कर कहा सुनो पण्डित जी हमरी ।
उत्तर देवो सतर्क होयगी महिमा तुम्हरी ॥
यह नाहीं है उचित आप जैसा बकते हो ।
स्वामी जी का कथन त्याग कर तुम कहते हो ॥
स्वामी पढ़त अन्य आप कुछ और अलापें ।
यह नाही पांडित्य वृथा की कलह कलापें ॥
रामलाल जी शान्ति मौन धारण करि लीनो ।
सभापति जी ने तुरत विवस्था इस विधि दीनी ॥
स्वामी जी का पक्ष प्रबल उत्तम औ सत है ।
पण्डिजी का कथन हीन विश्वास रहित है ॥
भौजाऊ जी साथ पुराणी द्वेष बढ़ाया ।
अनुचित उनके लिये बहुत सा उन्हें सताया ॥
सत्यभाषिता बड़ी प्रबल जग में होती है ।
झूंठों को करि नष्ट प्रतिष्ठा सब खोती है ॥
शास्त्री का ब्रह्मत्व प्रबल होता जाताथा ।
पौराणिक मतवाद निरासोता जाता था ॥

* * *

एक महाशय सेठ बम्बई नलबज़ार के ।
करते थे व्यापार सैकड़ों ओहज़ार के ॥
विज्ञापन उन दिया प्रयोजन उस का यह था ।
अब मैं हूआ आर्य्य प्रथम हिन्दू मत का था ॥
जिस को हो अभिमान मुझे आकर समझावे ।
रोक रुपैया नक़द सवा से साई पावे ॥
परि वेदों से करे मूर्तिपूजा की सिद्धी ॥
मुझ को ले अपनाय मिले उस को यह ऋद्धी ॥
किस की थी सामर्थ्य कौन आसमुहें पड़ता ।
मूर्ती पूजा आय सिद्ध वेदों से करता ॥

निकल गई थी पोल सकल मतवादी हारे ।
पौराणिक दुरि गये फिरे थे मारे मारे ॥

* * *

दक्षिण देश हिलाय दिशा उत्तर को आये ।
दई बम्बई त्यागि फ़रुख़ाबाद सिधाये ।
नगर फ़रुख़ाबाद श्रेष्ठ मतवादिन साथा ।
होती रहती छेड़ वही उनि ऐसी बाता ॥
बहुत शीघ्र ही आप धर्म ईसा स्वीकरि हैं ।
निश्चय हम को हुआ नाहिं कबहू यह पर है ॥
स्वामी उत्तर दिया सुनो ईसाई भाई ।
थोड़े दिन में आप देखि हैं प्रभु प्रभुताई ॥
ईसा का मत छोड़ बहुत से आर्य्य बनेंगे ।
होगा वेद प्रचार बाईबिल नाहिं सुनेंगे ॥
शाला का धन बदलि भाष्य के माहिं लगाया ।
सब को चलते समय आगमन हेतु बताया ॥
आर्य्यसमाज बनाय सूचना मुझ को दीजे ।
निश्चय मेरे लिये यहां पहुंचा देखीजे ॥
वेदभाष्यभूमिका छपाने का प्रबन्ध सब ।
प्रेस लाजरस माहिं बनारस जाय किया तब ॥
निश्चय करि चलि दिये जौनपुर जाय चिताया ।
आर्य्यसमाज का हाल वहां पर सबै सुनाया ॥
कछुक दिना ही ठहरि अयोध्या चले गये थे ।
करत रहे उपदेश भूमिका लिखत गये थे ॥
सरजू तट को त्यागि लखनऊ पहुंच गये थे ।
वेदभाष्यभूमिका यहां रहि लिखत भये थे ॥
धनी राज ब्रजलाल धार्मिक बातें चीतें ।
नित प्रिति करते आय बैठि कर स्वामी जी ते ॥
कर्णवास में आय बरेली ते ठहरे थे ।
दोदिन गङ्गा तीर रमण करते विहरे थे ॥
दिल्ली का दरबार निकट ही आय गया था ।
तहां जाय उपदेश वेद का करन चहा था ॥

पट मण्डप डेरादि सभी सामान बताया ।
सो आज्ञा अनुकूल साथ में तुरत पठाया ॥
फ़र्श कनातें और रसद का सब सामाना ।
गाड़िन में लदवाय किया था सभी रवाना ॥
रईस छलेसर और बहुत से ठाकुर लोगा ।
स्वामी के सँग चले बनी नौकी संयोगा ॥
दिल्ली जाते समय बम्बई वाले आकर ।
स्वामी जी से मिले रेलगाड़ी में जाकर ॥
स्वामी कर सत्कार साथ अपने करिलीना ।
कम्पे आपने माहिं ठहरने को कहि दीना ॥
सब मिल कर इक साथ समय पर दिल्ली आई ।
बाग़ शेरमल बीच लगाये डेरा जाई ॥
इसी ओर को कम्प अवध के पड़े हुए थे ।
दिल्ली के चहुं ओर बहुत नृप टिके हुए थे ॥
पण्डित और रईस सर्वसाधारण आवें ।
स्वामी का उपदेश सुनें हर्षित होजावें ॥
ईरानी मौलवी एक दिन मिलने आये ।
कायथ करि अनुवाद मौलवी बोल सुनाये ॥
महाराज कश्मीर मुसाहिब खास पठाये ।
नीलाम्बर जी आप पास स्वामी के आये ॥
चाहत मिलना नृपति मनोरथ प्रकट किया था ।
स्वामी जी ने उचित समझि स्वीकार किया था ॥
चहुंओर से आय देश के जुरे प्रतिष्ठित ।
राजा औ अधिराज लोक के हों एकत्रित ॥
धार्मिक और प्रसिद्ध सभी उपदेष्टा आवें ।
अपने निज मन्तव्य समझ करि सभी सुनावें ॥
यह अवसर लखि मुख्य प्रयोजन यही सोच कर ।
करने वेद प्रचार पधारे आप यहां पर ॥
लिखि आमंत्रण पत्र सभी के थान पठाये ।
करने धर्म बिचार न्योति सब को बुलवाये ॥
महाराज इन्दौर बड़ा उद्योग किया था ।
सब नृपगण के हेतु यही सन्देश दिया था

स्वामी का उपदेश सुने एकत्र होय कर ।
तापर करें विचार सकल विद्वेष धोयकर ॥
परि न हुआ यह सिद्धि मिला अवकाश न नेकहु ।
सब का कहना कहा इकट्ठे भये न एकहु ॥

* * *

कन्हैयालाल अलखधारी जी बाबू नवीनचन्दर राय ।
बाबू केशवचंद्रसेन औ मुंशी इन्द्रमणी हूं आय ॥
सर सैय्यद अहमद ख़ां साहब टोपी टरकी धरे लिलार ।
बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि स्वामी सँग में किया विचार ॥
बहुत विदुष भारत के आये तिन्हकी नाहिंन होय शुमार ।
उनमें एक यहू किंकर हो जैसे पँचयो अस्व सवार ॥
कहा कहूं वा दिन की बनता मोपर कछू कही ना जाय ।
देवलोक के मनो मुनीश्वर स्वामी समुहे बैठे आय ॥
मन सामुहे महर्षि मँडली जा विधि कबहूं करे सवाल ।
सोई लखि जियरा में दरसी आगे का तुम सुनो हवाल ॥
अपने अपने कहे मनोरथ निज मन्तव्य दिये बतलाय ।
स्वामी जी ता पाछे बोले सुनलो साहब कान लगाय ॥
धार्मिक संशोधन में हम सब पूरे चित को रहे लगाय ।
करि संदेह निवारण सबरे सच्चे धर्महि लेउ दृढ़ाय ॥
शुद्ध भाव से ग्रहण करें फिर तापर सबको देयं चलाय ।
भेद भाव औ द्वेष कुटिलता जाते जगकी सबै नशाय ॥
पानी दूध समान एक हूं मैत्री भावहि देहु बढ़ाय
सच्चे अनुरागी बनि करिकै वैदिक धर्महि देउ चिताय ॥
जोकछु भ्रम काहूको होवै सो सब अपना लेउ मिटाय ।
मैं उद्यत हूं सदा सर्वदा पूरी तरह देउं समझाय ॥
हाय दुराग्रह की महिमा सब निकलो नाहिं कछू परिणाम।
बड़े खेद की बात मित्रवर क्योंकर करें किसे बदनाम ॥
अन्तःकरण मलिन हैं जब तक तब तक सत्य न होय प्रकाश ।
धर्मोदय समझो फिरि कैसा कबहुं न होता ज्ञान विकाश ॥
सभा विसर्जन करि उठि चाले दूजे दिन की टाल बताय ।
फेरि न मेलो भयो कहूं पर नहिं स्वामी जी लियो बुलाय॥

आर्य्यसमाजिक नियम बना कर वेदभाष्य भाषा छपवाय।
विज्ञापन दोनों के स्वामी मेला माहिं दिये बंटवाय॥
स्वामी जी को सम्मति दीनी केशवचन्द्रसेन ने आय।
जो तुम चहो सफलता अपनी तो हम तुमको देयं बताय॥
करो प्रसिद्ध यही पबलिक पर जो कुछ कहता सभा मँझार।
ईश्वर कहवाता है मुझसे यामें नाहिं कछू अधिकार॥
यह सुनि स्वामी क्रुद्धि करि बोले केशव तुम्हरा तुच्छ विचार।
झूठ बनौवा हम ना करिहैं अन्तरयामी है करतार॥
ईसा और मुहम्मद के सम मुझे पैग़म्बर बननो नाहिं।
पीछे होय फजीता भारी पापी बनूं जगत के माहिं॥
अर्पण करी पुस्तकें अपनी मुखिया लोगन को महराज।
मद्य मांस का खाना पीना खण्डन कीना बैठि समाज॥
मुंशी हरसुखराय महाशय मालिक कोहनूर अख़बार।
पण्डित जी मनफूल विदुष वर विक्रमानसिंह जी सरदार॥
कन्हैयालाल अलखधारी जी स्वामी जी से कही पुकार।
भ्रमण करो पंजाब देश में जासे सुधरे देश हमार॥
आश्वासन दे करी प्रतिज्ञा शीघ्रहि आवेंगे पंजाब।
करि दर्बार त्यागि दिल्ली को मेरठ स्वामी गये शिताब॥
कछु दिन सूर्यकुंड पर बसि कर पहुंचि सहारनपुर में जायं।
लिखत रहे भूमिका वेद की औ उपदेशहु देत सुनाय॥
लाला चंडीप्रसाद जी ने प्रश्न अनेक किये थे आय।
स्वामी जी उत्तर सब दीने उत्तमता पूर्वक समझाय॥
आया निमंत्रण चांदापुर से स्वामी ताहि किया स्वीकार।
बहुतक पुरुष प्रतिष्ठित संग में भी मेला को हुए तैयार॥
सन अट्ठारह सौ सतहत्तरि पंथरे मार्च लेउ तुम जानि।
स्वामी पहुंचि गये चांदापुर डेरा दिये तहां पर आनि॥
जिलाधीश के आगे जाके अपना किया प्रकट अभिप्राय।
आज्ञा लेकर मुंशी जी ने मेला दिया वहां लगवाय
अपने ढंगका अजब निराला मेला लाला दिया लगाय।
मुंशी प्यारेलाल सोचिकर धार्मिक लीडर लिये बुलाय॥

उप मज़हब के अगुआ आये मेला माहिं रहे घहराय ।
अपनी अपनी तान अलापें सब परजा को रहे सुनाय ॥
भये सुशोभित जो मेला में तिन के नाम जु देउं सुनाय ।
न्यारे न्यारे कम्प बनाकर तम्बुन माहिं दिये ठहराय ॥
स्वामी दयानन्द सरस्वती संस्थापक जे आर्य्यसमाज ।
दिग् विजयी वैदिक आचारज उपदेशक पूरे महाराज ॥
मुंशी इन्द्रमणि जी साहब बासी शहर मुरादाबाद ।
महमदी मत के जे प्रतिपक्षी प्रसिद्ध जिन को जग प्रतिवाद ॥
टी०, जे०, स्काट पादरी साहब नगर बरेली के सिरताज ।
अनुवादक इंजील शास्त्र के लाजेशियन बड़े कविराज ॥
नवल पादरी और पारकर जानसन साहब पुरुष महान ।
पादरी जान टाम्सन् साहब तेहू मेला पहुंचे आन ॥
अर्बी के उस्ताद मौलवी महम्मद कासम साहब नाम ॥
ज़िला सहारनपुर के बासी देवबन्द जिन का निजधाम ॥
एक मौलवी दिल्ली वाले सय्यद जाति बड़े सरनाम ।
मन्तक़ विद्या के पण्डित है बहस करन का जिन का काम ॥
इतने इतर और बहुतेरे आये विदुष बड़े विद्वान् ।
मुंशी प्यारेलाल महाशय सब का किया युक्त सनमान ॥
माघ महीना अष्टादश तिथि भोरे सभा विराजे आय ।
सभापती मंत्री चुनि लीने पुनि उद्देश्यहु दिये सुनाय ॥
मंडप सभा सजायो ऐसो शोभा कछू कही ना जाय ।
ऐमफ़ीथियेटर के समान हो देखत मन मोहित होजाय ॥
ईश्वर, जीव, प्रकृति, औ सृष्टि इन पर करें विदुष व्याख्यान ।
लेखक लिखत जायं सब तर्कें ताको पबलिक करे प्रमान ॥
एक स्वामी जी दूजे पादरी तीजे मौलवी सभा मंझार ।
अपने अपने मत के माफ़िक इन तीनो का चला विचार ॥
जो संवाद हुआ मेला में मुद्रित भयो पुस्तकाकार ।
बड़ी अनोखी यह पुस्तक है पढ़ि सुनि होय धर्मसंचार ॥
शास्त्रार्थ चांदापुर देखो अवगत होय सकल वृत्तान्त ।
जैसे उत्तर स्वामी दीने सो समझो सब आदि उपान्त ॥

इति दशम मयूखः

अथ एकादश समुल्लासः

इतते चलि इकतीस मार्च को स्वामी पहुंचि लुधाने जाय ॥
जोटिस देकर दिवस दूसरे सारा नगर दिया चेताय ॥
भद्र पुरुष जुरि मिलि सब आये स्वामी का सुनने व्याख्यान ।
प्रति दिन श्रोता बढ़ने लागे खिचने लगा इधर को ध्यान ॥
लुधियाने के जज बहादुर मिष्टर कारष्टीफन नाम ।
संग पादरी बेरी आये मिलने स्वामी जी के धाम ॥
बातन बातन में यह बोले पढ़त भागवत का इतिहास ।
जैसे कृष्ण बताये वामें ताते होय नहीं विश्वास ॥
महापुरुष हों श्री कृष्ण जी बुद्धि नहीं करति स्वीकार ।
स्वामी तत्क्षण उत्तर दीना कीना प्रबल तासु प्रतिकार ॥
जे अपवाद लगाये उस में ते सब झूंठ और निर्मूल ।
प्रामाणिक है नाहिं भागवत जो मानत सो करते भूल ॥
बुद्धि के स्वीकार करन में बड़ी विलक्षण सुनते बात ।
ईश्वर का आत्मा कबूतर बनि प्रविशो मरियम के गात ॥
क्वारी विचारी थी मरियम जो ताते प्रकटे ईसा आय ।
इस को बुद्धि मान लेती है यह आश्चर्य्य कहो ना जाय ॥
मछरी एक खवाय अघाये सहस्रावधि मानुष की गोल ।
भरि करि जीवित हूं उठिधाये ताकों मानत बात अमोल ॥
पौराणिक पंडित जी इक दिन व्याख्यान सुनि गये रिसाय ।
पाप लगे इन को मुख देखें अब उठि चलो हमारे भाय ॥
अकस्मात् सुनि स्वामी बोले पंडित सुनो हमारी बात ।
कुछल बैठि सुनो उपदेशहि बुद्धी चित्त शुद्ध हो जात ॥
शास्त्रार्थ को मैं उद्यत हूं जो चाहे मोसूं बतराय ।
धर्म विषय में हो कछु शंका पूछो बेखटका खो आय ॥
पूं तक नाहिं कयी काहू ने सबरे नगर लुधाने माहिं ।
सन्नाटा ही रहा यहां पर कोई समुहै आया नाहिं ॥
एक मदर्सा पादरियों का पुत्री तहां पढ़ाई जाय ।
पंडित गौड़ ब्राह्मण थे इक जो पंजीरी पढ़ावें आय ॥

तिन की रुचि ईसामल ऊपर पढ़ि इंजील ढुलकती जाय ।
बपतिस्मा की तिथि निश्चय करि गिरजा माहिं दई ठहराय ॥
दैवयोग ते इन्हीं दिनों स्वामी पहुंचि लुधाने जाय ॥
वैदिक धर्म सुनाय महातम ईसाई ते लियो बचाय ॥
स्वामी छोड़ लुधाना दीना अब आगेका सुनना हाल ।
रेल सवारी में सवार हो लवपुर पहुंचि गये तत्काल ॥

॥ रोला ॥

उनईस से चौंतीस विक्रमी संवत था जब ।
स्वामी जी लाहौर रेल से उतरे थे तब ॥
मुंशी हरसुखराय जु मालिक कोहनूर के ।
पंडित जी मनफूल प्रतिष्ठित बड़े नगर के ॥
स्वामी स्वागत काज रेल पे पहुंचे जाई ।
करि पूरा सनमान साथ ही चले लिवाई ॥
रतनचन्द दीवान बाग में जा ठहराया ।
खानपान सनमान यथोचित सभी कराया ॥
भारी रहती भीड़ बड़े श्रोता तहं आते ।
करते प्रश्न अनेक उचित उत्तर सब पाते ॥
बीस पांच अपरेल बावली साहब माहीं ।
स्वामी जी व्याख्यान दिया था जाय तहां ही ॥
वेद और वेदोक्तधर्म उपदेश दिया था ।
पूरा पड़ा प्रभाव जाल सब काट दिया था ॥
पौराणिक हूं कुपित नगर में रूप दिखाये ।
रत्नचन्द दीवान जाय पूरे भड़काये ॥
हुआ यही परिणाम बाग को त्यागि दिया था ।
निर्भय होकर सत्य धर्म उपदेश किया था ॥
भाषण करने योग्य संस्कृत भाषा माहीं ।
घड़ी दो घड़ी करे पुराणिक ऐसा नाहीं ॥
इस पर भी प्रतिवाद विरोधी करने लागे ।
वृथा अनापशनाप जहां तहां बकने लागे ॥

उलटा हुआ प्रभाव उसे मालूम हो गया ।
करने को शास्त्रार्थ सकल विज्ञान खो गया ॥
हलचल देखी नगर सनाढ्य एक पंडित दीनो ।
स्वामी जी से आय बीनती या विधि कीनी ॥
उचित नहीं इस समय मूर्त्तिपूजा का खंडन ।
अवशि दीजिये त्यागि धर्म का करिये मंडन ॥
तो यह सकल विरोध तुरत ठंडा पड़ि जावे ॥
महाराज कश्मीर बड़े राज़ी हो जावे ॥
स्वामी जी संक्षेपरूप से उत्तर दीया ।
किसको करूं प्रसन्न कौन का राखूं जीया ॥
ईश्वर आज्ञा वेद करूं मैं उनका पालन ।
अथवा वेदविरुद्ध चलूं करि सब का लालन ॥
यह सुनकरि मनफूल सकुचि औ शरम गये थे ।
फिरि नहिं ऐसे वचन भूलिकरि कभी कहे थे ॥
एक दिना पादरी और बंगाली आये ।
सब वेद के विषय मांहि संवाद चलाये ॥
समीचीन करि समाधान सन्तुष्ट किये थे ।
उत्तर भले प्रकार सभामधि तिन्हें दिये थे ॥
भानुदत्त जी नाम एक पण्डित लाहौरी ।
सुनते थे उपदेश आय स्वामी के ठौरी ॥
स्वामी के अनुकूल लगे थे खण्डन करने ।
पौराणिक लखि उन्हें कुपित हो उठे पजरने ॥
शिवनारायण विदुष अग्निहोत्री जी एका ।
सम्मति देने लगे नाहिं कछु रखत विवेका ॥
स्वामी जी ने कहा बिना सोचे क्यों कहते ।
समझे हो नाह विषय पुष्ट हो क्यों ना रहते ॥
पंजाबियों की दशा उन दिनों कुछ विचित्र थी ॥
भिन्न भिन्न मन्तव्य रुचि सबकी विचित्र थी ।
सुन स्वामी उपदेश खुलगये सब के नैना ।
करने लगे विचार समझने लागे बैना ॥

जो उठते सन्देह हृदय में उनको भाई ।
सो सब साथहि साथ तत्क्षण जाति बिलाई ॥
कछु दिन सोचत रहे करत आन्दोलन भारा ।
बहुधा शिक्षित सिमिट किया यह अमिट विचारा ॥
दक्षिण मुम्बापुरी और पूना मधि जैसे ।
आर्य्यसमाज बनाय लिया विदुषन है तैसे ॥
वैसा ही लाहौर माहिं बनिजाना चहिये ।
यही प्रार्थना निकट जाय स्वामी के कहिये ॥
विस्तृत हैं वे नियम बम्बई मांहिं बने जो ।
उनको स्वामी शोधि किये दश तुलो चुने जो ॥
लवपुर आर्य्यसमाज होन उत्साहिक लागो ।
वैदिक धर्म प्रचार देश पंजाबहि जागो ॥
कछु श्रद्धालू पुरुष आय स्वामी के पासा ।
विनती करी बनाय दिखाई अपनी आशा ।
पदवी धारन करो गुरू आचार्य्य बनो अब ।
सुधरे आर्य्यसमाज होयं मंगल हमरे सब ॥
मेरा है उद्देश्य गुरूपनकी जड़ काटूं ।
गद्दीस्थों की नेव टेव सब जगते को छांटूं ॥
जिससे मेरा द्वेष उसे स्वीकार करूं मैं ।
नया चलाऊं पन्थ पाप की पोट धरूं मैं ॥
रखो सहायक मुझे नाम लिख लीजे मेरा ।
वेद धर्म के निमित्त करूंगा जब तब फेरा ॥
वैदिक धर्म प्रचार निमित बाहिर को जाते ।
घरि घरि के उपदेश लौटि लवपुर मधि आते ॥
लवपुर ब्रह्मसमाज वार्षिक उत्सव कीना ।
आमंत्रण का पत्र भेज स्वामी को दीना ॥
तीन सैकड़ा आर्य्यपुरुष संग लेकर आये ।
स्वामी ब्रह्मसमाज सभामधि एव विधि धाये ॥
लवपुर आर्य्यसमाज सभा मैनेजिंग कीनी ।
स्वामी जी से जाय तासु में सम्मति लीनी ॥

उत्तर मिला स्पष्ट सभासद् नाहिन उसका ।
देवे सम्मति वही होय अधिकारी जिसका ॥
एक नवाब रईस बड़े लाहौर शहर के ।
उनकी कोठी मांहि किया उपदेश ठहरि के ॥
सुनते थे नवाब पास ही टहल रहे थे ।
मुसल्मान मत ध्वंस आप करि प्रबल रहे थे ॥
कहा एक ने आय सुना व्याख्यान आपका ।
होवे न आवेश मजहबी मान दापका ॥
स्वामी जी ने कहा आप क्या मुझे डराते ।
महिमा करते कभी अन्य मत की कुछ पाते ॥
एक वेद का मार्ग खुला ईश्वर आज्ञा है ।
झूंठा सब मतवाद फेरि अपवादहि क्या है ।
कोई आकर सुनो करूं मैं खण्डन सबका ॥
जिसको हो अभिमान करे मण्डन निज मतका ॥
क्या राजा नवाब और क्या अफसर आला ।
सब को वैदिक धर्म महत्व सुनाने वाला ॥
ईश्वर के अतिरिक्त अन्य का भय नहिं मोको ।
नाहिन समझो कोऊ तनिक हू इसमें धोको ॥
प्रतिपालन है एक ईश आज्ञा का मेरे ।
दूजा अन्य विचार नेकहू नाहिन नेरे ॥
बैठे आय समक्ष हमारे करे विचारा ।
होवे वेदविरुद्ध करूं ताको संहारा ॥
स्वामी जी पंजाब त्यागके किया मनोरथ ।
एक महाशय प्रगट किया कुछ ऐसा स्वारथ ॥
दीजे पलटि विचार कुछ दिना और ठहरि कर ।
कीजै धर्म प्रचार भला हो जाय यहां पर ।
स्वामी जी ने कहा सुनो एक बात हमारी ।
सब के मन में यही चाहना है अति भारी ॥
परि मैंने औचित्य आपना यह ठहराया ।
करूं धर्म उपदेश वेद मे जो बतलाया ॥

नगर नगर में जाऊं देश देशनु में डोलूं ।
यही घोषणा एक वेद बानी की बोलूं ॥
सब ही का हित साधि एकता सबको भानू ।
फेरि एक ही ठाम ठहरना किस विधि ठानू
लवपुर स्वामी त्यागि अमृतसर पहुंचे जाई ।
राम बाग़ के निकट एक कोठी के मांहीं
कीना जा विश्राम किराये ऊपर ली थी ।
आवश्यक जो वस्तु सभी एकट्ठी कर दीथी ॥
फैली चर्चा नगर सम्प्रदायक सब आवें ।
स्वामी जी उपदेश वेद का सबै सुना वें ॥
जिज्ञासू जन आय करें जिज्ञासा जैसी ।
स्वामी देयँ मिटाय रहै नाहिन फिर तैसी ॥
मुख्य प्रतिष्ठित सेठ और विद्वान् अनेका ।
सुन आय व्याख्यान लेयँ नित नया विवेका ॥
पौराणिक घबरायँ संस्कृत वाणी सुन सुन ।
नाहिन कछू बसाय रहैं बैठे सिर धुनि धुनि ॥
झूंठी बातें बना बना वह कहते फिरते ,
रचते मायाजाल गपोड़े पीछे करते ॥
सुनत वितण्डावाद सत्यवादी विज्ञानी ,
कहदेते थे साफ़ बकत हैं ए अभिमानी ॥
स्वामी जी महराज सर्वदा सत्य बताते ,
भ्रमजालों को काट धर्म उपदेश सुनाते ॥
फंसे अविद्या माहिं इन्हें कछु सूझत नाहीं ,
कठिन काम है बहुत कुकर्मों का जग माहीं ॥
आत्मिक बल होगया प्रबल फिर उनका इतना ,
गौरव समझन लगे आर्य्य कहलाना अपना ॥
जो हठि करै विरोध क्रोधहूं यदि दिखलावे ,
ताको करिके सहन प्रीतिपूर्वक समझावैं ॥
निकला यह परिणाम बनिगया आर्य्यसमाजा ,
बने सभासद आय प्रतिष्ठित बुधवर राजा ॥

लिखि भेजा लाहौर यह का विवरण सारा ,
आर्य्यसमाज बनाय किया हमरा निस्तारा ॥
काहू कारन नाहिं भये जो आर्य्यसमाजी ,
मूर्ती पूजन त्यागि हुए वैदिक विश्वासी ॥
वैदिक धर्मप्रचार प्रान्त में पूरा जागा ,
पौराणिक मत गिरा लँगूरा होकर भागा ॥
मूर्ती पूजक दीन भये शरणागत लीनी ,
रामदत्त सों जाय यही विनती तिन कीनी ।
राखो हमरी लाज आज असमौ है भारी ,
दयानन्द ने आय हाय सब बात बिगारी ॥
एक मात्र आधार आश्रय आप हमारे ,
होत जीविका नष्ट कौन अब याहि संभारे ॥
स्वामी से शास्त्रार्थ अवशि अब चलि के कीजै ,
इस लायक हैं आप देश में यह यश लीजै ॥
पण्डित जी समझाय कही उन से यह बानी ,
स्वामी जी महराज वेद के वक्ता ज्ञानी ॥
मेरी नहिं सामर्थ्य अगाड़ी उनके बोलूं ,
सच को उलटा करन हेत अपना मुख खोलूं ॥
यह कहि गये बराय जाय हरिद्वारहिं न्हाये ।
स्वामी जब तक रहे यगदि फिर नगर न आये ॥
विदुष और विद्वान् इस तरह देयँ टराई ।
हठधर्मिन की टेव व्यर्थ को लेयँ लराई ॥
एकसूट्टा-असिटेंट कमिश्नर कहने लागे ।
विनती करना चहें मूर्तिपूजक तब आगे ॥
दीजै खण्डन त्यागि फेरि सेवक वह सबरे ।
काटो सहज कलेश मिटाओ झगड़े हमरे ॥
स्वामी जी ने कहा सत्य तुम आपु न जानो ।
नाहिन शास्त्र विवेक धर्म हूं नहिं पहचानो ॥
ईश्वर आज्ञा वेद मानता हूं मैं उसको ।
सतके होय विरुद्ध फेरि नैं मानूं किसको ॥

मेरा है कर्तव्य वेद को सबे मनाऊं ।
वेदाज्ञा पर चलूं स्वयं औ तुमें चलाऊं ॥
कोइ सहायक होय विरोधी बन कर आओ ।
हानि लाभ नहिं गिनूं मोहि वह कितो सताओ ॥
चालीसक नवयुक विमुख हूं हिन्दू मत से ।
विन बपतिस्मा लियें कहत हम ईसा मत के ॥
उन्हनु आपनी एक अलग ही सभा बनाई ।
धर्म ईसवी हेतु रची तिन्ह खास बताई ॥
स्वामी का उपदेश सुनन को नित प्रति आते ।
वैदिक मत विज्ञान ध्यान से सुनकर जाते ॥
ऐसा हुआ प्रभाव उलटि सब की मत दीनी ।
प्रायश्चित् करवाय वेद की सतगति लीनी ॥
एक पादरी कहा मेज़ पर हम तुम खावें ।
स्वामी उत्तर दिया लाभ फिर कहा उठावें ॥
बढ़े परस्पर प्रेम पादरी ने यह बोला ।
स्वामी जी ने कहा एक मन्तव्य अमोला ॥
आपुस में तुम शत्रु और आवान्तर भेदा ।
उसको पहिले मैंटि करो ताको विच्छेदा ॥
बड़े हास्य की बात अपनपो नेक न पेखो ।
हम से जोरी प्रीति लाभ क्या इस में देखो ॥
स्वामी जी के उक्त वचन सुनि लज्जित होके ।
करि सलाम चलि दिए नदे पाये कुछ धोके ॥
कलकत्ता से एक पादरी को बुलवाया ।
सुनकर स्वामी नाम अमृतसर वह नहिं आया ॥

॥ रोला ॥

गुरुदासपुर चले छोड़ि अमृतसर दीना ।
आतिथ का सब भार डाक्टर साहब लीना ॥
स्वागत करने हेतु प्रतिष्ठित सब उठि धाये ।
देशी अफसर लोग करन दर्शन को आये ॥

स्वामी जी व्याख्यान धड़ल्ले से देते थे ।
करते थे उपदेश खींच मन को लेते थे ॥
मूर्तीपूजाध्वंस पुरानों का मत तोड़ा ।
इस पर हो नाराज़ हिन्दुओं ने मुख मोड़ा ॥
गणेशगिरि थे साधु वहां पर पंडित नामी ।
करने को संवाद उभारा संग में स्वामी ॥
उन्हनु कहि दिया साफ वही मत मेरा जानो ।
स्वामी जी सम तुल्य दूसरा हमको जानो ॥
पंडित दौलतराम लक्ष्मीधर बुलवाये ।
दीना नगर मझार पत्र लिख कर भिजवाये ॥
दोनों हुए अवाक़ वक्तृता स्वामी सुनकर ।
साहस हुआ न तनिक चले उठि आप आप घर ॥
बनि गया आर्य्यसमाज प्रतिष्ठित हुए सभासद ।
मेटे सकल विवाद गई कटि सबरी आपद ॥
कई योग्य औ भद्र पुरुष अधिकारी चुनकर ।
नोटिस दियो कराय करी संभाषण डटिकर ॥
लवपुर जाते समय प्रथम जालंधर माहीं ।
एक दिनाते अधिक वहां ठहरे हैं नाहीं ॥
फिरती चिट्ठियां आय टिके थे उक्त नगर में ।
विज्ञापन लगवाय दिये थे नगर नगर में ॥
चालीसक व्याख्यान दिये स्वामी जी नितप्रति ।
होने लागी वृत्ति सुनन वाले की समुचित ॥
मृतकश्राद्ध औ मूर्तिपूजना वृथा बताया ।
वैदिक दिये प्रमाण सत्य मारग दर्शाया ।
एक दिन सभा मझार बहुत से सज्जन आये ।
पंडित जी शिवराम साथ अपने में लाये ॥
स्वामी जी प्रति कहा एक ने करि संकेता ।
पंडित जी हैं यहां बड़े विद्वान् सुचेता ॥
फिर शब्द प्रयोग चौबले पुरुषों माहीं ।
कहता है व्याकरण सुनत में होता नाहीं ॥

क्यों पंडित जी आप इसी पर करें विचारा ।
मिथ्या होवे कथन यद्यपि जो आज हमारा ॥
मृतकश्राद्ध की तर्क छांडि हम तुरतहिं देवें ।
फिरि खंडन नहिं करें नाम इसका नहिं लेवें ॥
पक्ष समर्थन किया कहा पंडित जी ऐसें ।
जैसे कहते आप व्याकरण कहता जैसें ॥
मुल्ला अहमदहुसन नाम उप वलीमुहम्मद ।
स्वामी से शास्त्रार्थ किया कसकर के तहमद ॥
ज्यों का त्यों छपवाय दिया था जिसका ब्योरा ।
मिर्ज़ा मुवह्हद आप लिखाया जिसका तोरा ॥

***

नगर जलंधर त्यागि चले स्वामी महाराजा ।
फिरोज़पुर में पहुंचि किया था जाय समाजा ॥
पौराणिक कथि प्रश्न प्रभू के पास पठाये ।
आप सभा के मध्य सभी उत्तर समझाये ॥
पंडित जी रघुनाथ पुजारी मंदूर बड़े के ।
स्वामी जी के पास जाय कर आप अड़े थे ॥
स्वामी जी ने कहा कौन जीविका तुम्हारी ।
पंडित उत्तर दिया पुजारी वृत्ति हमारी ॥
फिरि स्वामी जी कहा अर्थ इसके जानो हो ।
पूजा अरि दो शब्द मिले यामें जानो हो ॥
ताको होवे अर्थ भले पूजाके वैरी ।
यह सुनि उठि चलिदिये लगाई नेक न देरी ॥
एक दिन होकर खड़े महतीराम दफ़तरी ।
लगे सभा में कहन सुनो मम वचन वैखरी ॥
स्वामी जी ने रोकि कहा तुम क्या बकते हो ।
अटपटांग प्रलाप वृथा करि क्या सकते हो ॥
इस पर होकर क्रुद्ध दफ़तरी जी झुंझलाये ।
जिन्हों के ये वचन आप को तनक न भाये ॥
अच्छा दो बतलाय आप का गुरू कौन है ।
मेरा है गुरु वेद जगत में पूज्य तौन है ॥

॥ छन्द ॥

रायबहादुर सुजानसिंह जी रावलपिंडी के सरदार ।
स्वामी के उपदेश श्रवण करि मनमें उपजा भला विचार ॥
जब निजधाम आपने पहुंचे पंडित लोग लिये बुलवाय ।
कही विवस्था स्वामी जी की औ मन्तव्य दिये बतलाय ॥
वेदविरुद्ध निषद्ध बतावें मूर्तीपूजन का व्यवहार ।
मृतक श्राद्ध का खंडन करते निर्भय बैठे सभा मंझार ॥
इस पर अपनी देउ विवस्था सो हम उन पर देयं पठाय ।
जो लाहोर माहिं सुनि आये सो सब तुम को दिया बताय ॥
नाममात्र के जे पंडित हैं गरजन लागे तबे महान ।
धर्म सनातन मूर्तीपूजा ताको जगत् माहिं सनमान ॥
कछु श्लोक पुराननु के लिखि रायबहादुर धरे अगार ।
सो सब स्वामी पास पठाये सुजानसिंह बड़े सरदार ॥
सुनकर स्वामी हंसने लागे उत्तर तुरत दिया लिखवाय ।
रावलपिंडी हम आवेंगे तबही देयं सबे समझाय ॥
पहुंचि गये रावलपिंडी माहीं करने लागे धर्म प्रचार ।
सुनने को उपदेश नगर के आमन लागे लोग हज़ार ॥
एक दिन आय पादरी बोले लूत विषय का सुनि व्याख्यान ।
यह इंजील माहिं नहिं देखा हम को दीजै आप प्रमान ॥
स्वामी खोलि अगाड़ी धरि दई देखो पढ़ो विचारो याहि ।
औरहु बहुत असम्भव बातें सब दिखलाईं ताके माहिं ॥
सुनी समीक्षा चुपके ह्वै गये फेरि न बोले सभा मंझार ।
साहस टूटि गयो सब उन को लज्जित ह्वै उठि चले सवार ॥
हार पुरानीनु ने मानी जब कहने लगे बेतुकी बात ।
ईसाई करिवेकूं आये स्वामी फिरें लगावत घात ॥
जाय पारसी सों बतराने कोठी अपनी लेउ छुड़ाय ।
सुजानसिंह के लाग मझारी स्वामी तुरतहि ठहरे जाय ॥
धनखल गद्दी के महन्त जी साधु सुपन्तगिरी जी नाम ।
दैवयोग से रावलपिंडी उन्हीं दिनों में हुआ मुकाम ॥
पौरानिक जुरि तिन्ह पै पहुंचे कहने लगे उन्हें समझाय ।
पक्षपात स्वामी से करिये हमरी बात सभी बनि जाय ॥

महन्त जी जब यों उठि बोले सुनिलो हमरी कान लगाय ।
स्वामी वेद अर्थ के ज्ञाता उनते हमरी नाहिं बसाय ॥
जो उपदेश करत हैं स्वामी तामें झूठ एकहू नाहिं ।
जो कछु स्वामी जी कहते हैं हमहूं मानन वाले ताहि ॥
महाराजा कश्मीर बहादुर पत्र निमंत्रण स्वामी पास ।
विनती करन सुसाहिब भेजा दर्शन हेतु दिखाई आस ॥
अस्वीकार ताकों करि स्वामी उत्तर दीना उचित प्रकार,
आर्य्यसमाज बनाने मुझ को औ भारत में वेदप्रचार ।
आवश्यक दो काम हमारे इन को छोड़ि न जाना होय,
अंगरेज़ी से बाहिर फिरना नाहिन लागत नीका मोय ॥
जो अवकाश कबहु मिलि जावे तो आने का करूं विचार,
मूर्तीपूजा खंडन करकें थापूं वेद धर्म आचार ॥
इक पौराणिक चिट्ठी लिखि कर स्वामी पास जु दई पठाय ॥
शोधन करिके सो भेजी ही बहुधा दी हरताल लगाय ॥
फिरहू अधिक अशुद्धि रहि गई स्वामी कही तबै समझाय ॥
साधारन चिट्ठी की यह गति सो क्या कहे सामुहे आय ।
कहि दैना उन पण्डित जी से निज सन्देह मिटावें आय ॥
पण्डित जी में शक्ति कहां थी जो स्वामी जी से बतराय ॥
आखिरकार नतीजा निकला रावलपिंडी के दर्म्यान ॥
आर्य्यसमाज बनि गया तबही सुनि स्वामी जीके व्याख्यान ॥
जाते थे गुजरात नगर को झेलम झुलमे थोड़ी देर ॥
लक्ष्मनप्रसाद लखनौ देखा सो स्वामी को ले गये टेर ॥
उतर पड़े ठहरे दिन तेरह होते रहे नित्य व्याख्यान ॥
आर्य्यसमाज हो गया थापन बने सभासद् बुद्धीमान ॥
झेलम नदी किनारे पर इक बूढ़े साधू जी के साथ ।
स्वामी जी की वार्ता होती नाहिन भयो कबहु उतपात ॥
स्वामी उन्हें बताते योगी महिमा बरनन करत अपार ।
योगी राज कहत हे स्वामी राखत तिन्ह पर पूरा प्यार ॥
झेलमले गुजराति पधारे विष्णुदास आतिथ सतकार ।
अन्यप्रबन्ध जितो स्वामी को ताको ओटि लियो सब निज भार ॥

द्वै पौराणिक पण्डित आये निज कृत कविता सभा सुनाय ।
लागे कहन वेद यह हमरा देखो इन के अर्थ लगाय ॥
जो है वेद आपको न्यारो तो कछु बात कही ना जाय ।
चारों वेद धरे हैं आगे इन में ये श्रुति देउ लखाय ॥
महा अशुद्ध व्याकरण ते यह ताकों वेद बतावत आप ।
ब्राह्मण होकर झूठ बोलते याते बड़ो कौन सो पाप ॥
मिष्टर वोकेनन स्वामी से बोले आय सभा के माहिं ।
इन अंधो से सब कुछ लीनो बदले में कछु देते नाहिं ॥
स्वामी हँस कर कहने लागे साहब आप करें विस्वास ।
इन को बदले में देता हूं वैदिक धर्म योग अभ्यास ॥
गायत्री के अर्थ श्रवण करि कहने लगे मौलवी एक ।
हमहूं जाप करेंगे इस का निति प्रति रखि कर पूरी टेक ॥
एक दिना वाचाल मण्डली स्वामी जी ढिंग पहुंची जाय ।
ज्ञानी हो अथवा अज्ञानी सो तुम हमको देउ बताय ॥
स्वामी जी उत्तर यह दीना सुनलो मित्रो कथन हमार ।
बहुत विषय का मैं ज्ञानी हूं कछु धन्धेनु को नाहिं विचार ॥
जैसे कृषि वाणिज्य फारसी इन का नाहिन मुझको ज्ञान ।
धर्मशास्त्र संस्कृतविद्या इन का पूरा है विज्ञान ॥
यह सुनि कर वे चकित हो गये चुप के होकर चले पराय ।
कछु अविवेकिनु ईंटें फेंकी स्वामी नाहिं करी परवाय ॥
लोगनु कही दंड दिलवाओ परि सब को दीना समझाय ।
इन पर क्रोध न करना चहिये किन्तू दया करो चितलाय ॥

॥ रोला ॥

गये वजीराबाद बुर्ज सम्मन में ठहरे ।
पड़ी धूम चहुं ओर पुरानी जितनित बिफरे ॥
करी धूर्त्तता बड़ी मूर्ख को किया अगाड़ी ।
कुर्सी पर बैठाय आप सब खड़े पिछाड़ी ॥
तीन दिना तक इसी भांति आ सभा मंझारी ।
करें धृष्टता अधिक बड़े थे मूढ़ अनारी ॥
स्वामी जी ने तिन्हें एक दिन बड़ा लताड़ा ।
लोगनु उन्हें निकाल पन्द कर दिया किवाड़ा ।

एक किलर्क के ईंट इसी अवसर पर आई ।
कुछ थोड़ीसी लगी हाथ में चोट जु आई ॥
पांच दिना उपदेश धड़ाके सों कीया था ।
गुजरांवाले जाय फेर विश्राम किया था ॥
छेड़ छाड़ कछु तहां करी ईसाइनु आकर ।
शास्त्रार्थ के लिये समय श्रो नियम बनाकर ॥
नियत समय से प्रथम पौन घंटा के पहिले ।
स्वामी जी के पास खबरुआ करने चहले ॥
भेजा कहि कर यही चलो गिर्जा के माहीं ।
बैठे हैं पारसी और सब लोग वहां हीं ॥
सुन करके संदेश कहा आश्चर्य्य करत यह ।
चार बजे का समय पलट क्यों दिया उनम वह ॥
जहां नियम प्रतिकूल कार्य्य को करना चाहें ।
ऐसी सभा मझार नहीं हम कबहू जाहें ॥
नगरनिवासिन सुनी किया आक्षेप बड़ेरा ॥
ईसाई रचि जुक्ति करन कछु चहत बखेड़ा ।
नियत समय सभा मांझ बुलवाया उन को ।
जब तक स्वामी रहे पता नहि पाया तिन को ॥
स्वामी हो लाहोर गये मुलतान मझारें ।
विज्ञापन लगवाय दये थे द्वारे द्वारें ॥
वैष्णव मतसिद्धान्त गोकुलस्थों की माया ।
खोलि दई सब पोल भेद सारा बतलाया ॥
हुए गुसांई कुपित खून करने को डोलें ।
स्वामी जी के लिये धूर्तधन करिके बोलें ॥
लीये चेला साथ शंख घड़ियाल बजाते ।
सभा माहिं आदुटे धूम जयकार मचाते ॥
रंगत बदली देख प्रबन्धक उद्यत हो कर ।
सभामध्य होगये खड़े कर सोंटा ले कर ॥
स्वामी जी ने ध्यान तनकहूं नाहिंन दीता ।
गाय बजाय गोसाइनु मारग अपना लीना ॥
सागरमल जी रायबहादुर इक्ज्यूक्टूटिव ।
इंजीनीयर कहा करत हैं प्रायः अब तब ॥

चौदहसत पुस्तकें पाठ कर हुआ जु नास्तिक ।
स्वामी मुझको भला बनावें कैसे आस्तिक ॥
यही भरोसा राखि बैठि स्वामी जी आगे ।
तीन दिना करि बातचीत नास्तिकपन त्यागे ॥
स्वामी जी उपदेश करत में खेद प्रकाशा ।
जिस कारण ने बड़ा देश का किया विनाशा ॥
रुपिया लेकर करत व्याह बेटिन का जो है ।
कञ्जन के सम तुल्य जगत में जानो सो है ॥
बुरी तरहते खात कमाई दोनों देखे ।
पुत्री बेचत दुहू हमन पापी जन पेखे ॥
एक पूरा धन लेयँ बेंच कर खाय कमावें ।
कंचनि बारंबार अनेकनु के घर जावें ॥
इसका करना त्याग शास्त्र के है अनुसारा
धन ले बेचे सुता पाप नहिं इसमें भारा ॥
इक कश्मीरी आय मांस की बात चलाई ।
स्वामी जी ने युक्तियुक्त यों दिया बताई ॥
आत्मा और शरीर दुहुन का हानीकारक ।
करता रुधिर विकार जीव का नहिं उद्धारक ॥
योग दिया बतलाय साधना सो कहि दीना ।
मांस त्याग का वचन आप उन से लेलीना ॥
पण्डित जी ने जाय किया अभ्यास कछू दिन ।
होने लगा प्रकाश ज्ञान का मनमें छिन छिन ॥
एक दिना सुत तासु छिपा कर मांस खवाया ।
मिट गया सकल प्रकाश ज्ञान आनन्द नशाया ॥
मैक्समूलर भाष्यकार वेदों के ज्ञाता
यूरुप देश मंझार बड़े पण्डित विख्याता ॥
सम्मति उनके लिये आप कैसी रखते हैं ।
सुनि समझें मन्तव्य आप कैसा कहते हैं ॥
प्रोफ़ेसर हैं अभी वेद विद्या में ऐसे ।
आदि पाद व्याकरण पढ़ा विद्यार्थी जैसे ॥
सायण के पढ़ि भाष्य महीधर अर्थ देख कर ।
करते हैं अनुकरण उन्हीं का ज्ञान पेख कर ॥

जब तक उनके पाद चिह्न पर पाद रखेंगे ।
वेद अर्थ विज्ञान वास्तविक नाहिं लखेंगे ॥
एक पात्र में खाना अथवा पानी पीना ।
एक महाशय प्रश्न सभा में ऐसा कीना ॥
स्वामी किया निषेध शास्त्र के द्वारा इसका ।
एक डाक्टर किया तुरत अनुमोदन जिसका ॥
छूत रोग उत्पत्ति और बिगड़त है प्रकृती ।
एक पात्र के खात होत आत्मा की विकृती ॥
धर्म शास्त्र के माहिं विवस्था जो कुछ दीनी ।
वैद्यक के अनुकूल भली पूरी लखि लीनी ॥

इति एकादश मयूख: ।

अथ द्वादश मयूखः ।

॥ रोला ॥

अश्वपर्थमा विशेष एक लड़की ते आई ।
अट्ठारे सै और अठत्तरि मास जुलाई ॥
स्वामी जी मुलतान त्यागि लड़की में आये ।
नोटिस दीना आय सबै व्याख्यान सुनाये ॥
कालिज के विद्वान् सभा में बहुधा आवैं ।
अरे बड़े उत्साह साथ विद्यार्थी लावैं ॥
मुसलमान विद्वान् प्रशंसा करते चितसे ।
स्वामी के व्याख्यान आन कर सुनते हितसे ॥
जो कछु लोग उजड्ड मुसलमानों के माहीं ।
करन बखेड़ो लगे लड़ाई करनी चाहीं ॥
स्वामी जी परवाह किसी की नहिं करते थे ।
विघ्न उपद्रव माहिं नाहिं निज चित धरते थे ॥
हो जाता व्याख्यान सबै सूचित कर देते ।
करे प्रश्न जो आय तुरत उत्तर दे देते ॥
शास्त्रार्थ कोउ करो करो आक्षेप आन कर ।
जो कुछ शंका होय मिटाओ बैठि ध्यान धरि ॥
छात्रों की रुचि देखि और उन की अभिलाषा ।
पश्चिमीय विज्ञान समालोचन करि भाखा ॥
डारविनथ्यूरी प्रबल तासु का खण्डन कीना ।
देकर हेतु अकाट्य युक्ति से मन हरि लीना ॥
स्वामी का सुनि कथन चकित हो कहने लागे ।
कहा किसी ने नाहिं शास्त्र मत इस विधि आगे ॥
स्वामी जी ने कहा सबै आज्ञा देता हूं ।
करो प्रश्न सायंसवार उत्तर लेता हूं ॥
पूर्वज तुम्हरे बड़े फिलासफर थे विज्ञानी ।
अपनी उमरि गमाय एक इक विद्या जानी ॥
आत्मिक औ प्राकृतिक उन्नती पूरी कीनी ।
रहे सदा सिरमोर उच्च पदवी तिन्ह लीनी ॥

यह सुनि कीने प्रश्न सूर्य्य पृथिवी आकर्षण ।
प्रथम मेघ नक्षत्र वनस्पति आदि रसायन ॥
उत्तर स्वामी दिये संस्कृत ग्रन्थों से चुनि ।
तिन के कर्ता सकल महर्षी ऋषी और मुनि ॥
एक दिना व्याख्यान सुनन द्वै साहब आये ।
कमान अफ़सर एक द्वितिय माष्टर संग लाये ॥
स्वामी जी इंजील करि रहे समालोचना ।
निर्भय हो व्याख्यान दे रहे कछू सोचना ॥
इंगिलिश में अनुवाद करा आक्षेप सुने सब ।
तदनन्तर संवाद देर तक करते रहे तब ॥
बात चीत के करत भड़क उठते थे साहब ।
स्वामी शान्ती करत प्रेम बच कहि कहि जब जब ॥
साहब जो आक्षेप करत हैं हिन्दू मत पर ।
समाधान कर देत तुरत स्वामी जी बुधवर ॥
अन्त निरुत्तर होय चले साहब यह कह कर ।
आवेंगे हम कालि देयंगे समुचित उत्तर ॥
दिवस दूसरे फेरि नहीं आये थे साहब ।
आगे का वृत्तान्त सुनाऊं सुनलो तुम सब ॥
हुआ पत्रव्यवहार मौलवी साहब साथा ।
निकला नहिं कछु तत्व करूं जिस की क्या गाथा ॥
पौराणिक ने लिखी व्याकरण की इक पोथी ।
करते थे अभिमान चाहते महिमा थोथी ॥
स्वामी जी को लाय दिखाई थी वह रचना ।
हँस कर लागे कहन सभा में इस विधि वचना ॥
अष्टाध्यायी महाभाष्य सब पुस्तक पढ़िये ।
आर्षग्रन्थ का मर्म हृदय में पूरा मढ़िये ॥
जो न होउ सन्तुष्ट कभी कुछ उनमें पावो ।
तब रचिये फिर ग्रन्थ क़लम कर माहिं उठावो ॥
तुमनु लिखा जो ग्रन्थ अधूरा और अनुत्तम ;
है अशुद्ध औ व्यर्थ वृथा का सकल परिश्रम ॥
शतधा दई दिखाय अशुद्धी सब से समुही ।
पंडित जी शिर नाय गये उठि घर को जब ही ॥

जाड़ा हास्य विनोद भली पुस्तक रचि लाये ।
पोप धराया नाम गपोड़ा गुरु कहलाये ॥
सनुआ साधू नाम बड़े विख्यात तहां पर ।
करने को संवाद किया लोगों ने तत्पर ॥
परि कछु टालमटोल बताकर चले गये वह ।
पीछे स्वामी सुनी विवस्था उन की सब यह ॥
मूर्त्ती पूजक एक पुराने विदुष महाशय ।
मरती विरियां कहा तिन्हनु निज मन का आशय ॥
जो होते इस समय पिता जी जग में हमरे ।
तो स्वामी मन्तव्य मान लेते हम सबरे ॥
छड़की माहिं समाज बनि गयो स्वामी आगे ।
जागा वैदिक धर्म यज्ञ तहं होने लागे ॥

॥ छन्द ॥

छड़की से चलि पहुंचि अलीगढ़ लगातार उपदेश किया ।
बड़े प्रतिष्ठित और सुशिक्षित व्यापारिनु ऐंट्रूह लिया ॥
सभी सम्प्रदायक मतवादी रहसि रहसि संवाद करें ।
सब सन्देह मिटाय आपने आह्लादित आनन्द भरें ॥
एक दिना श्री स्वामी जी का सभा माहिं व्याख्यान हुआ ।
फरीदुलदीन सभापति कीये उन को यह सनमान दिया ॥
उन्हीं दिनों स्वामी से मिलने नगर बम्बई से आये ।
हरिश्चन्द्रचिन्तामणि जी के साथ प्रतिष्ठित ह्वै आये ॥

॥ छन्द ॥

सरसैय्यद अहमदखां साहब तिन्ह ने दियो निमंत्रण आय ।
स्वामी जी के इतर सभीने भोजन कियो तहां पर जाय ॥
चले अलीगढ़ से स्वामी जी मेरठि माहिं विराजे आय ।
बस्ती से बाहिर कोठी में विस्तर अपने दिये लगाय ॥

* * *

चर्चा होन लगी मेरठ में आये श्री स्वामी महाराज ।
पोल खुलेगी मतवालों की अब बनि जावे आर्य्यसमाज ॥
धर्मसभा मेरठ ने लिखकर कछु एक प्रश्न जु दिये पठाय ।
तिन के उत्तर स्वामी जी ने बैठि सभा में दिये सुनाय ॥

* * *

लिखी पत्रिका एक मौलवी ताको इमला बहुत खराब ।
मौखिक शास्त्रार्थ पर आग्रह करना चाहा बहुत सिताब ॥
उत्तर तिन्हें दे दिया स्वामी लेखबद्ध होगा संवाद ।
एक सभापति होयं सभा के जो नहिं करने देयं विवाद ॥
फेरि मौलवी चुप के हो गये आगे सुनो दूसरी बात ।
पौराणिक मिलि चिट्ठी भेजी करनी चही आपनी घात ॥
नगर प्रतिष्ठित जौन कहावें तिनके नाम पत्रिका माहिं ।
परि हस्ताक्षर अपने जामें एकहु ने कीने हैं नाहिं ॥
तिहि के उत्तर में विज्ञापन स्वामी तुरत दियो छपवाय ।
माया ते कछु काम न चलि है लाला सुनलो किशनसहाय ॥
पत्री पर दस्तखत अपने करि नियत सभा के लेउ बनाय ।
रखो प्रबन्ध आपने कर में पंडित विदुष लेउ बुलवाय ॥
वेदादिक सच्छास्त्र जिते हैं तिनका माना जाय प्रमान ।
शास्त्रार्थ खुद बैठि कराओ तब होय झूंठ सांच पहचान ॥
पौराणिकनु सुनी जब इतनी बातें सबरी गये टलाय ।
फेरि न चर्चा करी तनकहू चुप के हु गये सीस नवाय ॥
तब स्वामी ने लिखी पत्रिका किशनसहाय पर दई पठाय ।
शास्त्रार्थ जल्दी करवाओ जिस को चाहो लेउ बुलाय ॥
इस का भी जो उत्तर आया बिना दस्तखती किशनसहाय ।
दूजा पत्र लिखा स्वामी जी हिहि विस्तारहु दियो बढ़ाय ॥
ताको प्रतिउत्तर लाला जी लिखवाया पंडित बुलवाय ।
निज बुद्धी से काम नलोया हस्ताक्षर करि दिया पठाय ॥

* * *

पाठकवर्ग सुनो सो आशय मतलब ताको लेउ विचार ।
साधारण सभ्यता न तामें ऊट पटांग सकल व्यवहार ॥
तात्पर्य्य जो कुछ कहता हूं निज आंखों से देखा सोय ।
कछु सन्देह न करना इस में सत्य कहूं सुनिये सब कोय ॥

* * *

पंडित हमरे यह कहते हैं वर्णाश्रमी आप हैं नाहिं ।
वेद विरुद्ध सभा में बकते नहिं कछु रमन शास्त्र के माहिं ॥
वेदविरोधी नास्तिकवादी ईश्वर और धर्म के शत्रु ।
इस नहिं आवें पास तुम्हारे फिरि नहिं लिखना हम को पत्र ॥

ग्रंथकार्भी स्वामी संग था सारा सुना पत्रव्यवहार ।
स्वामी कही भले लाला जी पाया तुम्हारा ज्ञान विचार ॥
जब तक स्वामी रहे नगर में ईसाइनु नहिं किया विवाद ।
सभा माहिं नितप्रति आते थे सुनते रहते थे संवाद ॥
सन अट्ठारह सौ अठहत्तरि उनतिस तिथी सितम्बर मास ।
आर्य्यसमाज भयो स्थापित हठवादी सब भये हिरास ॥

॥ छन्द ॥

थापि समाज चले स्वामी जी पहुंचें दिल्ली नगर मझार ।
लाला बालमुकन्द केसरी ठहरे तिन के बाग मझार ॥
छत्ता विदित शाहु जी का तहां नम्बरवार दिये व्याख्यान ।
श्रोता जन की अधिक भीड़ ही सुनि उपदेश बढ़ावें ज्ञान ॥
फल विशेषता को यह हूआ बनि गयो तुरतहि आर्य्यसमाज ।
नगर निवासिनु को लखि करनी मगन भये स्वामी महाराज ॥
भद्र पुरुष अजमेर शहर के पत्र निमंत्रण दियो पठाय ।
अधिक प्रार्थनायुत लिख भेजो हमको दर्शन दीजै आय ॥
ता पाछैं इक जाली चिट्ठी मतवादिनु लिखिदई पठाय ।
चंदा माहिं न भयो सामटो अबहीं आप पधारैं नाय ॥
यह पढ़ि स्वामी सकुचि ठहरि गये उत अजमेरी करैं विचार ।
कारन कवन प्रभू नहिं आये कीजै कहा अबै उपचार ॥
इत उत की चर्चा सुनि सुनि के खुलिगया भेद रचा जो जाल ।
करी कुमेटी जोरि महज्जन भेजा तार तभी तत्काल ॥
पौराणिक लोगनु की करनी लिखिदई तामें सभी सुधार ।
आठ नवम्बर को स्वामी जी पहुंचे अजमेर नगर मंझार ॥
स्वागत कारन स्टीशन पर आये बहुत प्रतिष्ठित लोग ।
सुनो आगमन स्वामी जी को परो पुरानीनु के घर सोग ॥
पुष्कर में कतिकी का मेला जुरता बड़ा अटूट महान ।
धर्म प्रचार करन के ताई आया स्वामी जी का ध्यान ॥
उनकी इच्छा के होते ही तुरतहि कीना सकल प्रबन्ध ।
डेरा खेमा रसद रसानी सब कामन सें हो निर्द्वन्द ॥
पुष्कर जाय दिया विज्ञापन निर्णय करो सत्य का आय ।
वैदिक धर्म करूं उपदेशहि सुनलो आकर कान लगाय ॥

स्वामी पास साधु संन्यासी औ विद्वान् झलूमैं आय ।
करते प्रश्न योग्यता पूर्वक उत्तर सुनत शान्ति हो जाय ॥
बड़े प्रेम सूं प्रीति पूर्वक सभा माहिं करते सत्कार ।
सहित प्रमाण मधुर भाषणयुत करते सत्यासत्य विचार ॥
वाममार्ग के साधु इकट्ठा रहते थे पुष्कर के पास ।
अजमेर कालिज में कुछ लड़के पढ़ते इसी ग्राम के खास॥
तिनतु कहा वामी साधुन ते स्वामी निकट हमारे साथ ।
चलि दिखलाओ विद्या अपनी तब कछु रहै तन्त्र की बात॥
स्वामी पास एक नहिं आया छिपि २ घर ते चले पराय ।
ग्राम निवासिनु पर सब खुलगया खोटा रहस औ बुरा सुभाय ॥
मेला भयो सभापति जबहीं स्वामी बगदि चले अजमेर ।
सभा मांझ व्याख्यान सुनाये नम्बरवार प्रतिदिना फेर ॥
सभ्य महज्जन नगर प्रतिष्ठित सब ही सुनत आय उपदेश ।
बहुधा मुसलमानहूं आवत मानत नाहिं नेकहूं द्वेष ॥
मौलवी मुहम्मद मुरादली जी उन पर ऐसा पड़ा प्रभाव ।
करी प्रतिज्ञा गोरक्षा की गजट माहिं लिक्खा प्रस्ताव ॥
आमंत्रित करने पर स्वामी गये नसीराबाद मँझार ।
कई दिना निवसित रह कर के विधिवत् कीना धर्मप्रचार ॥
छोड़ि नसीराबाद छावनी स्वामी जयपुर पहुंचे जाय ।
वज़ीर ठाकुर फ़तेहसिंह जी अपने बाड़े गये लिवाय ॥
महाराज ने मिलना चाहा परि लोगनु ने बात बनाय ।
इच्छा पूरन होन न दीनी राजा को दीनावहकाय ॥
सकल प्रबन्ध राज्य से अच्छा आतिथ का पूरा सत्कार ।
चल करके जैपुर से स्वामी रेवाड़ी को गये पधार ॥
राव युधिष्ठिरसिंह धार्मिक बुलवाये सब रिस्तेदार ।
व्याख्यान प्रतिदिन सुनवाये ग्यारह दिन तक किया प्रचार ॥
दृढ़तर आर्य्य बने सो सबरे स्वामी जी का सुनि उपदेश ।
पांच यज्ञ जो विधिवत् करते संध्यावन्दन जाप हमेश ॥
नवीं जनवरी सन् उनहत्तरि अट्ठारह सो ईसा जान ।
करी पयान श्री स्वामी जी पहुंचे दिल्ली के दरम्यान ॥

इस विरियां थोड़े दिन ठहरे दो तीनक देकर व्याख्यान ।
मेरठ होते हुए शीघ्र ही हरिद्वार को किया पयान ॥
लगातार निस दिना कुम्भ पर करते रहे सुधर्म प्रचार।
ताते कुछ तन भई सिथिलता तिसको करन चहो उपचार॥
देहरादून गये यहि कारन करनो चहैं योग अभ्यास ।
परि जिज्ञासू बहुधा नित प्रति आवैं स्वामीजी के पास ॥
यदिवा थे अस्वस्थ ऋषीवर तो भी करत नित्य उपदेश ।
पण्डित कृपाराम पंजाबी तिनको सेवा करत हमेश ॥
एक दिना अंगरेज़ बहुत से लियें पादरी अपने साथ ।
सभा माहिं सो आनि विराजे सुनते रहे ध्यान दे बात ॥
समालोचना सुनि बाइबिल की हुआ पादरी को अति जोश ।
शील सभ्यता को तजि साहब बकने लगे भये बेहोश ॥
देखि दशा इनकी इक अफसर कहने लगा धार कर धीर ।
स्वामी जी की लखो योग्यता उस माफिक करिये तकरीर ॥
परि न पादरीसाहब संभले उठि कर चले सभा से भागि ।
स्वामी कहा कालि आओगे पै वे गये साथकिनु त्यागि ॥
व्याख्यान पूरन होने पर अफसर अंगरेज़ों के साथ ।
धर्माधर्म विषय के ऊपर करते रहे बहुत सी बात ॥
ब्राह्मसमाज का कीना खंडन इक दिन स्वामी बहुत सम्हार ।
ब्राह्मी सकल विरोधी होगये छोड़ा सत्यासत्य विचार ॥
गप्प उड़ाय दई लोगनु यह मुसलमान करि हैं तकरार ।
मुसलमान सब जुरि मिल आये स्वामी जी से करो विचार ॥
स्वामी चले गये देहरा सें पाछें बनि गयो आर्य्यसमाज ।
आर्य्यसमाज मंदिर हू बनि गयो जाके सम नहिं दूजो आज ॥
दोदिन ठहरि सहारनपुर में फिरि मेरठ को गये पधार ।
सत्ताईस मई को स्वामी ग्राम छलेसर गये पधार ॥
एक महीना रहे छलेसर यहां से गये मुरादाबाद ।
राजा साहब की कोठी में होने लगा नित्य संवाद ॥
जिलाधीश के कहने माफिक राजनीति का किया बखान ।
अन्योन्याश्रय राजप्रजा का जतला दिया सभा दर्मियान ॥

शहर रईस प्रतिष्ठित सबरे बैठे आय सभा के माहिं ।
हाकिम लोग सुशिक्षित कोऊ बाकी रहो एक हू नाहिं ॥
स्वामी जी का वर्णन सुनि कर वेदों का कीया सनमान ।
कहने लागे सकल सभासद् आजहि हूआ ऐसो ज्ञान ॥
राज्यप्रबन्ध उच्च कक्षा के वेदादिक में नियम महान ।
अन्वेषण की आवश्यकता है जाने नाहि विमूढ़ अजान ॥
खास कलक्टर साहब ने उठि स्वामी महिमा करी बखान ।
कछु दिन पहिले जो ये होते गदर न होता हिंदुस्तान ॥
सन् ईसवी अठारह सो ओ ऊपर लेउ उनासी जान ।
जौलाई की बीस तिथी को जुरि मिलकर बैठे विद्वान् ॥
राजा साहब के मुथान पर विधिवत् कीना यज्ञ विधान ।
स्थापित समाज कर लीया दीया स्वामी जी व्याख्यान ॥

***

विदुष बदायूं किनु पहिले ही आर्य्यसमाज जु लया बनाय ।
सेवा में श्री स्वामी जी के पत्र निमन्त्रण दिया पठाय ॥
करी प्रार्थना स्वीकृत स्वामी प्रस्थित भये बदाऊं काज ।
इकतिस जौलाई की निशिको पहुंचे आप श्री महाराज ॥
मुंशी गंगाप्रसाद जी ने करवाया पहिला व्याख्यान ।
फेरि नित्यप्रति होने लागे कोठी चुंगी के मैदान ॥
पंडित रामप्रसाद एक दिन स्वामी से बतराये आय ।
धर्म विषय के उत्तर पाकर हठ भरि चले आप खिसियाय ॥
खबरि सुनी मुहम्मद कासम की मुसलमान बुलवावें ताय ।
करवावेंगे बहस मज़हबी फिरि बातें कछु गर्प सिराय ॥
यह सुनि स्वामी गये बरेली कीया जाकर धर्म प्रचार ।
प्रधान शासक जिले बरेली आकर सुनते शास्त्रविचार ॥
सब मिलि करके निश्चय कीनो स्वामी के संग वार्तालाप ।
प्रसिद्ध पादरी के संग होवे तब कुछ जानो जाय प्रताप ॥
मिस्टर टी० जी० स्काट साहब तिंहि ने करि लीया स्वीकार ।
समाचार यह विदित होगया स्वामी संग में होय विचार ॥

निर्णय तिथि साहब कर दीनी भारी लगो आय दर्बार ।
सभा नियमपूर्वक बनि बैठी लेखक बैठे चार अगार ॥
जो कछु प्रश्नोत्तर होता था सो सब लेख बद्ध हो जाय ।
हस्ताक्षर दोनों के होकर सभापती को देत गहाय ॥
"आवागमन"–विषय पहिला था दूजा–"पाप क्षमा कर्तार" ।
तीजा विषय बड़ा गहूर था, "ईश्वर लेता है अवतार" ॥
निर्बल पक्ष रहा साहब का स्पष्टकारण ताके माहिं ।
इन विषयों का निर्णय करना मत ईसवी मध्य है नाहिं ॥
चौथी सितम्बर को स्वामी जी पहुंचे शाहजहांपूर जाय ।
आर्य्यसमाज दिया विज्ञापन पबलिक सुनलो कान लगाय ॥
व्याख्यान स्वामी जो देंगे वेदधर्म का करें प्रचार ।
जाकूं संशय होय तनकहू आय सभा में करे विचार ॥
पौराणिक मत पड़ी खलबली छक्के छूट गये सब फेर ।
पीलीभीति पठाई पाती अंगद शाखी लीने टेर ॥
पंधरे रुपया के अध्यापक पीलीभीति मदर्से माहिं ।
हास्य कराने को आये हैं निज योग्यता विचारी नाहिं ॥
बात बनाते रहे अन्त तक संमुख भये एक दिन नाहिं ।
फीस वसूल करी हिन्दुनुते पहुंचे बगदि मदर्से माहिं ॥
स्वामी चले लखनौ पहुंचे ठहरे सात दिना तहां जाय ।
फेरि कानपुर होते हूये टिके फर्रुखाबादहि आय ॥
लगातार उपदेश वेद का स्वामी देत सभा में आय ।
नगर प्रतिष्ठित पुरुष सुने सब राजकीय अधिकारी जाय ॥
रचने लगे पुराणिक माया परि नहिं चली एकहू बात ।
वैदिक सिद्धान्तों की महिमा बढ़ती रही अधिक दिनरात ॥
बी० ए० पास एक बामन है तिन्हनु सभा इक लई बनाय ।
मूर्ती पूजा की पुष्टी का तिहि उद्देश्य जु दियो बताय
शिक्षित पुरुषों ने पुनि उनको हँसि २ दीनी बड़ी लताड़ ।
समाचारपत्रों ने जिनका सारा परदा दीना फाड़ ॥
सभा छांड़ि मौनी बनि बैठे आयू भरि राखेंगे याद ।
मूरतिपूजा के साधन पर नाहिन कीना फेरि विवाद ॥

भई तयारी तीर्थराज की आगे का सुनि लेउ हवाल ।
छन्द दूसरा कहूं बना कर मैंने बदल दई है चाल ॥

॥ चौपाई ॥

होते हुये प्रयाग मँझारी । मिर्जापुर में गये अगारी ॥
रोगान्वित हो यदपि शरीरा । तदपि देत उपदेश गँभीरा ॥
दानापुर को किया पयाना । यहां जाय दीने व्याख्याना ॥
मुसलमान सुनने को आवें । तिन्ह के मित्र उन्हें बहकावें ॥
उत्तर देयँ सत्य के नाते । धर्मयुक्त सुनतीं वहँ बातें ॥
पौराणिक पण्डित बुलवाये । टालमटोल बताय सिधाये ॥
रामीबाग दि लखनऊ आये । सभा बैठि उपदेश सुनाये ॥
सन् अट्ठारह अस्सी जानो । किया फ़र्रुख़ाबाद पयानो ॥
इनका सुनि उपदेश एक दिन । किया प्रश्न मिस्टर वानिस्टन॥
योग विषय हमको बतलाओ । ताकी क्रिया युक्ति समझाओ ॥
समुचित रीति उन्हें समझाया । योगशास्त्र का भेद बताया ॥
करते मद्य मांस जो सेवन । तिनको मिलता नाहिन ये धन ॥
आप त्याग इनको करि देहीं । योगानन्द अवशि पुनि पैहीं ॥
पड़ो प्रभाव फ़तेहगढ़ माहीं । स्वामी मैनपुरी उठि जाहीं ॥
सिविलसर्जन और कलक्टर । सिशनजज्ज आदिक सब अफ़सर ॥
आवें सुनन नित्य व्याख्याना । मन प्रसन्न करि जायँ महाना ॥
मुसलमान हूं करें प्रशंसा । बहुतन त्यागि दई गोहिंसा ॥
मैनपुरी ते चले वराई । मेरठ पहुंचे आठ जुलाई ॥
कोठी में बस्ती के बाहर । जाकर ठहरे धर्मदिवाकर ॥
पौराणिकनु रची यह माया । कथा कहन पण्डित बैठाया ॥
जहां करत स्वामी उपदेशा । रामायन तहँ बाँचैं हमेशा ॥
परि प्रभाव ताको नहिं परेऊ । अन्त खिसाय बैठि सो रहेऊ ॥
एक पण्डिता रामाबाई । पूना ते चलि मेरठ आई ॥
स्वामी पास संस्कृत पढ़ती । शास्त्रविचार नित्यप्रति करती ॥
स्त्रीशिक्षा पर उपदेशा । सभा माहिं तिन्ह दियो विशेषा ॥
पुस्तक स्वामी जिती बनाई । विदा समय सो ताहि दिवाई ॥

॥ दोहा ॥

एमा गई निज धाम को पहुंची दक्षिण देश ।
स्वामी जी महाराज यहां करत रहे उपदेश ॥

॥ छन्द ॥

शहर मुजफ्फरनगर तहांते पाती आई ।
नगर प्रतिष्ठित सुजन जिननु लिखि ताहि पठाई ।
धर्मदिवाकर हेतु लिखो आमंत्रण तामें ।
शीघ्र पधारो नाथ मनोरथ सब हो जावें ॥
श्राद्ध विषय पर तर्क वितर्क यहां पर होती ।
भूखे बामन फिरें लिये कर घर घर पोथी ॥
करिये आय प्रचार धर्म का यहां गुसाईं ।
पाप रोग में फंसे हमारी करो दवाई ॥
स्वामी करुणा करी तुरत करि दियो पयानो ।
मास सितम्बर माहिं पंधरे तिथि को जानो ॥
पहुंचि मुज़फ़्फ़रनगर टिके कोठी में जाई ।
निहालचन्द रईस करी उन आ सिवकाई ॥
एक दिन पूछन लगे श्राद्ध करने की बाता ।
स्वामी जी ने कही ध्यान धरि सुनिये ताता ॥
कर्म किये को भोग मिलत है करे सु जाको ।
मृतक भये कहा मिले कर्म कहा यामें वाको ॥
दान करन को कर्म आप अपनो ही जानो ।
यामें साक्षी अन्य दूसरो नाहिन मानो ॥
कर्म कुकर्म सुयोग सबै कर्त्ता संग रहते ।
वेद शास्त्र ऋषि मुनि गुनी सब येही कहते ॥
जीवित हो जो मित्र बसे परदेश मंझारी ।
ताको लेकर नाम दान पूरी तरकारी ॥
बामन देउ जिमाय फेरि लिखि भेजो पाती ।
पेट भरो के नाहिं सिरानी उस दिन छाती ॥

रोगी होवे अन्य औषधी खावे कोई ।
यह सब हास्यविनोद नाहिं नीको वह होई ॥
पुण्यवान की होय सदा महिमा जगमाहीं ।
परि मृतकनु के हेतु कछू फल पहुंचत नाहीं ॥
तत्व प्रयोजन यही कर्मफल अपना पावैं ।
परालब्ध को भोग संग अपने ही लावैं ॥
श्राद्ध अन्न की लूटि नेकहूं पुण्य न यामें ।
दूजे को करि नाम मस्करा मौज उड़ामें ॥
पितृ शब्द का अर्थ जीवतेनु में घटता है ।
वैयाकरणी कहत मरेनु में नहिं पटता है ॥
जीवत जितने पितृ श्राद्ध कीजे नित तिनका ।
बड़ा महातम मिले खुसी मन होवे जिनका ॥
देयं असीस अघाय फलो फूलो सुख पावो ।
संतति सम्पति बढ़े अन्त सुरधामहि जावो ।
मरे पिता के हेतु जिमावैं, मोदक माता ।
जीवित के गहि केश लगावैं जूती लाता ॥
लेटरबकस मंझार गेरि चिट्ठी जो आवैं ।
ताको उत्तर फेरि कछू दिन पाछे पावैं ॥
परि विप्रनु को उदर हजम सब कछु करि जावे ।
दाता ताको कछू कबहु फल नेक न पावे ॥
कर्मनुके फल पितृ जन्मलें पक्षिनु माहीं ।
हलुआ पूरी खीरि कहो वे कैसे खाहीं ॥
उदर भरन की विधि वामननु भली बनाई ।
पुरखनु को ले नाम उड़ावत दही मिठाई ॥
प्रेत क्रियाते फेरि अगाड़ी नहिं कछु करनो ।
अथवा कोई करे तासु को फल निज भरनो ॥
मन में सोचो खूब करे सोई पावेगो ।
निज करनी को भोग दूसरो नहिं पावेगो ॥
या विधि तर्क सुनाय दिये लाला समझाई
श्राद्ध विषय में शास्त्र प्रमाणहु दिये सुनाई ॥

लाला जी श्री सभा सबै सज्जन समझाने ;
दामन धोखे बाज बड़े पूरे पहचाने ॥
एक विदूषक लगे कहन जब श्राद्ध करेंगे ।
पौआ भरी अफ़ीम विप्र के थार धरेंगे ॥
पहुंचावेंगे सुर्ग पिता की खबरि लेन को ।
अपने घर के समाचार सब वहां देन को ॥
आस पास के बहुत लोग एकत्रित होते ।
करते प्रश्न अनेक मैल निज मन के धोते ॥
भड़भड़ाय जो उठे उसे शान्ति कर लेते ।
प्रीती पूर्वक सबे उचित उत्तर देदेते ॥
प्रमाण युत व्याख्यान कहत है धर्मदिवाकर ।
विवाद का नहि देत रहे काहु को अवसर ॥
स्वामी जी प्रस्थान किया देहरा के ताईं ।
वहां पर पहुंची खबरि आर्य्यनु करी बधाईं ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी चले देहरा आये । विज्ञापन सब डगर लगाये ॥
जिज्ञासू सतवादी जेते । हुए प्रसन्न वहां हैं तेते ॥
अभिमानी मन माहीं कुढ़ते । पौराणिक मनसूबा गढ़ते ॥
मुखजमान मिलि तिनके साथा । छेड़छाड़ की कीनी बाता ॥
टाल ढालते काम चलावें । झूठा गौरव आप दिखावें ॥
निर्भय हो स्वामी ललकारें । वेद-धर्म नित सभा प्रचारें ॥
एक पादरी साहब इक दिन । वेद विषय पर प्रश्न किये तिन ॥
स्वामी समझ चेष्टा उन की । अभिलाषा निज ख्याति करनकी ॥
सत्यासत्य जानि वे माहीं । मनमें इच्छा इन के नाहीं ॥
करनी तृप्ति अवशि इनकेरी । यामें कहा हानि है मेरी ॥
स्वामी कहन लगे समझाई । करिहों प्रश्न न जाउ बराई ॥
जैसे उत्तर देउं तुम्हारे । वैसे दीजो आप हमारे ॥
यह सुनि भये पादरी मौनी । सीस हिलाय चले निज भौनी ॥
समझा बुझा टिकाया उन को । उत्तर सकल सुनाये जिन को ॥

ईसा की इंजील मंझारी । प्रश्न किये स्वामी जी भारी ॥
सुन कर प्रश्न पादरी सटके । जनु आये थे घर के भटके ॥
सभा नियम सज्जनता तजि के । लदर पदर उठि चाले भजिके ॥
हंसते रहे जु धर्मदिवाकर । रुके पादरी नाहिं वहां पर ॥
स्वामी चलि मेरठ में आये । फेरि आगरे को प्रभु धाये ॥
स्वामी आये भई अवाई । पापिन के मुख उड़ी हवाई ॥
पौराणिक अफवाह उड़ावें । सिद्ध प्रयोजनते घबड़ावें ॥
स्वामी दे उपदेश महाना । कहि कहि नये नये व्याख्याना ॥
आंखें खोल दई दुनिया की । आग्रह रहो न तनकहु बाकी ॥
सब के मन में भई प्रतीती । वेदधर्म की बाढ़ी प्रीती ॥
पत्र निमंत्रण स्वामी पाया । लाट पादरी ने भिजवाया ॥
स्वामी जाकर किया मिलापा । धर्म विषय की वार्तालापा ॥
उभय महापुरुषन के माही । होती रही देर तक भाई ॥
स्वामी पूछी बात चले पर । शोधत भूल पोप यह कहिकर
जो कहुं भूल पोपते होते होई । ताको शोधन का विधि होई ॥
ईश्वर का नायब जगमाहीं । समझा जाय पोप कै ताई ॥

॥ दोहा ॥

याते अधिक न कहि सके करिके नीचे नैन ।
विदा होय स्वामी चले हंसत हंसत करि बैन ॥
ईश्वर प्रतिनिधि पोप हैं तिन के प्रतिनिधि आप ।
यूसू मसी प्रभु पुत्र हैं क्षमा करावें पाप ॥

॥ छन्द ॥

स्वामी के उपदेश का हुआ प्रभाव बड़ा ।
नगरनिवासिन कर दिया आर्य्यसमाज खड़ा ॥

॥ चौपाई ॥

माघ दिसम्बर छै तिथि बीसा । नभ वसु सिद्ध चन्द्र सन् ईसा ॥
भयो आगरे आर्यसमाजा । खिजि पौराणिक झगड़ा साजा

पंडित चतुर्भुजहि बुलवाई । शास्त्रार्थ की तिन्ह ठहराई ॥
नहिं सामर्थ्य चतुर्भुज केरी । जो ठहरे स्वामी जी नेरी ॥
मारि गपोड़े करी कमाई । लुकि छिप घर गये सभा विहाई
प्रभु अजमेर विराजे जाकर । होते हुए भरतपुर जैपुर ॥
जा अजमेर एक दिन देखा । अग्निदाह पुरमाहीं पेखा ॥
बहुधा जरे गरीबन के घर । तिन्ह पर कृपा करी करुनाकर ॥
सभा मांझ जो श्रोता आये । तिन्हें सकल वृत्तान्त सुनाये ॥
तत्क्षण दई सहाय कराई । दीन जु लई झोंपड़ी छाई ॥
नगर पिशावर ते उठि धाये । पंडित लेखराम जी आये ॥
किये निवारन निज सन्देहा । दर्शन कर लौटे निज गेहा ॥
पंडित भागराम जज साहब । व्याख्यान होता था जब जब ॥
सभा प्रबन्ध सकल आ करते । अन्त तलक रहते तत्पर ते ॥
पत्र निमंण का इक आया । राव मसूदा ने भिजवाया ॥
स्वामी तुरत मसूदा आये । बारहदरी मांझ ठहराये ॥
व्याख्यान दिये नम्बरवारा । चिहुंका राज मसूदा सारा ॥
पौराणिक एकहु नहिं आये । कछुक पादरी आ बतराये ॥
यहां प्रथा देखी इक हेटी । व्याहें मुसलमान घर बेटी ॥
सो स्वामी जी ने छुड़वाई । सब हिन्दुन मिलि करी बधाई

॥ दोहा ॥

बादशाह के समय में भये मुसलमां जौन ।
हिन्दुनुकी बेटीनु कूं व्याहि लेत हैं तौन ॥
स्वामी जी व्याख्यान दे समझाये सब लोग ।
यह परिपाटी अति बुरी आशु त्यागने जोग ॥

॥ चौपाई ॥

सब मिलि कर पंचायत कीनी । स्वामी कही मानि सो लीनी ॥
फिरि लड़की किनिहू नहिं व्याही । मुसलमान सोचत मन माही ॥
स्वामी यज्ञ बहुत कर वाये । राजा प्रजा दुहुन मन भाये ॥
फिरि स्वामी जी दूजी वारा । गये मसूदा नगर मंझारा ॥

किया न आकर किनिहु विचारा । तदपि नित्य प्रति धर्मप्रचारा ॥
स्वामी पँधरे दिना बसे थे । फेरि रायपुर राज गये थे ॥
ठाकुर हीरासिंह प्रवीने । स्वामी को आमंत्रण दीने ॥
बार अनेक पत्र निजआये । धर्मदिवाकर नीत बुलाये ॥
मंत्री कौन तुम्हारे ठाकुर । इक दिन पूछा धर्मदिवाकर ॥
शेख इलाहीबक्स सुनामी । राज काज वह करते स्वामी ॥
कार्य्यबसाते गये जोधपुर । करीमबक्स जो रहते यहां पर
यह सुनि स्वामी सम्मति दीनी । मने महमदी की करि दीनी ॥
मंत्री आर्य्यपुरुष ही चहिये । आर्य्यनु के घर आर्य्य ही रहिये
वास्तव में ये दासीसुत हैं । अभिमानी आग्रहसंयुत हैं ॥

॥ दोहा ॥

यह सुनि रूठे शेख जी पेच ताब सो खाय ।
तासु हवेली पर जुरे मुसलमान सब आय ॥
स्वामी जी से लड़न को हम हैं सब तैयार ।
आप हुकम दीजे तनक जाय करें तकरार ॥

॥ चौपाई ॥

करीमबक्स सब को समझाया । धीरज दे निज मता सुनाया ॥
कीनी जो तौहीन हमारी ॥ काजी आवें ईदम झारी ॥
स्वामी जी ते बात करावें । अपने मत के भेद सुनावें ॥
निश्चय करें कुरान मंझारी । ऐसी विधि मैं हिये बिचारी ॥

॥ दोहा ॥

फेरि उलहना देयं हम लड़ें खूब सिरफोर ।
राजा और रईस हू होवें उन की ओर ॥
मज़हब की तौहीन को फिरने करें बरदाश्त ।
ऐसी उन की हम कहूं करत नाहिं नेकाश्त ॥

॥ चौपाई ॥

भई ईद क़ाज़ी जी आये । स्वामी पास तिन्हें ले धाये ॥
क़ाज़ी कहन लगे तब ऐसे । दासीपुत्र कहो कहो कैसे ॥

सुनि स्वामी जी यों बतराये । इसराईली तुम कहलाये ॥
तुम्हरे इब्राहीम पैगम्बर । दो बीबी कहियें तिनके घर ॥
हक ब्याही सारह थी उनकी । दुतिय हाजरह लोंडी जिनकी ॥
ताहि डाल घर अपने लीना । विषयभोग ता संग्रह कीना ॥
अंगरेजनु की माता सारह । मुसलमान हैं पुत्र हाजरह ॥
अब संदेह कहा सो हिये । ताको उत्तर तुरतहि लहिये ॥
काजी कही कुरान मझारी । परो न ऐसो दीठि हमारी ॥
यहसुनि स्वामी तुरत मगाया । खोलि कुरान सबूत दिखाया ॥
सूरत इन्कबूत पढ़वाई । ताकी शरह खोलि दिखलाई ॥
काजी कही नाय कर माथा । लोंडी थी मानी यह बाता ॥
परि निकाह करि लीया उससे । मुसलमान पैदा हैं जिससे ॥
स्वामी कहा घरी नहि रहते । परि वादी बिन कहीं न रहते ॥
फिर हे का संदेह आपको । कहना चहिये छोड़ि दाप को ॥
वास्तव में वह थी तो बांदी । राजा संग होगई शादी ॥
लाजवाब काजी हो करके । चले चुप्प हो सब उठि करके ॥
मुसलमान सकुचाय खिजाये । करीमबकस मनमें दहलाये ॥

॥ दोहा ॥

चले रायपुर राज ते ब्यावर किया मुकाम ।
पंधरे दिन ठहरे यहां गये मसूदा धाम ॥
भये मसूदा ते विदा हुरडे पहुंचे जाय ।
कृपाहेली राय्ड़े टिके बनेड़े आय ॥

॥ छन्द ॥

सन अष्टादश सो इक्यासी है अक्टूबर खासा ।
राज बनेड़े के अधिपति की पूरन कीनी आसा ॥
मान सहित सत्कार किया जिन सुनते नित उपदेशा ।
संस्कृत पढ़े धर्म के प्रेमी ज्ञानी आप नरेशा ॥
स्वामी जी ने लई परीक्षा राजकुमार बुला के ।
राजकुमारन गान सुनाया सामवेद का आके ॥

संस्कृत माहीं लई परीक्षा बहुत प्रसन्न हुए थे ।
राजकुमारों के हित स्वामी पुरस्कार दीये थे ॥

॥ चौपाई ॥

राजपुस्तकालय को देखा । संग्रह बहुग्रंथन का पेखा ॥
देखा ग्रंथ निघंटु जहां पर । किया मिलान दुहुन का बुधवर ॥
जो जामें पाई अधिकाई । सो दूजे में दिया बढ़ाई ॥
चक्कांकित मत खंडन कीया । खोल दिया सबका मनभीया ॥
स्वामी गढ़ चित्तौर पधारे । राजकर्मचारिनु सतकारे ॥
कवि राजा जो स्यामलदासा । अतिथ प्रबन्ध किया घा खासा ॥
वहां सुब्रह्मण्य शास्त्री रहते । न्याय शास्त्र सो आछो कहते ॥
स्वामी से तिन्ह किया विचारा । श्रोता भेद लखो सुनि सारा ॥
स्वामी का उपदेश सुननको । आवत राज्य अमात्य गुननको ॥
जितने बड़े बड़े सरदारा । आकर सुनते धर्म प्रचारा ॥
महाराज साहब भी आकर । श्रवण करत नित ध्यान लगाकर ॥
वेदधर्म अनुयायी होकर । प्रार्थी भये जोरि दोऊ कर ॥

॥दोहा॥

महाराजा विनती करी चलें उदयपुर आप ।
सुनहि धर्म निश्चिन्त हो मैटें मन के ताप ॥

॥ चौपाई ॥

कहने लगे महामुनि ज्ञानी । सुनिये राजन मोर कहानी ॥
हो इन्दौर बम्बई जाऊं । लौटूं शीघ्र उदयपुर आऊं ॥
दृढ़ विश्वास करो मम वचपर । फिरती वेर जाउं नहिं लंघिकर ॥
दिये बचन इन्दौर सिधाये । तहां नहीं हुलकर नृप पाये ॥
स्वामी बगदि बम्बई धाये । ता पाछे हुलकर ग्रह आये ॥
खबर सुनी स्वामी जी आये । तुरत तार बंबई पठाये ॥
अब में घर हूं आप पधारें । दे उपदेश हमें निस्तारें ॥
वार्षिक उत्सव आर्य्यसमाजा । ताको कृत्य देखने काजा ॥
स्वामी जी बम्बई संभारी । गये यही उपलक्ष विचारी ॥
दाक्षणात्य तहं यज्ञ करावें । सामगान उद्गीथ सुनावें ॥

तहां एक वेदज्ञ विप्रवर । कहते चारों वेद सहित स्वर ॥
तिनको स्वामी मान करत हैं । ब्रह्मा कहि करि कें उचरत हैं ॥
दिखलाते अन्यों को उन को । चतुर्मुखी ब्रह्मा कहि जिन को ॥
तीनो समन नित्य प्रति करते । पुरोडाश आदिक सब धरते ॥

॥ रोला ॥

स्वामी जी व्याख्यान आप ही नितप्रति देते ।
करिके मधुरालाप चित्त सब का हरि लेते ॥
सामगान को सुनत सकल श्रोता हर्षाहीं ।
करत प्रशंसा मुग्ध मुग्ध निज निज घर जाहीं ॥
साहूकार अनेक सेठ हू बहुधा आते ।
स्वामी जी जो कहैं आर्य्यमन्दिर बनवाते ॥
परि स्वामी का नियम नहीं निज मुख ते कहते ।
सामाजिक व्यवहार माहिं चुपके ही रहते ॥
आर्य्यसमाज स्वतन्त्र सुसेटी है धार्मिक यह ।
आवश्यकता देखि करे चाहैं जैसा वह ॥
अपना निज का काम यदी स्वामी का होई ।
बात तासु की और करो मन भावे सोई ॥
अपने सुत को एक सेठ स्वामी ढिग लाये ।
तिहि को नित के कृत्य बहुत समझाय बताये ॥
उठना बहुत प्रभात हाथ मुख धोना अपना ।
मात पिता को पूजि नाम ईश्वर का जपना ॥
विद्या पढ़ने जाउ पुस्तकें आप उठाओ ।
नौकर का नहिं काम आलसी चित न बनाओ ॥
ऐसे ही उपदेश योग्य जो उन के देखे ।
हुए सेठ संतुष्ट मगन मन जाते पेखे ॥
नैमित्तिक करि सभा नियम उपनियम विचारे ।
स्वामी जी पंजाब माहिं जो किये सुधारे ॥
कई सभामधि सोचि समझि जब संमति लीनी ।
स्वीकृत सो करि लिये सर्व सम्मति दे दीनी ॥

सभी समाजां माहिं नियम प्रचरित हैं वे ही ।
लक्षपुर नगर विराजि बनाये स्वामी ते ही ॥
सूजी मथुरादास सेठ बम्बई मझारे ।
विज्ञापन छपवाय नगर चहूं ओर प्रचारे ॥
वेदों द्वारा सिद्ध मूर्तिपूजा करि देगा ।
पांच हजार इनाम रुपैया हम से लेगा ॥
इस पर भी कोऊ विदुष पारितोषिक लैने को ।
सेठ सामुहे गया न फिर उत्तर देने को ॥
अब की बिरियां यहां मास छै स्वामी ठहरे ।
जून तिथी चौबीस जाय खंडुवा में विहरे ॥
यहां ते चलि इन्दौर गये परि मिले न राजा ।
गये फेरि रतलाम शीघ्र स्वामी महाराजा ॥
तीन दिना वहां ठहर जावरा होत सिधारे ।
पूरन करने वचन उदयपुर माहिं पधारे ॥
अब यहां का वृत्तान्त अलग ही सबे सुनाऊं ।
लिखा जुदाही ट्रैक्ट निराला, ताहि छपाऊं ॥
परि कुछ सूक्षम वृत्त सुनाता हूं इस ठांका ।
सुनिये कान लगाय किया जो कार्य्य यहां था ॥
महाराना सत्कार यथोचित किया आप का ।
रखा सकल व्यवहार धर्म की तोल नाप का ॥
पढ़ते मानव धर्म न्याय औ योग पतञ्जलि ।
रहते स्वामी निकट दोऊ कर जोरें अंजुलि ॥
सज्जन निवास जो लाय टिकाये स्वामी जा में ।
सेवा के हित प्रात सांझ नृप नितप्रति आवें ॥
दिनचर्य्या के नियम नृपति को प्रभु लिखवाये ।
जिन ही के अनुसार नित्य के कार चलाये ॥
रियासत के श्रीमान् जिते हैं उन के लड़के ।
विद्यालय तेहि हेतु बनाओ सुघरें पढ़िके ॥
सीखें विद्या शस्त्र चलाने की परिपाटी ।
युद्ध करन की रीति लखें मग औघटघाटी ॥

न्याय विभागों माहिं नागरी करो प्रचारा ।
अपने ग्रन्थ पढ़ाय करो भारत उपकारा ॥
इक दिन देखा जाय चारणों का विद्यालय ।
शिक्षा करीं अनेक बनाने को शोभामय ॥
विद्यार्थिन की देखि योग्यता हो प्रसन्न मन ।
सब को दीना भोज न्योंति कर बुला एक दिन ।

***

जगत उपाधी उठे देखि लोगों की रचना ।
सुनिये श्यामलदास ध्यान देकर मम बचना ॥
चिन्ह समाधी आदि मरे पर नहिं बनवाना ।
हमरी अस्थी भस्म खेत में सब फिकवाना ॥
यही भविष्यत् माहिं हमारा सुमिरन रखना ।
इस के अन्य उपाय दूसरा कभी न करना ॥
बोले सुनि कविराज भेद निज मन बतलाऊं
प्रतिमा अपनी थापि चहतु हो मन्दिर बनाऊं ॥
स्वामी जी हंसि कही सुनो कविराज हमारी ।
यही पाप का मूल देख लो आंखि पसारी ॥
जड़ है यही विशेष मूर्तिपूजा की जग में ।
कंटक बोना नहीं धर्म की सीधी मग में ॥
इक दिन स्वामी निकट उदयपुर आप नरेशा ।
संग सभी सर्दार सुना चाहा उपदेशा ॥
बहुत प्रतिष्ठित लोग और जागीरदार सब ।
नगर निवासी सेठ जुरे थे कामदार सब ॥
मनु का दिया प्रमाण अर्थ करिके यह बोले ।
धर्मशास्त्र के बचन ध्यान दे सुनो अमोले ॥
यदी धर्म अनुसार देय आज्ञा अधिकारी ।
निर्विवाद सो मानि प्रतिष्ठा करिये भारी ॥
जो अधर्म का काम कराना चाहै नृपवर ।
तो नहिं करे कदापि सदां रहिये यों तत्पर ॥

कही मनोहरसिंह सुनो स्वामी महाराजा ।
यह विधि नहिं निर्वाह बिगड़ जावें सब काजा ॥
हंस वंश अवतंस हमारे प्रभु महाराना ।
इनकी आज्ञा मेटि भला कौन ठिकाना ॥
छीनि लेयं जागीर हमारी देयं निकारी ।
हो जावें बर्बाद फेरि को सुने हमारी ॥
स्वामी जी ने तोष कराया इस विधि भाई ।
धर्म हेतु सम्पदा सकल जग की छिन जाई ॥
इस पर हू नहिं तजे धर्म को हठ करि राखे ।
ईश्वर का उपदेश वेद सो ऐसा भाखे ॥
छल ते करनी वृत्ति कपट से काम चलाना ।
भीख मांगि निर्वाह तासु से अच्छा माना ॥
पंड्या मोहनलाल और ब्रजनाथ प्रियवर ।
फतहकरन वारेट किशन जी बुधवर मिलकर ॥
पंडित रामप्रसाद विप्र कामाश्रय आते ।
पढ़ते स्वामी निकट नियम कर बोध बढ़ाते ।

॥ चौपाई ॥

जगन्नाथ सिंह ठाकुर साहब । विद्याध्ययन करत नित प्रति सब ।
जो होवे रुचि गान करन को । सुरन सहित धुनि करो ऋचनु की ॥
सामगान करि उन्हें सुनाते । ताकी सकल क्रिया बतराते ॥
मुसलमान जो गाने हारे । भांड भगतुआ नाचन हारे ॥
वेश्या आदि नृतकी जोहैं । पापमूल जग माहीं सोहैं ॥
इन ते दूर रहन की शिक्षा । नित्य देत स्वामी जी दीक्षा ॥

॥ दोहा ॥

इक अवसर पर आय कर स्वामी जी के पास ।
कछू जमीदारनु कही पुजवो हमरी आस ॥
महाराना दर्बारमें है हमरा अभियोग ।
ताको न्याय कराइये देकर अपना योग ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी कही सुनो सब ठाकुर । नित्य होय उपदेश यहाँ पर ॥
धर्माधर्म श्रवण करि जानो । त्यागो झूंठ सत्य को मानो ॥
हम संन्यासिनु को जो धर्मा । ताते वाच्य करें नहिं कर्मा ॥
आप महाराना ते कहिये । न्याय कराय आपनो लहिये ॥
संसारिक झगड़े के माहीं । हस्तक्षेप हम करते नाहीं ॥
स्पष्ट उत्तर हमरो जानो । याको कबू बुरो मति मानो ॥

॥ दोहा ॥

सब प्रसन्न ठाकुर भये हाथ जोरि सिर नाय ।
प्रश्न परीक्षा हेतु हम तुमते कीनो आय ॥
आप जितेन्द्री ब्रह्मवित् पूर्ण तपी स्वच्छन्द ।
आत्मवान् योगी बड़े विचरत हो निर्द्वन्द ॥

॥ चौपाई ॥

हमनु याचना जो कुछ कीनो । ताकी शिक्षा नीकी दीनी ।
क्षमा करो हमरे अपराधू । डूबत पाप समुद्र अगाधू ॥
एक दिना याही विधि राना । स्वामी निकट जाय बतराना ॥
महादेव यहाँ के अधिकारी । एक लिंग का मंदिर भारी ॥
यदिवा देशकाल को लखिकर । मूर्तिपूजा खंडन तजिकर ॥
यदि स्वीकार आप कर देवें । श्री महन्त उसके बनि लेवें ॥
तो यह राज्य देश और रिआया । सब पर रहै आप की छाया ॥
लाखों रुपया की जो वसुधा । ताको रहै आप कर सुविधा ॥
हम सेवक नितसेवा करिहैं । बिन आज्ञा कछु पद नहिं धरिहैं ॥
अन्य राज करि हैं सत्कारा । अधिक होय जग मान तुम्हारा ॥

॥ दोहा ॥

यह सुनि स्वामी क्षुभित ह्वै महालाल करि नैन ।
महाराज ते यों कहे समझा करिकें बैन ॥

॥ चौपाई ॥

आप मुझे लालच देते हैं । कुगम पोट निज सिर लेते हैं ॥
तीन लोक औ चौदह भुवना । सकल जगत की काजै रचना ॥
देकर मोहि लगाना चाहे । ऐसा होना संभव ना है ॥
वेद वचन ईश्वर उपदेशा । ताते विमुख न होउ नरेशा ॥
तुम्हरो राज लांघि झट जाऊं । जा दिन अपनो चित्त चलाऊं ॥
परि असीम को है वह अधिपति । ताकूं लांघि सके किस की गति ॥
उस परमेश्वर की छाया ते । चाहत अलग कियो माया ते ॥
निश्चय आप रखें मन मांहीं । प्रभु ते बिलग होऊं मैं नाहीं ॥
जो आज्ञा है वेद मझारी । प्रति पालन करिहौं सिर धारी ॥
मैंने करी प्रतिज्ञा जिसकी । अब नहिं करूं अवज्ञा उसकी ॥
जो सच्चिदानन्द जग त्राता । माता पिता बन्धु सुत भ्राता ॥
ताकी आज्ञा त्याग नरेशा । जग के भोगत रहूं कलेशा ॥
यह उत्तर सुन के महाराना । होकर चकित सहम खिसियाना ॥
क्षमा मांगि नम्रता दिखाई । अपनी आतुरता जतलाई ॥
जैसी प्रथम करत सिवकाई । या तें करन लगे अधिकाई ॥
अन्त श्री स्वामी जी यहां पर । एक सभिति उत्तम को रचिकर ॥

॥ सोरठा ॥

परोपकारिणी नाम ताको जग विख्यात करि ।
सोंपा अपना काम अन्तिम शिक्षापत्र लिख ॥

॥ चौपाई ॥

सभापती महाराना कीने । मंत्री श्यामलदास प्रवीने ॥
एक बीस चुनि किये सभासद् । जे भारत में सभ्य निरापद ॥
सकल दई जिन के कर तारी । दे निज सत्व किये अधिकारी ॥
ताकी प्रती नोट मैं देखो । शिक्षा सकल तासु मधि पेखो ॥
कुजपुत्र परदान जु कीना । भेजि अनाथालय को दीना ॥
स्वामी चलत भेट जो दीनी । सो स्वामी स्वीकृत नहिं कीनी ॥
दूजी विनती करी येह तब । षड दर्शन को भाष्य रचो जब ॥
बीस हजार मुद्रिका दूंगा । इस परमारथ का फल लूंगा ॥

॥ दोहा ॥

बड़ी प्रतिष्ठा के सहित सादर करि सनमान।
विदा किये प्रभु राज्य से निज कर हांकि विमान ॥
आज्ञा ले बगदे नृपति विनय करी कर जोर।
आज्ञाकारी जानि मोहि दर्शन देयं बहोर ॥

॥ सोरठा ॥

कहे अनूठे बैन स्वामी जी होकर मगन।
आवें दर्शन दैन जो जीवत जग में रहैं ॥

॥ रौला॥

कहे गूढ़ अति वाक्य भये सब पीछे सांचे ॥
धर्मदिवाकर चरित सोचिकर जो कोई बांचे ॥
होवे उसे प्रतीति भविष्यत् बानो की गति।
क्या जाने सामान्यहृदय योगिनु की सतमति ॥
हूआ आर्यसमाज चले जब स्वामी आये।
प्रभावशाली पुरुष सभासद् सबै कहाये॥

॥ रोला ॥

अस्सी ऊपर तीन अठारह सौ सन ईसा।
पहिली मार्च प्रभात उदयपुर के अवनीशा ॥
पग छू आयुस लिया विदा स्वामी को कीना।
आह्लादित हो सबै सुखी रहिये कह दीना ॥
नीम हेडे होत और चित्तौड़ सिधारे।
शाहपुरा के ठाम मार्च नौ माहि पधारे ॥
महाराजा ने आय करी स्वामी अगवानी।
अति श्रद्धा के साथ भई पूरी महमानी ॥
वैदिक धर्म प्रचार तुरत आले करदीया।
निस दिन चर्चा धर्म सबै उपदेशहु कीया ॥
प्रति दिन संध्या समय तीन घंटा मनुस्मृती।
पढ़ते श्री नृपराज पूछ कर सबरी वृत्तो ॥

मानव धर्म सभार जिसे प्रक्षिप्त मिलाये ।
तात्पर्य्य समझाय नृपति को सभी बताये ॥
योगशास्त्र के बाद कछू वैशेषिक माहीं ।
करवाया अभ्यास प्रभू ने नृप के ताईं ॥
हिम्मतराम महन्त बड़े थे रामसनेही ।
स्वामी जी ले आय करत हे शंका तेही ।
समाधान हो जाय चले आसन को जाते ॥
शास्त्रार्थ के हेतु कभी मन नहीं चलाते ॥
दादूपंथी एक संस्कृत का अभिमानी ।
स्वामी बोलन जाय वहां जा बोले बानी ॥
स्वामी इक दिन कहा धाम हमरे पर आवो ।
वृथा समय क्यों नष्ट करो क्या यामें पावो ॥
कोठो की छत्त गिरी एक दिन यहां अचानक ।
दबि गये तहां मजूर भयो उतपात भयानक ॥
साहस नाहिन हुआ नहीं कोऊ उठि कर धाये ।
पर स्वामी जी महाराज तुरत उठि सब को लाये ॥
पंडित कालूराम रामगढ़ वाले आये ।
दर्शन करि उपदेश श्री स्वामी के पाये ॥
आज्ञा के अनुसार रामगढ़ में उपदेशा ।
वैदिक धर्म प्रचार करत सो रहे हमेशा ॥
पौंडरीक हरिदत्त दर्शनों के हित आये ।
करि कछु वार्त्तालाप मगन मन निज गृह धाये ॥
सुनि स्वामी उपदेश नृपति के भव में भाई ।
राजभवन के माहिं यज्ञशाला बनवाई ॥
अग्निहोत्र प्रतिदिना करन का दृढ़व्रत कीना ।
पंचयज्ञ का नियम नृपति ने हठ करि लीना ॥
वेदभाष्य के लिये सहायक बने महीपति ।
किया समर्पण द्रव्य जतादई अपनी सहमति ॥
धर्म प्रचारक हेतु एक उपदेशक राखा ।
तीस रुपया मास तासु को वेतन भाखा ॥
मारवाड़ के नृपति निमंत्रण पत्र पठाया ।
शाहपुरा के माहिं निकट स्वामी के आया ॥

स्वामी स्वी करि लिया जोधपुर माहीं जाना ।
शाहपुरा महाराज चहा था जिसे टलाना ॥
तो भी चलती बार इशारा इतना दीया ।
खंडन वेश्या आदि वहां नहिं चहिये कीया ॥
बड़े वृक्ष को तुरि कभी मैं छांटत नाहीं ।
उग्र शस्त्र से काटि उसे डारत छिन माहीं ॥
शाहपुरा से चले गये अजमेर मझारे ।
फेरि जोधपुर काज साज सामान सम्हारे ॥
उमर दान बारेट शाहपुर दिये पठाई ।
मारग करन प्रबन्ध संग ले जायं लिवाई ॥
हाथी रथ पल्की गाड़िया घोड़ा आदिक ।
मिलि है सब सामान जहां पर भोजन आदिक ॥
सब प्रबन्ध करि दिया राज ने मारग माहीं ।
ठहरन का आराम सकल स्वामी के ताहीं ॥
करत रहे उपदेश जिन दिनों राज उदयपुर ।
सर करनेल प्रतापसिंह ने ने भेजा पत्तर ॥
उत्तर भेजा यही सुभीता जब पावेंगे ।
निश्चय रखिये आप फेरि कबहूं आवेंगे ।
इत का तो यह हाल उधर का भी सुन लीजै ॥
थोड़ी देरी कान हमारी ओरी दीजै ।

॥ दोहा ॥

गुन वसु सिद्धी इन्दु सन मई महीना जान ।
उनतिस के दुपहर ढले मारवाड़ दरम्यान ॥
स्वामी पहुंचे जोधपुर हुआ अधिक सत्कार ।
राजा राव जवानसिंह मिले सुआय अगार ॥

। चौपाई ।

भय्या फैजुल्लाखां वाला । बाग जोधपुर में था आला ॥
बंगला बड़ा बाग के माहीं । ठहराया स्वामी के ताईं ॥
थोड़ी देर पिछाड़ी जाकर । प्रतापसिंह महाराज वहां पर ॥
भये उपस्थित डेरा माहीं । संग में तेजसिंह निज भाई ॥

नृपति भेट स्वामी की कीनी । खूलदान को आज्ञा दीनी ॥
करो आप स्वामी तिवकाई । जो चहिये सो लेत मगाई ॥
हवलदार संग द्वै जो सिपाई । राति दिना पहरा दें आई ॥
धर्म प्रचार करन प्रभु लागे । चहूं ओर मतवादी जागे ॥
स्वामी जो करते उपदेशा । कहत सुनकर जाय नरेशा ॥
इहि बिधि सोलह दिवस गवाये । स्वामी निकट नृपति नहिं आये ॥
सत्रहवें दिन राजा साहब । लिये साथ सब राज्य मुसाहब ॥
स्वामी जी को भेट दिखाई । बैठन लगे फर्श पर जाई ॥
परि स्वामी जी आग्रह कीना । आसन उच्च नृपति को दीना ॥
कुर्सी ऊपर जाय विराजे । कहन लगे या विधि महाराजे ॥
स्वामी हैंगे आप हमारे । हम हैं सेवक सकल तुम्हारे ॥
आप बराबर बैठें कैसे । शोभा हमैं देत नहिं ऐसे ॥
स्वामी करन लगे उपदेशा । घंटा तीनक सुनो नरेशा ॥
ले आज्ञा नृप भवन पधारे । करि प्रणाम यह बचन उचारे ॥

। दोहा ।

अहो भाग्य इस देश के कहता सत्य सुभाय ।
बड़ी कृपा कीनी प्रभू दर्शन दीने आय ॥

। छन्द ।

चार बजे संध्या के समय व्याख्यान देते थे ।
फेरि बैठि कोठी अंदर प्रश्नोत्तर होते थे ॥
आस पास के प्रसिद्ध पंडित शास्त्रार्थ के लीये ।
उद्यत हुए न बहुत कहने पर लालच छू के दीये ॥
निज संदेह मिटाने के हित बहुधा जन आते ।
सुन कर सरल मनोहर प्रफुलित मन घर जाते ॥
नगर प्रतिष्ठित श्रीयुत सज्जन प्रश्न करन को आते ।
प्रेम सहित स्वामी से उत्तर अपना पूरा पाते ॥
नवाब मुहम्मद खां साहब भी आया जाया करते ।
इन का फ़िरका अहल शीया कबहूं न प्रश्न उठाते ।
शेख इलाहीबक्स और करनैल मुहीउद्दीना ॥
प्रायः आकर बातें करते परि मन रखत मलीना ॥

भय्या फैजुल्ला खां साहिब राज मुसाहिब आला ।
भौंह चढ़ाकर स्वामी जी से बोले बचन कराला ॥
राज मुसलमानों का होता ऐसे कहन न पाते ।
यदिवा कहने लगते स्वामी तो यमपुर को जाते ॥
स्वामी जी हंसि उत्तर दीना सुनो हमारी बाता ।
दो क्षत्रिन को पीठ ठोककर पूरो खबर लिखाता ॥
महाराज के दो लघुभ्राता ये विद्वान् विदुषवर ।
बात चीत प्रायः करते थे शाक्त मत के ऊपर ॥
अन्त मानि स्वामी का कहना उभय भये अनुयायी ।
जिनी कुतर्क वेदान्तिनु की स्वामी काटि बताई ॥
स्वामी जी से बड़ा नेह औ आदर पूरा करते ।
निस दिन सेवा ही में रहते छिन भरि नाहिन टरते ॥
एक दिवस स्वामी जी कहि कर क्षत्रिय धर्म सुनाये ।
गिरी हुई हालत दिखला कर श्रोता खूब रुलाये ॥
जो क्षत्रिय निज नारी तज कर अनुचित कर व्यवहारा ।
करत व्यवहार अन्य स्त्री संग बिलसत दुख अपारा ॥
वैश्या को दे बीजदान जो क्षत्रि नहीं लजाते ।
कन्या होय उदर उन के ते घर घर ताहि नचाते ॥
समयानीन सदा स्वामी जी करते थे सब काजा ।
रात्री के दश बजने पर ही पूरन करत समाजा ॥
महाराजा यशवन्तसिंह जो अधिक बैठना चाहैं ।
तो स्पष्ट स्वामी कह देते रहा समय अब नाहैं ॥
नोट कराय प्रश्न राजा के दूजे दिन को रखते ।
पहर दूसरा बीता चाहै अनुचित सह नहिं सकते ॥
जाओ बिराजो अन्तःपुर में खान पान को कीजै ॥
द्योस मार्हि के श्रम को खोकर आनन्द निद्रा लीजै ॥
विश्वस्त रीति से मालूम हुआ वेश्या से है प्रीती ॥
सबरी रियासत उस से डरती यह अनुचित है रीती ॥
छोटे बड़े काम रियासत के बिन पूछे नहिं होते ॥
राज्य मुसलमानों के कर में हिन्दू बैठे रोते ॥
अनुचित सुनि व्यवहार नृपति का स्वामी खेदित होकर ॥
राज निकल जावेगा इनते बैठे दोऊ कर धोकर ॥

कुछ दिन बाद बुलाये स्वामी व्याख्यान देने को ॥
राज्य अमात्यवर्ग सब जोरे धर्मज्ञान लेने को ॥
स्वामी जी स्वीकृत किया निमंत्रण चोखा अवसर जाना ॥
करूं विशेष आज उपदेशहि यह मन माहीं ठाना ॥
महाराजा दीवान खास कोदेकर हुकम सजाया ॥
स्वामी का उपदेश मनोहर चित दे सुनना चाहा ॥
आवत हुए लखा स्वामी को वेश्या तुरत टलाई ॥
डिगमिगान जो लागी पालकी अपने हाथ उठाई ॥
देखा स्वांग सभी स्वामी ने अपनी दृष्टि घुमाई ।
अवशि आज वेश्या खण्डन करि देहौं नृपहि चिताई ॥
उच्च आसन पर जाय विराजे स्वामी सभा मंझारी ।
वर्त्तमान राजन की करनी दे व्याख्यान उचारी ॥
करन अनुकरन लगे सिंह अब स्वानों का हम देखा ।
व्यभिचारिण कुतियों के सम हैं उन संग हमने पेखा ॥
वेश्या कुलटा धन ग्राहक हैं जाति पांति नहिं तिनकी ॥
छांड़ि पतिवर्ता निज नारी सेवा करते उन की ॥
जो कुलवती सती नहिं होती होता राज विनाशा ॥
उन्हीं के तप के प्रताप से बच रहे करो विश्वासा ॥
महाराजा साहब पर इस का बड़ा प्रभाव पड़ा था ॥
होकर मगन सुनाया था सब तैयदिवा कथन कहा था ॥
व्याख्यान का प्रभाव लखि कर वेश्या अति घबराई ।
गुप्तरूप से रचि कर माया कीनी पाप कमाई ॥
महता विजयसिंह चक्रांकित होगए रुष्ट महाना ।
प्रबल समीक्षा लखि चक्रांकित बड़ा बुरा मन माना ॥
तीजे भय्या फैजुल्लाखां पहिले ही बिगड़ रहे थे ।
स्वामी से हो विमुख महा उनि बचन कठोर कहे थे ॥
चौथे पौराणिक पंडित सब पूरे पूरे कुढ़ते ॥
सबनु रचा षड्यंत्र मेल करि महा प्रपंच जु गढ़ते ॥
स्वामी जी के साथ विरोधी दल को बांधि गये थे ॥
प्राण लेन के उद्यम पूरे पापिनु साधि लये थे ॥
सबसे पहिले पाकशासनी लालच दे अपनाया ।
दूजा था कल्लू कहार का उस पर हाथ फिराया ॥

लेकर माल बहुत सा इक निस कहार कहूं भागा ।
पहरे वाले ला परवा हो नाहिन एको आगा ॥
अभिसन्धी नाना प्रकार की होने लगी निदाना ।
उदासीन हो निश्चय क्रिया करदें वेमि पयाना ॥
पाज सवारी का प्रबन्ध सब महाराजा ठहराया ।
कालि पधारें पै स्वामी जी सब ने यह सुन पाया ॥
आनि लगा कुछ ऐसा कारन माया लखी न जाई ।
अस्कमात् चलने से उस दिन लिया उन्हें ठहराई ॥
दैवयोग इस को कहते हैं होनी प्रबल बतलाई ।
ऋषि मुनि जती सती योगी ने गति नाहिन लखि पाई ॥
एकबार भोजन करते थे सदा दिवस में स्वामी ।
अधि रुची से खाते थे नित मंगा मंगा कर आमी ॥
ओटा हुआ राति को पीते ठंडा दूध करा के ।
सोते समय पिलाया आकर वामन शाहपुरा के ॥
पहिली नींद सो गये स्वामी फेरि उठे उकता के ॥
उदरशूल अपने में देखा बहुत चित्त मचलाते ॥
बार बार कै होने लागी नाहिन कोउ जगाया ।
रही वेदना समस राति भरि नाहिन काहि जतलाया ॥
उठे बहुत दिन चढ़े पलंग से कोठी बाहर आये ।
पीत शरीर पड़िगया सारा धीरे बोल सुनाये ॥
फेरि दस बजे दिन से पीछे हैजा दस्त मड़ोरा ।
होने लगे तरा ऊपर जब देखा कष्ट कठोरा ॥
आज्ञा दई साथ वालों को हवन शीघ्र करि डालो ।
हुआ पवन दूषित जो यहां का बाहिर उसे निकारो ॥
कष्ट बड़ा भारी इस पर हू नेक नहीं घबराये ।
आने जाने वालों के संग भली भांति बतराये ॥
प्रथम डाक्टर सूरजमल जी औषधि करने लागे ।
बारी चिकित्सा दत्त चित्त हो सोचि पिछाड़ी आगे ॥
था विश्वासपात्र राजा का उस को शीघ्र बुलाया ।
स्वामी जी की करन चिकित्सा तुरतहि उसे पठाया ॥
नाम अलीमर्दान जिन्हों का खां का अंक पिछाड़ी ।
बड़े मोतबिर कहलाते थे डाक्टर शब्द अगाड़ी ॥

गुप्तमंत्रणा के मिम्बर हैं भेद न काहू चीन्हा ।
धीरें धीरें स्वामी जी को अति दुबेल कर दीन्हा ॥
महाराजा प्रतापसिंह को पूरन थी यह आशा ।
डाक्टर साहब बड़े योग्य हैं हम को है विश्वासा ॥
परि उनके इलाज से प्रति दिन दशा बिगड़ती जाती ।
तीस तीस चालीस दस्त का दौड़ा होता था दिन राती ॥
छाले पड़े जीभ मुख मांही बोला भी नहिं जाता ।
उठने को सामर्थ्य नहीं थो करवट अन्य लिवाता ॥
यह सब कुछ होने पर भी घबराहट चेष्टा से ।
चिन्हमात्र लक्षित नहिं होता स्वामी की चेष्टा से ॥
ऊपर वालेनु से पूछो तो कुछ का कुछ बतलाते ।
स्वामी जी की रोग दशा करि करि कपट छिपाते ॥
सन् अठारह से और तिरासी ग्यारह अक्टूबर को ।
गजट राजपूताना माहीं पढ़ि कर अशुभ खबर को ॥
आर्य्यपुरुष अजमेर मध्य जे तिन को आनि सुनाया ।
रोगग्रस्त स्वामी जी होगये समाचार बतलाया ॥
व्याकुलहृदय सभासद् होगये सम्मति सब ने कीना ।
जाय जोधपुर शीघ्र एक जन चाहिए सुधबुधि लीनी ॥
निदान लाला जेठामल जी भेज जोधपुर दीने ।
समाचार भीतरे बाहिरे युक्ति लागाकर लीने ॥
स्वामी की देखि दशा को अति मन में घबराये ।
कठिन समस्या भई रोग की रह गये मन पछिताये ॥
स्वामी जी की ओर देखि कहा खबर नहीं भेजी ।
बोधित किया न हम लोगों को हुई रोग की तेजी ॥
बीमारी का हाल अवश करि तुम भी सब घबराते ।
और बात जो कोई होती लिखकर पत्र पठाते ॥
आज्ञा लेकर चले जेठामल अजमेर माहीं आये ।
बोधि। करी दशा स्वामी की गुप्तभेद बतलाये ॥
कोलाहल मच गया देश में तार खटकने लागे ।
सुनी खबर स्वामी की जिसने शीघ्र सोई उठि भागे ॥
तार सैकड़ों चहूं ओरते अरजंट और जवाबी ।
राति दिना अजमेर पहुंचते मचि रही बड़ी खिताबी ॥

कोई जोधपुर सीधे पहुंचे देखो वारी पटना,
स्वामी को ले चलो यहां से कोजै तनक विलम ना ॥
कोई सोचत गये मार्ग में अब क्या करना चहिये।
स्वामी को अपने संग लावें याहि वहां पर रहिये ॥

॥ दोहा ॥

आर्यपुरुष सम्मति दई छोड़िदेउ यह थान।
सो स्वामी ने अनुमती लई तुरत ही मान ॥

॥ रोला ॥

महाराज के पास खबरि यह आन कराई।
आबू पर हम जायं सवारी देयं पठाई ॥
महाराज ने कही देऊं आज्ञा में कैसे।
उचित नहीं मालूम होत है जाना ऐसे ॥
ठहरें कछु दिन और मानिलें इतनी स्वामी।
जो जावें अब आप होय पूरी बदनामी ॥
शोचनीय होगई दशा स्वामी की औरहु।
बीमारी बढ़िगई बिगड़ने लागे तोरहु ॥
एडमसाहब आय राय पुनि यही दई थी।
जानि मुनासिब उसे नृपति ने मान लई थी ॥
स्वामी का प्रस्थान रहा सोलह अक्टूबर।
पंधरे को महाराज गये स्वामी की निज पर ॥
महाराज के साथ मुख्य अधिकारी सबरे।
स्वामी जी के धाम जाय यानन ते उतरे ॥
विनय और अनुराग भरे यों कहने लागे।
एसी दुर्बल दशा लखी हम बड़े अभागे ॥
इसी दशा में जात हुआ नहिं कछू इलाजा।
यह है बड़ा अनिष्ट मोहि आवत है लाजा ॥
इस अवसर पर अधिक नाहिं आग्रह कर सकता।
होकर अति लाचार निवेदन यह मैं कहता ॥
जो कुछ भेट अगार आपके मैं धरता हूं।
करि लीजै स्वीकार यही बिनती करता हूं ॥

नक़द अढ़ाई सहस दुशाला दो कश्मीरी ।
और बहुत सामान विछा में धरे अमीरी ॥
अति देखा उत्साह तथा आग्रह भी पाया ।
स्वामी जी ने उसे किया स्वीकृत उठवाया ॥
दूजे दिन नृपराज स्वयं भ्राता संग जिनके ।
लीजे पहिरें पहुंच निकट जा बैठे उनके ॥
स्वामी जी की आंखि खुली बोले अति धीरें ।
भई चिकित्सा अधिक करीं उत्तम तदबीरें ॥
हुआ नहीं आराम बड़ी प्रति ईश विलक्षण ।
अब आबू पर जायं होयगी सेहति तत्क्षण ॥
इसी तरह पर बातचीत औरहु बहुतेरी ।
स्वामी जीसें करत रहे बैठे बहु देरी ॥
वहीं बैठि नृपदई सूचना कामदार को ।
करो पालिकी त्यार लगा सोलह कहार को ॥
दो हों पंखाकुली और दो खसकी डेरा ।
पहिरा चौकी हेतु जाय संग गारद मेरा ॥
यह सब किया प्रबन्ध तार आबू दिलवाया ।
कोठी आदि मकान साफ सब वहां कराया ॥
श्री स्वामी जी टिकें शैल आबू पर जब तक ।
राज्य ओर तेरहे सकल सुविधा नित तब तक ॥
संध्या जब हो गई पालिकी को मंगवाया ।
स्वामी को असवार आपने हाथ कराया ॥
बाग द्वार तक साथ आप पैदल ही आये ।
ठहराई पालकी बचन कछु मधुर सुनाये ॥
पेटी अपनी मंगा तुरत ही फलालेन की ।
निज कर स्वामी कमर कसी कहि विनय लैन की ॥
लखि कर प्रीति उमाह मगन ह्वै स्वामी लीनी ।
बगदजाए नृपराज प्रेमयुत आज्ञा दीनी ॥
बिदा भये कर जोरि विनय श्रद्धायुत करि के ।
करना कृपा बहोरि कही नैनन जल भरि के ॥
जब होवे आराम तार दे सूचित कीजै ।
लैने पहुंचूं तुरत बचन मम सत्य प्रतीजै ॥

कहा कहारों प्रती खुशी की चिट्ठी लावो ।
हम भी होय प्रसन्न पारतोषिक तुम पावो ॥
ऐसा करि उपदेश दुखित हो अश्रु पात करि ।
स्वामी को करदेय निरोगी जौन वैद्यवर ॥
पुरस्कार मैं देउं तासुकूं दो हजार का ।
खानपान के हेतु गुभारा हो अगार का ॥
कष्ट न होने दिया साथ में थे जो अनुचर ।
तदपि अनेकों बार मार्गश्रम हुआ ऋषीवर ॥
जहां होय विश्राम वहीं पर हवन कराते ।
वेदमंत्र सुनि नित्य खेद मग का निबटाते ॥
उभय विप्र इकधोस हवन के समये आये ।
सबके संग मिल बैठि वेद के मत्र सुनाये ॥
स्वामी जी ने निकट आपने लिये बुलाई ।
भोजनार्थ दो रुपे दक्षिणा उन्हें दिलाई ॥
काशी आदिक लियें महातम बामन आये ।
स्वामी जी ने तुरत उन्हें बाहिर ठहराये ॥
स्वामी जी जिस समय जारहे आबू ऊपर ।
जालंधर के एक सभ्य जन मिले तहां पर ॥
ये जाते अजमेर आवते स्वामी पाये ।
लछिमनदास सुजान बगदि पाछे को आये ॥
साहस कीना बड़ा डाक्टर साहब ऐसा ।
नौकर का नहिं काम करि सके जो वह जैसा ॥
ज्यों त्यों करिकें रहे दो दिना स्वामी पासा ।
अस्तीफा लिख दिया छोड़ि सर्विस की आसा ॥
हुआ नहीं मंजूर फेरि लाचार होयके ।
करिकें दवाप्रबन्ध चले अजमेर रोय के ॥
पथ्य आदि बतलाय फेर बिनती यह कीना ।
चलें आप अजमेर प्रथम नाहीं करि दीना ॥
बहुत कहा समझाय सोच कर मानि लिया था ।
दूजे ही दिन शीघ्र चलो यह हुक्म दिया था ॥
एडम साहब बड़े डाक्टर आबू पर थे ।
राज्याज्ञा अनुसार देखने आया करते ॥

सर करनैल प्रतापसिंह जी देखन आये ।
मिलि स्वामी सें तुरत जोधपुर धाम सिधाये ॥
तारों का यह तार बराबर चले आ रहे ।
करते थे आश्चर्य जवाबी जोकि जा रहे ॥
आते वायसराय गवर्नर जरनल जब जब ।
इतने टेलीग्राम आवते देखे कब तब ? ॥

॥ रोला ॥

अक्टूबर छब्बीस अग्निवसु सिद्धि इन्दुमन ।
आबू से चलि दिये गये अजमेर उसी दिन ॥
फर्स्ट क्लास रिजर्व एक गाड़ी करि लीनी ।
स्वामी को पोढ़ाय भली सुविधा करि दीनी ॥
बैठे संग में आर्य्य कई सेवा के ताईं ।
कष्ट होन नहिं दिया जहां तक पार बसाई ॥
निस के बजते तीन आय अजमेर गये थे ।
लगा पालिकी तहां सहज में बिठा लये थे ॥
अक्टूबर का अन्त शीत की थी अधिकाई ।
परि स्वामी जी कहैं बड़ी है गरमी भाई ॥
जिस कोठी में टिके द्वार सबरे खुलवाये ।
शान्ति हुई नहिं नेक बीजना द्वै डुलवाये ॥
ठाकुर लक्ष्मणदास दूसरे दिना आनकर ।
किये बहुत उपचार पड़ा नहिं नेकहु अन्तर ॥
स्वामी जी ने कहा चलेंगे राज मसूदा ।
दो दिन में आराम होय यह हम को सूझा ॥
बिनती सब ने करी मानि लें एती गुसाईं ।
तनक होय आराम मसूदा दे पहुंचाईं ॥
यात्रा करना बार बार इस रोग दशा में ।
ठीक नहीं ऋषिराज कहां पर ग्रेह बसा में ॥
यह सुनि कर मुसिकाय भविष्यत् की कहि बोले ।
दो दिन पीछे होय हमें आनन्द अतोले ॥
आठ बीस तारीख महीना अक्टूबर का ।
रखना इस को याद वाक्य है योगीश्वर का ॥

इस के पीछे सब शरीर में दीखे छाले ।
मुखड़ा हूआ लाल पड़ि गये सब को लाले ॥
दूजे दिना शरीर बहुत निर्बल सा देखा ।
पछताते सब आर्य्य बड़ा रहि गया परेखा ॥
कहा सेवकों प्रती बिठा दो हम को आकर ।
बैठि गये तब कहा अलग बैठो तुम जाकर ॥
चलती थी उस समय श्वास अति वेगवती हो ।
करते थे विच्छेद प्राण को रोकि गती को ॥
उस निसि कष्ट विशेष रहा परि नाहिं बताया ।
यह गति लखि करि मन्त्र आगरे तार पठाया ॥
ठाकुर मुकन्दलाल पलटि उत्तर भिजवाया ।
चलूं दूसरी ट्रेन शीघ्र जानो मैं आया ॥
अक्टूबर की तीस आनि जो हुआ सवेरा ।
दो दिन बीतें आज ईश क्या करे निवेरा ॥
सिविलसर्जन बोलि पठाये न्यूमन साहब ।
स्वामी देखे आय लगे कहने यों वे तब ॥
ऐसा दिल मजबूत होय जाको जग माहीं ।
हम ने दूजा मनुज आज तक देखा नाहीं ॥
नख शिख पीड़ा युक्त तनक परवाह न जिस को ।
है आश्चर्य महान् धन्य इस महापुरुष को ॥
कण्ठ माहिं कफ प्रबल रूप से दीख रहा था ।
न्यूमन करि उपचार अनेकों थाकि रहा था ॥
हुआ नहीं कुछ लाभ अन्त हो चले हिरासा ।
बढ़ता गया विशेष फेरि स्वामी का स्वासा ॥
ग्यारह बजते कहा शौच को जावैं भाई ।
चौकी ऊपर आन वेग से देउ बिठाई ॥
निज कर पानी लिया हाथ मुख दातुन कर ।
आज्ञा दी ले चलो बिठादो वहीं पलंग पर ॥
बैठे थोड़ी देर फेरि वह लेटि गये थे ।
चलता था अति स्वास तासु अवरोध किये थे ॥
ऐसा होत प्रतीत स्वास को रोकत स्वामी ।
ईश्वर का करि ध्यान मगन मन हैं निष्कामी ॥

उस अवसर में आय कहा कहिये दुख क्या है ।
एक मास पश्चात् आज का दिन सुख का है ॥
पूछा जीवनदास कहां इस समय आप हैं ।
ईश्वर इच्छा माहिं नहीं कुछ हमें ताप है ॥
चार बजे के समय आत्मानन्द बुलाये ।
सन्मुख ठाढ़े हुए तुरत इस विधि समुझाये ॥
सिरहाने की ओर खड़े हो या बैठो तुम ।
देखा चाहत नाहिं सामने काहू को हम ॥
सिरहाने की तरफ तुरत हटि बैठे जाकर ।
क्या चाहत हो कहो आत्मानन्द सोच कर ॥
कहा आत्मानन्द चाहता ईश्वर से यह ।
करे शीघ्र आराम देय आनन्द सबे वह ॥
सुनो आत्मानन्द बात तुम एक हमारी ।
इस का अच्छा होय कहा है देह विकारी ॥
धर के उन के सीस हाथ यों कहने लागे ।
रहना मगनानन्द पेखि ईश्वर को आगे ॥
श्रीयुत मिलने हेतु एक संन्यासी आये ।
अन्त समय की भेंट करन को उन्हें बुलाये ॥
स्वामी जी ने कहा चाहते हो अब क्या तुम ।
अच्छे होवें आप यही चाहत हैं सब हम ॥
हँसि के उत्तर दिया आप अच्छी विधि रहना ।
मुझ को है आराम आज इस का क्या कहना ॥
इस प्रकार को देखि सकल उठि कर ढिंग आये ।
हुए सामने खड़े चित्त में अति अकुलाये ॥
स्वामी जी ने सबे उस समय इस विधि देखा ।
वर्णन करना दूरि लेखनी का था लेखा ॥
चितै कृपा की दृष्टि प्रेमयुत सबे निहारा ।
मधुर मधुर कहि वचन कष्टि हरिलीला सारा ॥
दो सौ रुपया नक़द दुशाला दो मंगवाये ।
सौ सौ रुपया उभय दुशालनु में रखवाये ॥
आत्मानन्द निमित्त एक एक भीमसेन को ।
रामानन्द से कहा दुखन के हेतु दैन को ॥

दोहुन लौटा दिये बड़े आग्रह के साथ।
उठि कर मांगी क्षमा जोरिकें दोऊ हाथ ॥
घबराहट नहिं नेक शोक का लेश नहीं था।
पांच बजे की बात रोग का शेष नहीं था ॥

दोहा ॥

पूछा आकर एक ने कहिने तबियत हाल।
अन्धकार औ तेज का हुआ भाव इस काल ॥
समझा नाहीं काहु ने सोधी बातें जान।
स्वामी जी ने कहि दिया तत्व बात पहचान ॥

॥ चौपाई ॥

साढ़े पांच बजे थे जब ही। सबै बुलाये स्वामी तब ही ॥
जो हैं हमरे साथ विदेशी। हैं सब वैदिकधर्म हितैषी ॥
उन को देना यह समुझाई। खड़े अगाड़ी होउ न भाई ॥
आज्ञा सुनत सकल उठि धाये। स्वामीजी के दर्शन पाये ॥
जब सब लोग निकट चलि आये। स्वामी देखि २ मुसकाये ॥
श्रीयुत कही सुनो यह बाता। द्वारे खोलि देउ सब ताता ॥
खिड़की दो छत माहिं लगाई। तेहू कहि करि के खुलवाई ॥
तब ही पंड्या जी तहां आये। राज उदयपुर उन्हें पठाये ॥
फिरि स्वामी जी पूछन लागे। हमरा प्रश्न कहो भय त्यागे ॥
कौन पक्ष तिथि वार कौन सो। आज महीना होय जौन सो ॥
सो सब हमें बताय देउ अब। एक पुरुष यों कहन लगे तब ॥
कृष्ण पक्ष तिथि मावस जानो। औमवार कातिक का मानो ॥
यह सुन कोठी छत निहारी। फेरि भीत पर दृष्टि पसारी ॥
प्राणायाम प्रणव कहि कीया। श्वास रोक अपना सब लीया ॥

॥ दोहा ॥

वेदमंत्र पहिले पढ़ो फेरि संस्कृत मांहि।
कीनी ईश उपासना अन्तर राखा नाहिं ॥

॥ सोरठा ॥

फिर भाषा के माहिं ईश्वर के गुण कथन करि।
हर्षसहित पित चाहि गायत्री पढ़ने लगे ॥

॥ रोला ॥

कछुक देर तक आप समाधीयुक्त रहे थ ।
प्रफुलित चित के साथ नैन उनि मूंद लिये थे ॥
हर्षित हो कर नैन खोल यों कहने लागे ।
जग में नाहिन चली काहु की तेरे आगे ॥

॥ छन्द ॥

हे दयामय सर्वशक्तिमन तुम्हारा था मुझ को आधार ।
तेरी भई यही जो इच्छा उसका करना कौन विचार ॥
तेरी इच्छा पूरन होवे आहा शब्द किया उच्चार ।
तैने अच्छी लीला कीनी कहके करवट लिया सम्हार ॥
श्वास रोककर पूरा स्वामी एक ही बार जु दिया निकार ।
संध्या समय दिवाली के दिन स्वामी छोड़ दिया संसार ॥
उनइस से चालिस विक्रम का कृष्ण पक्ष भाव तिथि जान ।
भौमवार संध्या के समयें अथयो धर्मदिवाकर भान ॥
समय राति अजमेर नगर में हाहाकार रहा जो छाय ।
भारत खण्ड के सब नगरों में प्रायः खबर तुरत हो जाय ॥
प्रातःकाल होत शोकाकुल आर्यावर्त्त माहिं सब लोग ।
करि तातील काम अपने को चहुं दिश रहा उस दिना शोक ॥
इसी राति को रायबहादुर पहुंचे पंडित सुन्दरलाल ।
ज्यों त्यों करिके राति बिताई हुआ आयकर प्रातःकाल ॥
विमानरचना होने लागी वरनन ताको कियो न जाय ।
भली प्रकार खूब मलि मलिकर मृतक देहको दिया न्हिलाय ॥
द्रव्य सुगन्धित लेपन करिके ऊपर वस्त्र दियो पहराय ॥
दिव्य मुखारविन्द लखि लखिके विस्मय होता मनके माहिं ।
तेज पुंज चहरे का ऐसा मानो मृतक भये हैं नाहिं ॥
चहुं ओर से झपटे आवें दर्शन काज हजारों लोक ।
अति विस्मित हो रहे विचारे करि रहे खड़े खड़े सब शोक ॥
विदुष पुरुष सभ्य लोगों की चारों तरफ जु खड़ी कतार ।
करी परिक्रमा जब विमान की करते जायं वेद उच्चार ॥

मंडल बांधि खड़े होकर के पढ़ने लगे उच्चस्वर वेद।
स्वामी उठा लिए कांधे पर चलत विमान हुआ बड़ खेद॥
हाय हाय का शब्द गूंजिगया वर्षन लगे पुष्प चहुंओर।
वेदध्वनि पंडित जन करते बाजे बजन लगे घनघोर॥

॥ रोला ॥

हुआ बड़ा जमघट यूथके यूथ चलत हैं।
नये मार्ग ते आय सैकड़ों संग मिलत हैं॥
जज्जबहादुर भागराम अजमेर शहर के।
पंडित सुन्दरलाल निवासी अर्गलपुर के॥
मार्ग प्रबन्ध सम्हार यथोचित करते लावें।
दीखे प्रबल प्रवाह उमड़ते दल से आवें॥
धीरें धीरें बड़ी सावधानी को करते।
निकल आगरा द्वार बड़े बाज़ार विचरते॥
होते चौक मंझार धान की मंडी जाकर॥
थान थान पर ठहर वेदध्वनि करते जाकर॥
होकरके दरगाह शहर सबरे में फिरते।
सहस्त्रावधी मनुष्य यान के साथ विचरते॥
गये मलूसर पहुंचि सरोवर था दक्षिण में।
धरो विमान उतार रची वेदी ता क्षण में॥
विकट समय था महा सकल बैठे शोकाकुल।
धीरज नाहिन बंधे हो रहे अति ही व्याकुल॥
उस ही अवसरमांहि बड़ा साहस करि भारी।
श्रीयुत पंडित भागराम जज्ज उठे विचारी॥
करन लगे गुनगान स्वर्गवासी स्वामी के।
अनुपम महिमायुक्त कहे कर्त्तव्य स्वामी के॥
परमोत्तम व्याख्यान सुनाकर धीरज दीया।
भित्ति लिखित जिमि चित्र सभों को ऐसा कीया॥
ऐसे समय बात कहत भी नहिं बनि आवे।
हाड़स रखना कठिन कौन व्याख्यान सुनावे॥
हुआ विदीरण हृदय फूटकर रुदन करत है।
पाषर सम हिया तेहु फटि फटि विचलित है॥

पंडित सुन्दरलाल किया था हृदय कठोरा ।
बहुतेरा सा चाहा नहिं कहि सके बहोरा ॥
इतने में बन गई वेदिका चहिये जैसी ॥
उठि कर देखन लगे ठीक है लिखी जु ऐसी ।
दोमन चन्दन और काष्ट दसमन मंगवाया ।
घृत पूरे मन चार हाटते जाय तुलाया ॥
पांच सेर काफूर अढाईसेर बालछर ।
मृगमद तोले दोय सेर आधे ले केसर ॥
चुनिकर सब सामान चिताको दिया बनाई ॥
रामानद के हाथ अग्नि प्रज्वलित करवाई ॥
संस्कारविधियुक्त करी अन्त्येष्टि क्रिया सब ।
पुनरपि करि असनान बगदि आये घरको तब ॥
दूजे दिन बिठलाय आर्य्यजन वस्तु निकारी ।
सूचीपत्र बनाय खोल सब धरीं अगारी ॥
पंडया मोहनलाल सौंपि सब उनको दीनी ।
तासु हाथ की लिखी पत्रिका मंत्री लीनी ॥
आर्यसमाजी जिते वहां उस समय उपस्थित ।
हस्ताक्षर करवाय लिए थे सब के अंकित ॥
एक बात या ठौर सुनन के लायक है वह ।
महाराणा मेवाड़ खन्देसा भेजा था यह ॥
राखि सको जो देह तार मुझ को दे देना ।
अन्तिम दर्शन करूं इतिक यश सब तुम लेना ॥

॥ छन्द ॥

चीर फाड़ का देख बखेड़ा यह काहू नहिं भाया ।
श्री जी की आज्ञानुसार सब दाह कर्म करवाया ॥
पहुंची थी खबर जिस दिना इस ग्रन्थकार के पासा ।
आरत उदय होय नहिं जाना छूटी उन्नति आसा ॥
लिख वियोगसन्तापकाव्य को सब को खूब रुलाया ।
आर्यावर्तपत्र मधि याको छापन हेतु पठाया ॥

हिलकी बंधि जाती थी मेरी छंद कथन के मांहीं ।
लिखने को जब कलम उठाता सो भी उठती नाहीं ॥
मुखड़ा फाटि गया था निब का आंसू डाले काले ।
ढाढ़स बांधत हो बहुतेरा पड़े कलेजा चाले ॥
पढ़ो अगाड़ी उसी काव्य को ग्रन्थ समाप्ति पामो ।
लिखूं भाग परिशिष्ट दूसरा पढ़ना उसे सुजानो ।

॥ दोहा ॥

शेरसिंह पूरन करो कथि कर ग्रन्थ ललाम ।
करनवास गंगा निकट ज्ञान धाम निज ठाम ॥
आश्विन सातें असित पख गुरू वार मध्यान ।
रिद्धी ऋषि नव इन्दु का संवत् लो पहिचान ॥

० इति ०

* ओ३म् *

वियोग-सन्ताप-चालीसा ।

॥ सोरठा ।

भावस कार्तिक मास, संवत् नभ श्रुति ग्रह शशी ॥
कियो ब्रह्मपुर वास, दयानन्द संसार तजि ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

आज जग अस्त भयो विद्या को प्रकाश शेर
छूटि गई धारणा बिनास भई धी धृती ।
देशी विदेशिननु हूं शोक छायो गेह गेह
लोक भयो दीन औ धरा की गई रती ॥
हाय हाय हम कों विसारि कें पधारे आप
परम धाम लछ्य कियो ब्रह्म की लई गती ॥
उन्निस से चालीस कातिक अमावस कूं
त्यागो तन स्वामी श्री दयानन्द सरस्वती ॥२॥

॥ छन्द ॥

द्यौस मंगल तिथि अमावस मास कातिक जानिये ।
शून्य श्रुति नव इन्दु संवत् विक्रमी जु बखानिये ॥
प्रहर चौथे देह त्यागो शोक चहुं दिश में छयो ।
शेर स्वामी श्री दयानन्द प्राप्त पद अक्षय लयो ॥३॥

॥ छप्पय ॥

कियो वेद को भाष्य ताहि मातर भाषा करि ।
विदित करो संसार गये पाषंड सबे जरि ॥
मरति पूजा मेंटि मेंटि मत वादी दीये ।
जैनि पुरानि कुरानि किरानी सब हत कीये ॥
थाप्यो थम्भ जु धर्म को काटयो जग आवरण जिन ।
सो स्वामी दयानन्द जू प्राप्त कियो पंचत्व तिन ॥४॥

* * *

करिहै उन्नति कौन कौन भाग्योदय करिहै ।
करिहै को उपदेश कौन चिन्ता को हरिहै ॥
मातर भाषा कौन वृद्धि करिहै जगमाहीं ।
को पौरुष अब करे हमें कोउ दीसत नाहीं ॥
पूत दूत और मूर्त्ति के सत्य अर्थ को अस करे ।
हाय हाय यह शोक बड़ स्वामी जी को कस टरे ॥५॥

* * *

हा हत हमरे भाग्य हमें यह दिवस दिखायो ।
फाटत ना क्यों हृदय हाय अस कठिन बनायो ॥
कौन बंधावे धीर दीन ह्वै काहि पुकारें ।
आहि आहि जगदीश शरण को ताहि विचारें ॥
हाय हाय कैसी भई अहो दई कीजै कहा ।
दयानन्द पंचत्व भो घोर शोक संकट महा ॥ ६ ॥

***

अरे निरदई काल दया तोहि नेक न आवे ।
जो प्रकटे जग माहिं ताहि तु तुरतहि खावे ॥
परस्वारथ जे करहिं तिनहु तू सोचत नाहीं ।
भले बुरे को ज्ञान तनक हू नहिं तो माहीं ॥
धिक तोहि वाहि धिक अति महा जामें तू व्यापत रहै ।
धिक इनहिं उनहिं धिक है सदां जे न तेहि धिक २ कहै ॥ ७ ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथमहि वधिर भये नहि काना । क्यों सुनते हैं शोक बखाना ॥
रसना गलित होय जग सोई । स्वामी शोक कियो नहिं जोई ॥
ते नर निन्दत अधम बखानो । जिन्हनु शोक कछु हृदय न मानों
वे जग कुटिल कठोर कलापी । जिन्हें न यह दुर्घटना व्यापी ॥ ८ ॥

॥ छप्पय ॥

हा स्वामी हा दयानन्द हा लोक हितैषी ।
अधवर नैया छोड़ करी तुम कैसे ऐसी ॥
कौन लगावे पार अगम यह दीसत है भव ।
पापी चक्र कराल निगलि बैठे जाने कब ॥
विद्या विवेक के डांड़ जे सो तुम बिन साधत न हित ।
हाय मोह या जीवकूं देह त्याग नहिं धरत चित ॥ ९ ॥

***

अहो मृत्यु तू धन्य जिन्हें ते प्रथमहिं खायो ।
जीवन धन को अधम तिन्हें यह समय दिखायो ॥
फाटत ना यह भूमि सरग हू टूटत नाहीं ।
बालक के सम खेल रचो बिनस्यो छिन मांहीं ॥
देखो कराल या काल कूं अपने ते सपने करे ।
सपने हू ते मेंटि करि परम नाम जिन के करे ॥ १० ॥

॥ छन्द ॥

अधम पापी नीच दुर्गति पतित अवगुण को भरो ।
होय निरर्थक योनि जाकी मनुजपन ताको जरो ॥
जग आय सुपरिन ना कियो नहिं ग्रन्थ वैदिक को गहो ।
शैर जिहि श्रीदयानन्द के शोक करि उर ना दहो ॥११॥

॥ छप्पय ॥

हाय कियो का प्रभु भारत ही तलफत छोड़ो ।
हम दुखियन को त्यागि इते ते क्यों मुख मोड़ो ॥
जग परकारन करन पैज तुम ने जिय धारी ।
ताकों पूरण होत जान कित दई किवारी ॥
हाय २ सूझत न कछू कौन शरण जैये हरी ।
धर्म्म नाव भवधार में बिन केवट अधवर परी ॥१२॥

॥ दोहा ॥

खंडन करि मूरतिनु को, प्रतिमा अर्थ बताय ।
रचि सत्यार्थप्रकाश को, संशय दिये नशाय ॥१३॥

॥ छप्पय ॥

विद्या धर्म्म प्रकाश नाश पाषंड कियो जिन ।
मोक्ष मार्ग बतराय कर्म्म वैदिक राखो तिन ॥
वेदभाष्य करि दोष श्रुतिनुहू के सब टारे ।
खंडन कियो अधर्म पुरानी जैनी मारे ॥
देश हितैषिता वृद्धि किय आर्य्यसमाज थापी सभा ।
श्री स्वामी दयानन्द जू भये जगत पूरण प्रभा ॥ १४ ॥

***

भयो धर्म्म अवतार कियो उद्धार हमारो ।
कियो वेद को भाष्य जगत् सत् अर्थ प्रचारो ॥
गौ रक्षा के हेत बड़ो पुरुषारथ कीने ।
बालव्याह के त्याग काज उपदेशहु दीने ॥
दीनो बहाय पाषंड सब वेदमार्ग बतलाय के ॥
म्लेच्छनु चुराये शास्त्र जो तेहू लए मंगवाय के १५ ॥

***

कौन लावतो वेद जाय जरमनि के देशा ।
को करतो उपदेश कौन हरतो यह क्लेशा ॥

जो हिन्दू इसलाम कौन इनको मत हरतो ।
हस्ताक्षर करवाय गौरक्षा को करतो ॥
आर्य्यसमाज की नेवको कौन जगत धरतो भला ।
श्री दयानन्द जू सरस्वती जोन होत पूरण कला ॥१६॥

***

उन्नति विद्या करी पाठशाला बैठारी ।
योगाभ्यास कराय जुगति ते अजुगति टारी ॥
पंचयज्ञ उपदेश करो भ्रम सबे मिटायो ।
कियो प्रणव को अर्थ जगत आवरण हटायो ॥
चक्रांकित के धर्म्म की चोरी दई बताय के ।
कीनो सहाय भारत अधिक श्री दयानन्दजू आयके ॥१७॥

॥ सोरठा ॥

जो न होत अवतार दयानन्द को जगत् में ।
आर्य सुधर्म्म प्रचार शेर कौन करतो भला ॥ १८ ॥

॥ छप्पय ॥

भये जगत अवतार कहैं शंकर स्वामी को ।
कोई कृष्ण बखान करैं मथुरा धामी को ॥
कोऊ धर्म्म को पूत युधिष्ठिर को बतलावैं ।
अवधपुरी के राम ताहि को नित जसगावैं ॥
जो यह प्रथा सनातनी तो या में संशय नहीं ।
कर तार लियो अवतार यह दयानन्द स्वामी सही ॥१९॥

कुंडलिया

रची भूमिका वेद की तामें अर्थ अनेक ।
कहि २ मेंटे दोष सब श्रुति की राखी टेक ॥
श्रुति की राखी टेक एक ईश्वर को भाखो ।
दियो अनर्थ बहाय अर्थ वेदन को राखो ॥
जाति सभा दिग्विजय करि विद्याकी कीनी रची ।
गोतम अहिलावत्र की अति अद्भुत व्याख्या रची ॥ २० ॥

छप्पय

पोप छिपायो धर्म कर्म आचार हमारो ।
लोप कियो सन्मार्ग पाप को जाल प्रचारो ॥

शुद्ध आर्य्य जे हते तिन्हें हिन्दू कहि भाखो ।
वेद पठन को दोष पुराणनु में कथि राखो ॥
ये कुरीति काटन जगत दयानन्द प्रगटत भये।
नाश किये पापी छली अनाचार सब दुरि गये ॥२१॥

तुकबन्द

वेद सुनाये कौन । दयानन्द स्वामी जी ने ॥
छली नशाये कौन । दयानन्द स्वामी जी ने ॥
लोक दया चित धरी । दयानन्द स्वामी जी ने ॥
आर्य्य सभा किनकरी । दयानन्द स्वामी जी ने ॥
पाप जाल किन हयो । दयानन्द स्वामी जी ने ॥
भ्रम छेदन किन कियो । द० ॥ गुप्त करे मतवाद । द० ॥
किन मेटो अपवाद । द० ॥ किन राखो यह देश । द० ॥
धर्म कियो उपदेश । द० ॥ प्रतिमा खंडन कियो । द० ॥
सत मारग किन दियो । द० ॥ देश २ में जाय । द० ॥
सभा करी हित चाय । द० ॥ प्राकृत भाषा मांहि । द० ॥
वेद अर्थ बतलाय । द० ॥ दई कुरीति बहाय । द० ॥
दीनी प्रीति दृढ़ाय । द० ॥ किहि कीनो उद्धार । द० ॥
जग लीनो अवतार । द० ॥ दयानन्द स्वामी जी ने ॥

***

सन्ध्या तर्पण हवन हमारे हितके कारन ।
श्राद्ध अर्थ को कथन । हमारे हित के कारन ॥
अतिथिनु को सत्कार । ह० ॥ सम्यक् ध्यान प्रकाश ॥ह०॥
गो रक्षा को कियो ॥ ह० ॥ विज्ञापन तिन दियो ॥ ह० ॥
किये बहुत उपकार ॥ ह० ॥ योगाभ्यास विचार ॥ ह० ॥
स्वामी जी सब दुःख ॥ ह० ॥ सहे सकल तजि सुख ॥ ह० ॥
दीनी सबे प्रतीति ॥ ह० ॥ मेंटी व्याह कुरीति ॥ ह० ॥

॥ छन्द ॥

मिटाई बालव्याह की नेव । छुटाई भूत खोंटा सेव ॥
हटाई जैनखां की प्रीति । नसाई शेखसट्टो रीति ॥
अजी स्वामी भला कीना । हमें जो ज्ञान यह दीना ॥

॥ सोरठा ॥

बाल विवाह मिटाय, दियो नियोग बताय के ।
भाषा भाष्य बनाय, सब के मन हर्षित किये ॥

॥ छप्पय ॥

देशोन्नति के हेतु संस्कृतशाला कीनी ।
सुमति बढ़ाई लोक कुमति सारी हरि लीनी ॥
सम्यक् ध्यान बताय ज्ञान सब ही को दीनो ।
मोक्ष होने के हेतु योग उपदेशहु कीनो ॥
जे अहंब्रह्म बनते फिरें ध्वंस कियो तिन को जु मत ।
भेद दयो बतलाय के जीव आत्मा साधिसत ॥ २६ ॥

॥ छंद भजन ॥

श्रुति की महिमा बरनन कीनी पोल पुरान बताई ।
जैन पन्थ को खंडन कीनो धर्मकी बाट चलाई ॥
कृस्तीन और मुसलमीन हूं जासों गए लजाई ।
सो स्वामी दयानन्द सरस्वती जगतमें प्रगटे आई ॥
तिहिं गुन गावोरे भाई। कर्म मनवचन हितचित लाई ॥२७॥

॥ छन्द भजनकी गतिमें ॥

अरे मन सुमिरि स्वामी चरन। कियो पौरुष देखि ताने
लोक बाधा हरन । पाप नास्यो जाल काट्योमेंटि
अकरन करन । मूर्त्ति पूजा भेद खोल्यो दई ईश्वर
शरन । अरे मन सुमिरि स्वामी चरन २८ ॥

॥ छन्द गति भजन ॥

अरे मन मूढ़ करि यह चेत । जन्म स्वामीजी भयो
सो जगत तारन हेत अरे० उपकार कीनों धर्मको
करि देश २ पयान । वेद जर्मनते मंगाये तोहि न
सूझ अयान।अरे० । उपदेश करि२ नीति थापी जीति
सब जंजाल । कियो पौरुष लियो यह जस मिटेगो
वघाचल ॥ अरेमन मूढ़करि यह चेत । २९

***

यह भयो भारत दीन । प्राण निकसत नाहि जों
विन नीर तलफे मीन ॥यह०॥ विष धरें सिर धुनत
डोले फणि मणी लई छीन ॥ यह० ॥ रत्न हे या जग
विषें श्री दयानन्द प्रवीन । यह शेर तिहि विन लोक
सूनो है गयो अति हीन ॥ यह भय ३० ॥

॥ छप्पय ॥

इहि जगमें का सार देह मानुष की धरिबो ।
या देहीमें सार कहा परमारथ करिबो ॥
परमारथ में सार यही जय धर्म उचरिबो ।
धर्मसार उपदेश देश देशनु में करिबो ॥
उपदेश सार कवि शेर यह एक वेद आराधिबो ।
सो स्वामी पूरण करो कठिन पन्थ को साधिबो ॥

॥ सोरठा ॥

श्री स्वामी दयानन्द, कियो वियोग सदैव को ।
को काटे दुख दुंद, धर्ममार्ग उपदेश करि ३२॥

॥ दोहा ॥

स्वामी की निन्दा करें, पाइ मनुज की देह ।
महा अधम जगके विषें, मूढ़ निगुर खर तेह ।३३॥

॥ छप्पय ॥

गायत्री को छीनि ब्राह्मनु हमते लीनो ।
वैरागिन को पन्थ जगत में प्रचलित कीनो ॥
मूरति पूजा थापि करी निन्दा भगवति की ।
वेद छिपायो अर्थ अधर्मिन यह अजुगति की ॥
सो स्वामी उपदेश करि मेंटि दई कीनी भली ।
आर्य्य धर्म्म थाप्यो प्रभु मेंटि दए कपटी छली ॥३४॥

॥ त्रोटक ॥

जगते छल काटि बहाय दयो । प्रतिमा करिखंडन
धर्म्म ठयो—श्रुति दोष दए तिन धोय सबै ॥
करि भाष्य विलक्षण अर्थ जबै । ३५ ॥

***

यह भारत दीन महा अतिही—इहि भाग्य उदय
नहीं होय कभी—अस औसर पायजु हीन रह्यो
पछिताउ सदा बड़ दुःख सहो । ३६ ॥

***

मिलि है अब कौन सहाय हमें—करि है भवते
पुनि पार हमें—असको उपदेश हमें करि है । जिह
ते जिय जाल सबै जरिहै ॥३७ ॥

॥ छप्पय ॥

जग राखी जिनि टेक भयो ताको यह चहुंदिक ।
जाने मेंटे बचन दियो सत पुरुषन तिहिं धिक ॥
हरीचन्द बलि नृपति पैज अपनी के काजें ।
करत बुरे व्यवहार नेक नहिं मन में लाजें ॥
रामचन्द्र दशरथ कथा सुनराखी हम तुम सबै ।
तन मन धन बच कर्म करि आर्य्यधर्म्म राखोअबै ॥३८॥

॥ सोरठा ॥

जो दीनो उपदेश, ताई पे चालिराखि पन ।
कीजे उन्नति देश, स्वामी जी के कथन सम ॥३०

॥ दोहा ॥

पुष्कर तीरथ के विषय, मावस कार्त्तिक मास ।
ध्रुव मंडल ते अस्त भो, विद्याधर्मप्रकाश ४० ॥

इति सन्ताप चालीसा ॥

97/

विन्ती

॥ दोहा ॥

श्रीमत् राज प्रतापसिंह भूषण आर्य्यसमाज ।
हाउ सहाई सो हमें करो सफल सब काज ॥१॥
आर्य्यनु कूं अवलम्ब नहिं अन्य कछू जग मांहिं ।
यदि धीरज प्रभु ना धरो तो सब काज नसाहिं ॥२॥
मेंटो चिन्ता जगत की करिकै धर्म सहाय ।
स्वामी जी के मरण को दीजै शोक नशाय ॥३॥
परोपकारहितकारिणी सभा रही है सोय ।
सो चेतन कीजै प्रभू जिहि के मुखिया होय ॥
अरजी है हमरी यही आगे मरजी आप ।
वेद भाष्य छपवाय कर मेंटो सब संताप ॥

॥ इति ॥